मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
महाशिवरात्रि विशेषांक
फरवरी १९९१
मूल्य १५/-

मॉरीशस में पूज्य गुरुदेव

वाणिज्य एवं जहाजरानी मंत्री श्री श्रीमाली जी के साथ
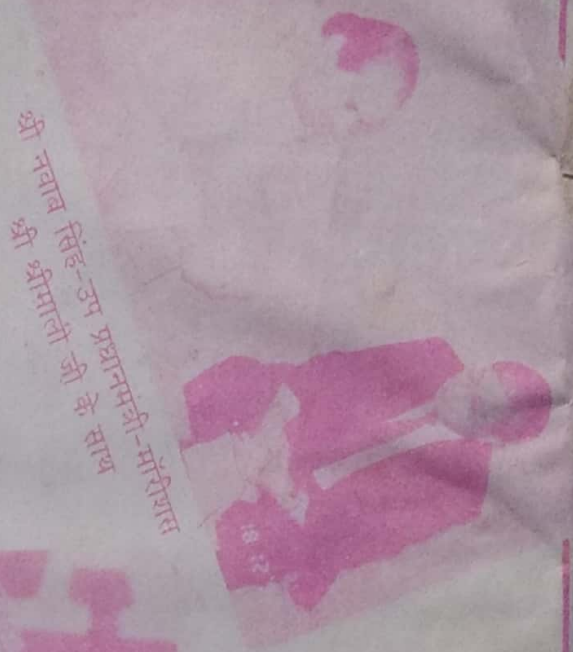
श्री नबाब सिंह-उप प्रधानमंत्री-मॉरीशस श्री श्रीमाली जी के साथ
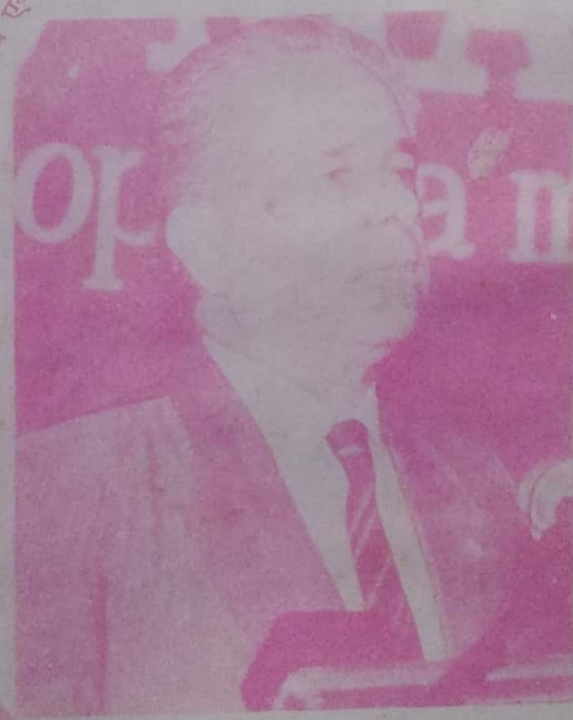
सर अनिरुद्ध जगन्नाथ प्रधानमंत्री-मॉरीशस

कृषिमंत्री-मॉरीशस-श्रीमाली जी का स्वागत करते हुये

वित्तमंत्री-मॉरी

अजय कुमार उत्तम सदस्यता क्रमांक 4396

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरु वरु शाखा लेखनी पत्र मुर्वी
लिखति यदि गृहित्वा शारदा सर्व कालं
तदपि तव गुणानां ईश पारं न याति।।

हे प्रभु शिवशंकर! यदि समस्त समुद्रों में स्याही घोल दें, समस्त पेड़ों की लेखनी बनादें और स्वयं विधाता लिखने बैठ जाय, तब भी तुम्हारे गुणों का अन्त नहीं हो सकता।

नियम

इस महीने

पारद शिवलिंग

विश्व का अद्भुत, आश्चर्यजनक अद्वितीय शिवलिंग, जो जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करने में सक्षम है, पारे को ठोस बनाकर शिवलिंग का निर्माण : मंत्र सिद्ध, प्राणश्चेतनायुक्त अद्वितीय।

तंत्र के पांच प्रयोग

जो गोली की तरह अचूक है, क्योंकि ये प्रयोग प्रामाणिक है, अनुभव युक्त हैं, मन की इच्छा पूर्ण करने में समर्थ हैं. . . . . आज के युग में सब कुछ प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है
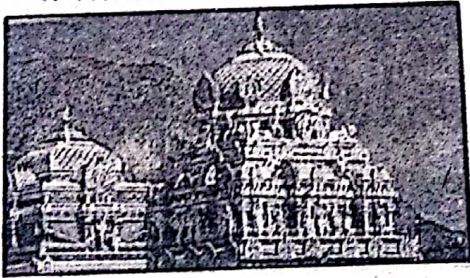
जब किसी की छठी इन्द्रिय जाग उठती है

तो साधक के सामने भूत-भविष्य वर्तमान सब कुछ स्पष्ट हो जाता है, विश्व का कोई भी रहस्य गोपनीय नहीं रहता परत-दर-परत पुरुष या स्त्री के मन के भीतर झांक कर सब कुछ देखा जा सकता है

मारीशस में माननीय

एक तथ्यात्मक लेख, गुरुदेव के सान्निध्य में जाने का सुगम रास्ता विदेश में भारतीय संस्कृति का तथ्यात्मक लेख.
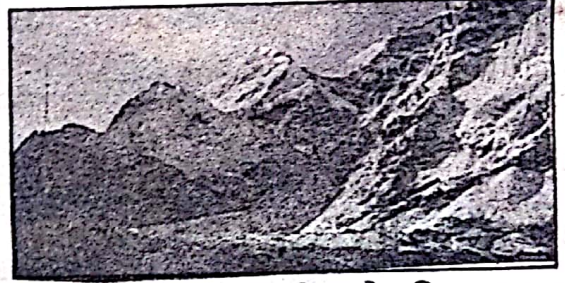
आप पांच दिनों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच सकते हैं

निश्चय ही यदि आप लेख में बताये हुए तरीके से गतिशील हों,और लोगों ने इस तरीके का प्रयोग किया है

आप अपने पूर्व जीवन में झांक करके तो देखें

तभी तो ज्ञात होगा, कि आपकी पत्नी कौन थी, इस जीवन में वह कहां है, किस अवस्था में है, पुत्र, पिता, भाई, बहिन, प्रेमी-प्रेमिका सभी के बारे में पूर्व जीवन और इस जीवन के धागे जोड़ करके तो देखिए न।

लिखना हैं जीवन में नया अध्याय

महाकाल की साधना करके, मृत्यु से परे, भय से परे, दुर्भिक्ष से परे.... एक अद्वितीय साधना शिविर.... उज्जैन में

सावधान! कोई तांत्रिक प्रयोग तो आप पर नहीं करवा रहा है

हो सकता है, पर यदि ऐसा होता है तो जिन्दगी बरबाद हो रही है पूरा जीवन ही सत्यानाश के कगार पर पहुंच रहा है।

महामृत्युञ्जय विधान

जिससे कि जीवन आनन्दमय हो सके, अकाल मृत्यु बुढ़ापा एवं परेशानियों से छुटकारा मिल सके

इसके अलावा भी

- पंचाक्षर साधना
- पारद शिवलिंग के चमत्कार
- एक दुर्लभ तंत्र
- इस मंत्र से मैंने मृत्यु पर विजय पाई
- मैंने पूर्व जीवन देखा
- होली पर एक टोटका यह भी
- दीक्षा से पूर्णता
- तीसरा नेत्र जागने पर
- चैत्र नवरात्रि पर्व
- मात्र पांच दिनों में प्रसिद्धि के शिखर पर
- कुछ गोपनीय मंत्र

–और भी बहुत कुछ इसी अंक में

सम्पादकीय

गोपनीय तंत्र विशेषांक को आपने सराहा, देश के कोने-कोने से पत्र प्राप्त हुए। जो जोश, भावना, सराहना, पाठकों ने भेजी है, वह मेरी कल्पना से भी परे था। मैं नहीं जानता था कि पूज्य गुरुदेव के शिष्य बिहार के कोने से लगाकर मद्रास तक हैं, और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए क्रियाशील हैं, भारतीय संस्कृति, भारतीय विद्याओं एवं साधनात्मक ज्ञान के प्रति इन पाठकों का केवल आकर्षण ही नहीं अपितु सम्मान है, और निश्चय ही आप इसे अपने जीवन में उतारना भी चाहते हैं।

जिन पाठकों ने कुछ विशेष जिज्ञासाएं लिखी हैं, और जानकारी प्राप्त करनी चाही है उन सभी के पत्रों का जवाब अवश्य दिया जायेगा, हो सकता है थोड़ा विलम्ब हो।

यह दौर है आत्म मंथन का, कि हम किस दिशा में जा रहे हैं, क्या हमारे भीतर की शून्यता के स्थान पर प्रसन्नता भर सकती है, क्या जीवन के चारों ओर समस्याओं की बहती विषाक्त नदियों के बीच अमृत के कुण्ड है, तो क्यों नहीं इन अमृत कुण्डों का पान कर जीवन में आनंद की वास्तविक अनुभूति, जीवन के चिन्तन को एक नई दिशा देने के लिए एक बार अपने आपको झकझोर दें, और गर्व करें कि हमें इस विद्या पर जिसके कारण हमारी संस्कृति महान् है, हमारे विचारों में शुद्धता है, ज्ञान का यह क्षेत्र जो कि त्रिविध आयामी मंत्र, तंत्र, यंत्र है, उसके प्रत्येक स्वरूप को देखकर स्वयं समझकर और उसे साधनात्मक रूप से उतार कर अपने आपको एक नये रूप में परिवर्तित करें, और यही हमारा प्रयास है।

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जिन्हें उनके शिष्य स्वामी निखिलेश्वरानंद कहते हैं, का वरद हस्त हमें सब रूपों में प्राप्त है। हर मंत्र हर तंत्र और हर यंत्र के स्वरूप की विशिष्ट वैज्ञानिक व्याख्या के लिए जब-जब हम उन्हें पूछते हैं तब तब वे उसे पूर्ण रूप से समझाकर हमें बताते हैं तो हृदय गद्‌गद हो उठता है।

किसी भी लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए जोश, भावना एवं निरन्तर चिन्तन आवश्यक है, मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका प्रकाशित करने के पीछे हमारा उद्देश्य यही है कि प्रत्येक पाठक इसे पढ़कर गर्व का अनुभव करें, एक भावना का उदय हो, और इस ज्ञान को अपने भीतर उतारने के लिए निश्चय करें।

ज्ञान और गुण बांटने से बंटते हैं, और आज मैं अपने पाठकों को यह जिम्मेदारी सौंपता हूं कि वे इस कार्य को विस्तार देने के लिए अपना समय दें, पत्रिका इसका ज्ञान उन पाठकों को कराएगी जो इस विषय से बिल्कुल अछूते हैं।

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी के शिष्यों प्रशंसकों और पाठकों से मेरा विशेष अनुरोध है कि वे अपना कर्तव्य समझते हुए पूज्य गुरुदेव का यह उपहार दस नये व्यक्तियों तक अवश्य पहुँचाये तो कोई आश्चर्य नहीं कि हम इस पत्रिका को एक आन्दोलन का रूप दे सकते हैं घर-घर में ज्ञान का साधनात्मक आनन्दमय वातावरण बन सकता है, देश काल की गति को देखते हुए यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक पाठक जागरूक बने, प्रत्येक पाठक यह समझे कि विज्ञान की इस आपाधापी में संघर्ष इतना अधिक बढ़ गया है, कि व्यक्ति अपने प्रयत्नों से उस स्थान पर नहीं पहुंच पाता, जो उसका लक्ष्य होता है, इसके लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति दैवी सहायता प्राप्त करे, इसके लिए साधना नितान्त आवश्यक होती है, और साधना का आधार तैयार करती है यह पत्रिका- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान-जो प्रामाणिक है सरल है और आप सबके लिए उपयोगी है।
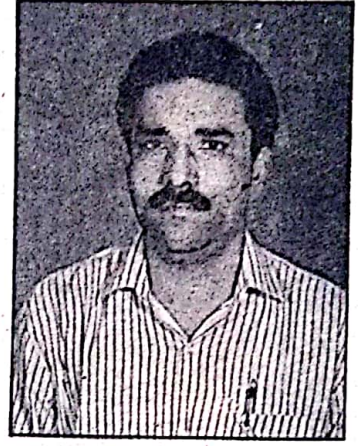
इस पत्रिका का लाभ केवल आप तक ही सीमित नहीं रहे अपितु आपके द्वारा हजारों लाखों लोगों का कल्याण हो, हजारों लोगों के आंसू पौछ सकें, उनकी परेशानियों को दूर कर सकें, और उनके अंधियारे जीवन में रोशनी बिखेर सकें।

और इसके लिए पत्रिका परिवार के स्थायी सदस्य विशेष रूप से सहायक हो सकते हैं, इस रथ की ध्वजा तुम्हें ही उठानी है, इस धर्म चक्र को गति आपको ही देनी है, इसके लिए आपको ही अग्रसर होना है, आगे बढ़ना है और कुछ कर दिखाना है, जिससे कि तुम्हारा नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जा सके।

आप सभी आजीवन सदस्यों और वार्षिक सदस्यों को चाहिए कि आप में से प्रत्येक- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) को टेलीफोन कर (०२९१-३२२०९) फरवरी अंक की दस प्रतियां तो अवश्य मंगाये ही, और प्रतियां प्राप्त होने पर उन्हें आसपास की बुक स्टाल पर रख दें, और उस बुक स्टाल का पता हमें दें... इस प्रकार आप इस पत्रिका बिक्री के द्वारा दस परिवारों को अपने 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' से जोड़ सकेंगे, और एक ऐसा कार्य कर सकेंगे, जिससे पूज्य गुरुदेव के होंठो पर आपका नाम अंकित हो सकेगा, और उनका विशेष आशीर्वाद आपको प्राप्त हो सकेगा।

हमें विश्वास है, कि आपका लौटती डाक से ही पत्र प्राप्त होगा, यह पत्रिका प्राप्त होते ही आपका टेलीफोन प्राप्त होगा, और कम से कम दस प्रतियां मंगाकर दस परिवारों को जोड़ सकेंगे.... और यह आपको करना ही है।

शिवरात्रि के पावन पर्व पर पूज्य गुरुदेव आपको हृदय से आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

-प्र. सम्पादक

पाठकों के पत्र

आपने लिखा है

पत्रिका का जनवरी विशेषांक क्या है मानो मधुर-मधुर सुगन्धित फूलों का गुलदस्ता है। एक-एक लेख विचारशील, ज्ञान वर्द्धक एवं चेतनाप्रद है क्या अगले अंकों में लक्ष्मी साधना से संबंधित कुछ और प्रकाशित करेंगे?

-विष्णु कुमार राई, सिक्किम

जनवरी विशेषांक पसन्द आया, अब तक मेरा यही विचार था कि ये साधना मंत्र वगैरह साधु-सन्यासियों के बस की ही बात है, पर इस अंक को पढ़कर यह धारणा टूट गई, ऐसी सुन्दर पत्रिका के लिए बधाई।

द्वारिका प्रसाद गुप्ता, मधुबनी, बिहार

साधनाओं में मुझे अनुभूतियां होती हैं और साधना का सही ज्ञान मुझे पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में तथा मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पढ़कर ही हुआ। उज्जैन शिविर में गुरु ज्ञान का एक और नवीन आयाम प्राप्त होगा।

-सुशील कुमार कानपुर

मंत्र वास्तव में प्रभाव देते हैं, और तंत्र द्वारा जीवन की कई समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है, यह मेरा अपना अनुभव है। हर महीने पत्रिका का बड़ा इन्तजार रहता है, अब तो और भी अधिक सहज, सुलभ हो गई है, पत्रिका परिवार को बहुत-बहुत धन्यवाद।

-तेज नारायण सिंह राठौड़, बाराबंकी

बगलामुखी साधना संपन्न करते समय कई बार विभिन्न आवाजें सुनाई पड़ती हैं, यह किस बात ही सूचक है। साधना के बीच-बीच में विघ्न क्यों आते
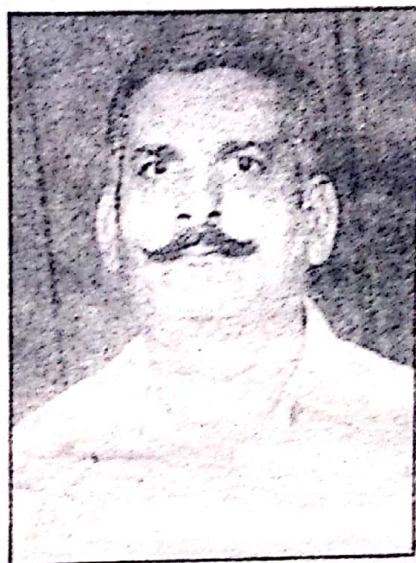
हैं, और उनको कैसे दूर कर सकते हैं? इस बारे में विशेष प्रकाश अवश्य डालें।

-राजेश कटिहार,
कानपुर देहात

मैं गोल्डन कार्ड मेम्बर बनना चाहता हूं, इस संबंध में मुझे योजना बहुत पसन्द आई, पर क्या यह संभव है कि जब भी शिविर में अथवा आपके कार्यालय में आऊं तो मुझे गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी से व्यक्तिगत रूप से आप मिलवा दें, यही मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।

-आनन्द मूर्ति मिश्रा,
वाराणसी

टिप्पणी-(आप इसकी चिन्ता न करें, दीक्षा प्राप्त शिष्य गुरुदेव से व्यक्तिगत रूप से मिल सकते हैं, गुरु-शिष्य का संबंध तो सबसे मधुरतम संबंध है। सं.)

नई दिल्ली में आयोजित सिद्धेश्वरी शक्ति साधना नवरात्रि शिविर में मैंने अक्टूबर में प्रथम बार भाग लिया। साधना का आनन्द गुरुदेव के प्रवचन और ध्यान योग, सब कुछ अनूठा था। वासन्तीय नवरात्रि शिविर कहां होगा?

-जीवन सिंह राजपूत,
अहमदाबाद

जनवरी विशेषांक देखा और एक बार में ही पूरी पत्रिका चाट गया, क्या पत्रिका के हर अंक में आयुर्वेद के संबंध में विशेष जानकारी देंगे? इस संबंध में मेरी विशेष रुचि है।

-रोजन जैम्स,
लुधियाना

एक मित्र के यहां जनवरी सन् १९९३ की आडियो कैसेट सुनी, पूज्य

गुरुदेव डॉ. श्रीमाली का मैं "फैन" तो पहले ही से था, अब तो मैं उनसे दीक्षा लेकर विधिवत् शिष्य बनना चाहता हूं, इसके लिए मुझे क्या करना पड़ेगा?

-देव प्रसाद आचार्य, बुलढाणा (महा०)

तंत्र के बारे में मेरी जानकारी अत्यंत कम है, लेकिन क्या तांत्रिक प्रभाव से छुटकारा पाया जा सकता है? पिछले १० वर्षो से मेरे परिवार पर तरह-तरह की विपत्तियां आ रही हैं, और उनका कारण कुछ समझ में नहीं आता, संभवतया मेरे शत्रुओं द्वारा ये प्रयोग कराए जाते हैं, इसका क्या उपाय किया जा सकता है?

-नमित जैन, मुज्फ्फरपुर

टिप्पणी

इसी अंक में तांत्रोक्त प्रभाव के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई है, अपनी समस्या विस्तार से लिखें।

-सम्पादक

जनवरी विशेषांक पूरे परिवार को बहुत अच्छा लगा, आशा है आने वाले

अंकों में भी इसी प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती रहेगी। भारतीय विद्याओं के उत्थान हेतु आपका यह कार्य वंदनीय है।

-नवीन चन्द्र ओझा, हलाल बड़ौदा (गुजरात)

मैने पत्रिका के पिछले सभी अंक मंगाकर रख दिये है यह मेरे जीवन की पूंजी है।

-गीता मिश्रा, कानपुर

आप 'सम्मोहन-विशेषांक' भी निकालिये, हम लोगों की इसमें विशेष रुचि है।

-सोनल, बम्बई

वर्ष १३ अंक २ | सम्पादक मंडल | फरवरी ९३

पत्र व्यवहार- मंत्र तंत्र यंत्र कार्यालय, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.)
टेलीफोन-०२९१-३२२०९

दिल्ली कार्यालय- गुरुधाम-३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली-टेलीफोन-०११-७१८२२४८

समाचार एवं सूचनाएं

आगे के कुछ दिनों में कई शिविर आयोजित हो रहे है, जिसमें प्रत्येक साधक शिष्य एवं पाठक आमंत्रित हैं-

- १७-१८-१९ फरवरी--उज्जैन में शिवरात्रि के अवसर पर भव्य शिविर।
- २४ मार्च से जोधपुर में नवरात्रि साधना शिविर।
- १९-२०-२१ अप्रैल--दिल्लीमें गुरुजन्म दिवस शिविर।
- ६-७-८ जून--सिंगापुर में लक्ष्मी साधना शिविर व आसपास के स्थानों-हांगकांग, बैंकाक, मलेशिया में लघु यज्ञ।
- १-२-३ जुलाई--गुरुपूर्णिमा
- २३-२४ जुलाई--अमेरिका में वाशिंगटन में भव्य यज्ञ एवं साधना शिविर।

❑ पिछले वर्षों की पत्रिकाओं की मांग बहुत अधिक बढ़ गई है पर हमारे पास १९८६, ८७, ८८, ९० तथा ९१ के सेट ही बचे हैं, प्रत्येक सेट की न्यौछावर मात्र १२०/- रु. है।

❑ ११ से २१ फरवरी तक पूज्य गुरुदेव दिल्ली में रहेंगे। १ से १० तथा २२ से २८ फरवरी तक जोधपुर में उनका कार्यक्रम होगा।

❑ जहां जहां भी सिद्धाश्रम साधक परिवार से संबंधित कार्यक्रम हो उसका विस्तृत विवरण दिल्ली के पते पर भेजें, साथ में चित्र भी भेजें, जिसे मार्च अंक में प्रकाशित किया जायेगा। इसी प्रकार प्रश्नोत्तर से संबंधित पत्र भी दिल्ली के पते पर भेजें।

❑ मार्च का अंक "साबर विशेषांक" अप्रैल का अंक "मंत्र शक्ति विशेषांक" मई का अंक "कुंडलिनी जागरण विशेषांक" तथा जून का अंक "सम्मोहन विशेषांक" के रूप में प्रकाशित होगा।

❑ अप्रैल ९३ से "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" का अंग्रेजी रूपान्तरण भी प्रकाशित हो रहा है।

❑ जिन साधकों ने पत्रिका प्रसार में सहयोग दिया है वे इससे संबंधित विवरण अपने फोटो के साथ दिल्ली के पते पर भेजें।

❑ जो मार्च माह से आजीवन सदस्य बन रहे हैं, उन्हें महत्वपूर्ण पारद शिवलिंग भेंट स्वरूप दिया जायेगा।

❑ इस बार प्रत्येक गोल्डन कार्ड योजना के अन्तर्गत (जनवरी अंक देखें) दो हजार रुपये की साधना सामग्री निःशुल्क ले चुके हैं, प्रत्येक गोल्डन कार्ड धारक साधक उज्जैन शिविर में निःशुल्क भाग ले सकते हैं।

❑ आपके पास साधना से संबंधित किसी भी प्रकार के अनुभव हों तो हमें फोटो सहित लिख भेजें, हम अगले अंक में प्रकाशित करने की व्यवस्था करेंगे।

❑ लेखक बंधु मंत्र तंत्र से संबंधित लेख दिल्ली के पते पर प्रकाशनार्थ भेजें, प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक दिया जायेगा। इसी प्रकार तीर्थ स्थानों, देवालयों, व विविध महत्वपूर्ण घटनाओं के विवरण चित्र सहित भेजें।

विश्व का दुर्लभ एवं अद्वितीय

पारद शिवलिंग

जिसकी कोई तुलना ही नहीं है, जो तुरन्त भाग्योदय धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा देने में समर्थ है, जिसका घर में रहना ही जीवन की पूर्णता है।

शिवरात्रि के पावन पर्व पर एक विशेष लेख

पारद शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की तरफ से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संसार में बहुत कुछ प्राप्य है, और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, परन्तु मन्त्र-सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त रस-सिद्ध पांरे से निर्मित पारद शिवलिंग प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है, इसके दर्शन से पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते हैं, तथा सौभाग्य का उदय होने लगता है।

सामान्यतः पारद का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है, और इसे ठोस बनाने के लिए मूर्छित, खेचरित, कीलित, शम्भू, विजित और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजरना पड़ता है, तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है और उससे शिवलिंग निर्माण होता है।

शिवलिंग निर्माण के बाद कई मांत्रिक क्रियाओं से गुजरने पर ही पारद शिवलिंग रस-सिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है, जिससे वह पूर्ण सक्षम एवं प्रभावयुक्त बनता है, इसीलिए तो कहा गया है कि जिसके घर में पारद शिवलिंग है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर, विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते है, या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपने घर में अवश्य ही पारद शिवलिंग की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि वे व्यक्ति जो पारद शिवलिंग की पूजा करते हैं, उनके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं हो सकता। पारद शिवलिंग के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वहीं उसे जीवन में मोक्ष-प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानंद जी ने कहा है कि जो साधक पारद शिवलिंग को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है, या मात्र उसके दर्शन ही करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियां और धन्यधान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है। संसार में जितने भी शिवलिंग हैं, उन सब की पूजा का फल केवल मात्र पारद शिवलिंग के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्ध योगी था, वह पारद शिवलिंग की पूजा कर शिव को पूर्ण प्रसन्न कर अपनी नगरी को स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। बाणासुर ने पारद शिवलिंग की पूजा कर उससे मनोवांछित वर प्राप्त किया था, यह विवरण 'रुद्र-संहिता' में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

मैंने पिछले पांच वर्षों से इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये हैं, और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं, वे सभी आज अच्छे स्तर पर हैं, और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं, साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है, और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्य जनक उन्नति प्राप्त हुई है, वह उनके स्वयं के लिए भी चकित कर देने वाली है।

नीचे मैं कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों के विवरण दे रहा हूं, जिससे स्पष्ट होता है कि पारद शिवलिंग कितना अधिक महत्वपूर्ण है:

योगशिखोपनिषद्

रसलिंग महालिंग शिवशक्तिनिकेतनम्।
लिंग शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्व देहिनाम्।।

अर्थात् रसलिंग ही महालिंग है, और इसे ही शिव शक्ति का घर या शिवालय कह सकते हैं, इसके प्राप्त होने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

२. सर्वदर्शनसंग्रह

अभ्रकं तवबीजं तु मम बीजं तु पारदः।
बद्धो पारद लिंगोऽयं मृत्यु दारिद्रय नाशनम्।।

अर्थात् भगवान शंकर स्वयं भगवती से कहते हैं कि पारद को ठोस कर लिंगाकार स्वरूप देकर जो पूजन करता है, उसे ज़ीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता, और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नही आ पाती।

३. रसरत्नसमुच्चय

विधाय रसलिंगयो भक्तियुक्तः समर्पयेत्।
जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात्।।

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंग की पूजा का फल प्राप्त होता है, तथा उसके समस्त महापाप नष्ट हो जाते हैं।

४. रसार्णव-तन्त्र

धर्मार्थ काममोक्षाख्या पुरुषार्थश्चतुर्विधा।
सिद्धयन्ति नात्र सन्देहो रसराज प्रसादतः।।

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है, उसे इस जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

स्वयम्भू लिंग सहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत्।।

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद-निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त हो जाता है।

५. शिव निर्णय रत्नाकर

मृदः कोटिगुणं स्वर्ण, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः
रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति।।

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है, स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक मणि और मणि से करोड़ गुना अधिक फल बाणलिंग नर्मदेश्वर के पूजन से प्राप्त होता है, नर्मदेश्वर बाणलिंग से भी करोड़ गुना अधिक फल पारद निर्मित

शिवलिंग से प्राप्त होता है, इससे श्रेष्ठ शिवलिंग न तो संसार में हुआ है और न हो सकता है।

६. रस मार्तण्ड

लिंग कोटि सहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत्,
ब्रह्महत्यासहस्राणि गोहत्याशतानि च
तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्,
स्पर्शनात्प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्।।

अर्थात् हजारों-करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग
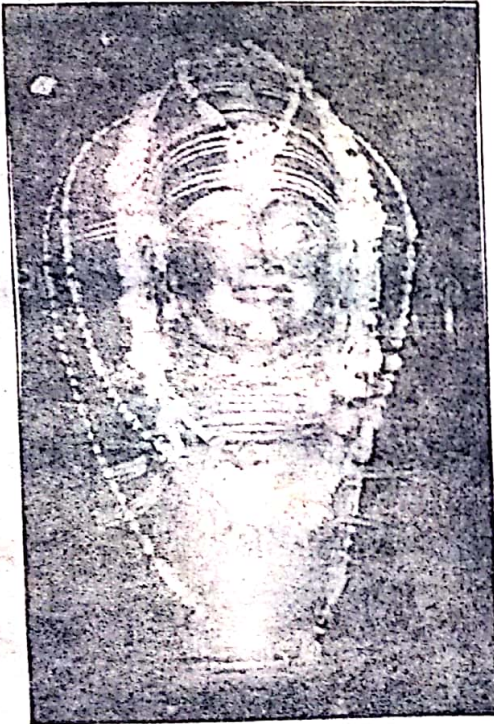
पारदेश्वर शिव

के पूजन से प्राप्त होता है, हजारों ब्रह्महत्याओं और सैंकड़ों गोहत्याओं का किया हुआ पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है, स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है, यह स्वयं भगवान शिव का कथन है।

७. ब्रह्मपुराण

धन्यास्ते पुरुषः लोके येऽर्चयन्ति रसेश्वरम्।
सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम्।।
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजातयः
सम्पूज्य तं सुरवरं प्राप्नुवन्ति परां गतिम्।।

अर्थात् संसार में वे मनुष्य धन्य हैं, जो समस्त मनोवांछित फलों को देने वाले पारद शिवलिंग का पूजन करते हैं। इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है।

८. ब्रह्मवैवर्त पुराण

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
कृत्वालिंग सकृत् पूज्य वसेत्कल्पशतं दिवि।।
प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रबान्धववान्स्तथा।
ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रस लिंगार्चनाद् भवेत्।।

अर्थात् जो एक बार भी पारद शिवलिंग का विधि-विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं, तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है, उसके जीवन मे यश,मान, पद-प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या आदि में कोई कमी नहीं रहती, और अन्त में वह निश्चय ही मुक्ति प्राप्त करता है।

९. शिव पुराण

गोघ्नश्चैव कृतघ्नाश्च वीरहा भ्रूणहापि वा।
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः।
दुष्टपापसमाचारी मातृपितृप्रहापि वा।
अर्चनात् रसलिंगेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते।।

अर्थात् गौ हत्यारा, कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद शिवलिंग की पूजा करता है, तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता हैं।

१०. वायवीय संहिता

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वांछितम्।
रसलिंगार्चनादिष्टं सर्वत्तो लभते नरः।।

अर्थात् वायु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवांछित वस्तुएं है, उन सबको पारद शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा भगवान शंकर ने स्वयं कहा है, कि मुझे वह व्यक्ति ज्यादा प्रिय है, जो द्वादश ज्योर्तिलिंग के दर्शन करने की अपेक्षा मात्र पारद-शिवलिंग के दर्शन कर लेता है।

पारद-शिवलिंग आर्द्रता रहित, निश्चल, छिन्नपक्ष रहित, श्वेतलिंगाकार होना चाहिए ऐसा शिवलिंग शास्त्र-सम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आकार का एक निश्चित परिमाण है, यह कार्य केवल 'विजय काल' में ही सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रकार श्रेष्ठ समय में पारे को रस-सिद्ध करके उसे ठोस बनाने की प्रक्रिया करनी चाहिए, साथ-ही-साथ शिवलिंग का आकार भी विजय-काल में ही सम्पन्न करना चाहिए।
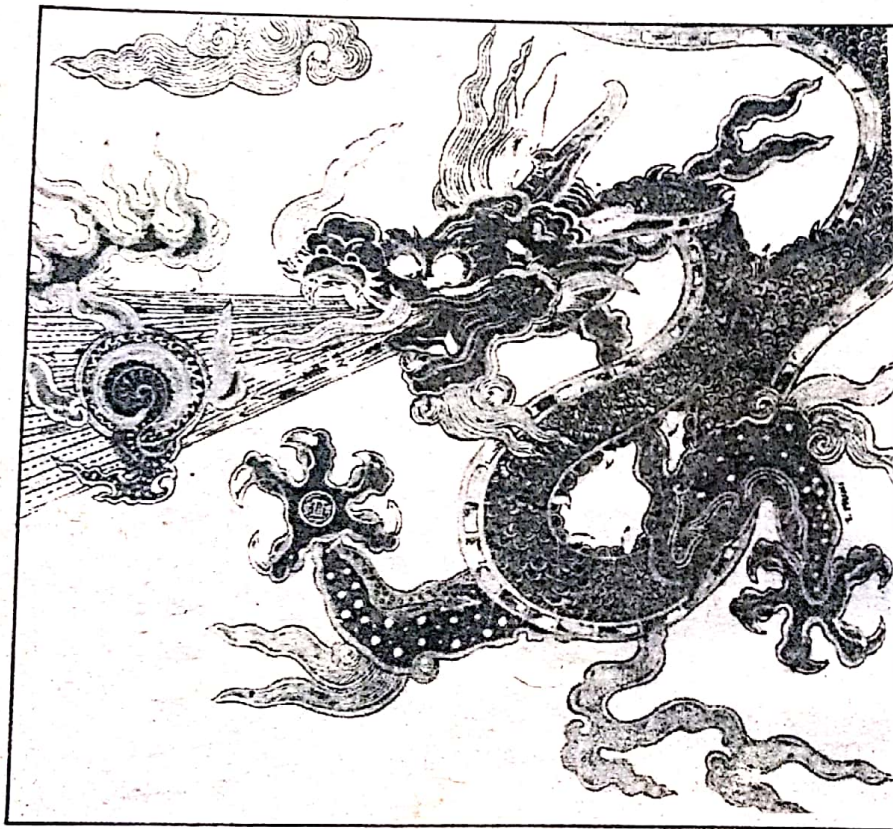
इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद शिवलिंग को मुद्रा बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मन्त्र-सिद्ध रस-सिद्ध करना चाहिए, ऐसा होने के बाद संजीवनी मुद्रा मंत्र से उसे प्रभावपूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है, भारत में बहुत ही कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ऐसा शिवलिंग पाया जाता है।

शास्त्रों के अनुसार पारद शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, मेरे जीवन में ऐसे हजारों अनुभव है, यदि उन्हें लेखनीबद्ध किया जाए, तो पूरा एक ग्रन्थ बन सकता है कि पारद शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी संभव कर दिखाया है, जो उनके लिए संभव नहीं थे। ऐसे व्यक्ति दरिद्र के घर में जन्म लेकर भी प्रसिद्ध उद्योगपति और लक्ष्मीपति होते देखे गए हैं। संसार में और सभी तन्त्र-मन्त्र झूठे हो सकते हैं, पर ऐसा एक भी **उदाहरण प्राप्त नहीं है** कि किसी घर में **पारद शिवलिंग स्थापित हो** और उसके जीवन में पूर्णता प्राप्त न हुई हो।

मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूं कि पारद शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ शिवलिंग है, बिना प्रसिद्ध योगी या गुरु के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नही हो पाता और भाग्य से ही रस-सिद्ध पारद शिवलिंग घर में स्थापित हो पाता है।

आज के इस युग में भी पारद शिवलिंग एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक सफलतादायक उपाय है।

वस्तुतः पारद हमारे जीवन की श्रेष्ठतम धातु है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि नागार्जुन के बाद अब पुनः पारे के महत्व को और उसकी क्रियाओं को लोगों ने जाना है तथा साधकों ने पुनः परिश्रम,प्रयत्न कर अठारहों संस्कार सम्पन्न करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

इस लुप्त विधा का पुनर्जीवन अपने आप में इस शताब्दी की अन्यतम घटना है और अब मुझे विश्वास है कि हमारे आगे की पीढ़ी इस विद्या को विस्मृत नहीं होने देगी।

जिसके घर में प्राण प्रतिष्ठा युक्त पारद शिवलिंग स्थापित है, उसके घर में साक्षात शिव, मां पार्वती के साथ विराजमान रहते हैं।

स्थान न्यूनता की वजह से कुछ लेख प्रकाशित होने से रह गये हैं, वे अगले अंकों में दे रहे हैं।

तंत्र के ये पांच प्रयोग

जिनपर केवल तांत्रिकों का ही अधिकार नहीं है

आप भी ये प्रयोग कर सकते हैं

ये प्रयोग तो अचूक हैं, अद्वितीय हैं, बंदूक की गोली की तरह तुरंत काम करते है, और कभी भी असफल नहीं होते।

● **एक बार आप आजमा कर तो देखिये न!**

पूरे वर्ष में कुछ पक्ष ऐसे आते हैं जिनमें साधक तांत्रिक प्रयोग, साबर प्रयोग संपन्न करें तो उसे पूर्ण सफलता अवश्य ही मिलती हैं। इनमें प्रमुख है-होली पर्व, नवरात्रि, जन्माष्टमी (मोहरात्रि) रामनवमी (क्रोधरात्रि) मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी (घोर रात्रि), (महाकाल भैरव जयंती) अमावस्या, सूर्य ग्रहण चन्द्र ग्रहण, रवि संक्रांति-इन दिनों में तंत्र की साधना साधक निश्चिन्त होकर करें।

नीचे लिखे पांच प्रयोग साधक स्वयं संपन्न करें, और इन लघु प्रयोगों के विराट तत्काल फल को अनुभव करें।

१. व्यापार वृद्धि (कार्य सिद्धि) प्रयोग

यदि आपका व्यापार (कार्य) ठीक ढंग से नहीं चल रहा हो, और उसमें बाधाएं आ रही हों या आपके व्यापार कार्य को किसी ने बांध दिया हो, अथवा दुकान पर ग्राहक नहीं आ रहे हों, और आपकी आमदनी बहुत कम हो गई हो तो होली की रात्रि को यह प्रयोग किया जा सकता हैं।

तंत्र के अधिष्ठाता

आपने सामने एक हाथ लम्बा सूती लाल कपड़ा बिछा दें, इस पर काले तिल की ढ़ेरी बना दें, और उस पर एक दीया-(दीपक) लगा दें, इस दीये में किसी भी प्रकार का तेल भरा जा सकता हैं, फिर इस दीपक के सामने सात लौंग, सात इलायची तथा सात लाल मिर्चे रख दें, और दीपक के तेल में एक सियारसिंगी डाल दें, जो कि तेल में डूबी हुई रहें।
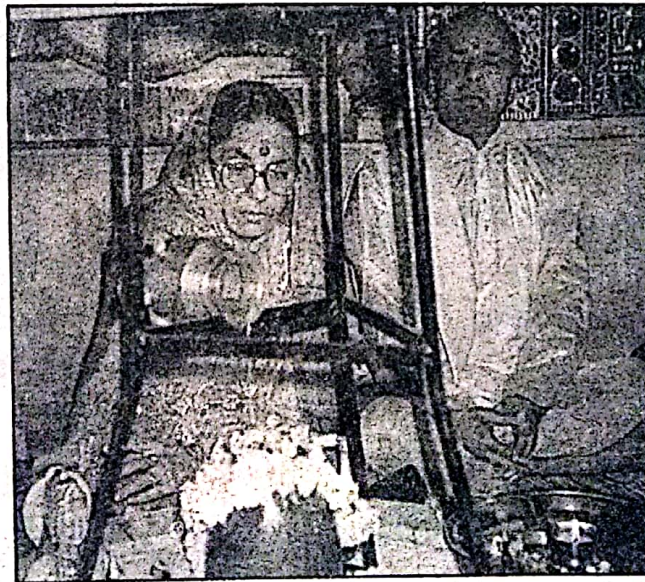
इसके बाद साधक इस दीपक के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करे, कि यदि किसी ने मेरा व्यापार कार्य बांध दिया हो, या व्यापार कार्य में कोई बाधा हो, तो वह दूर हो जाय, और वापिस व्यापारिक कार्य दिन दूना रात चौगुना फैलने लग जायं।

इसके बाद साधक वहीं पर बैठे-बैठे नीचे लिखे मंत्र का जप करें।

मंत्र :

ॐ हनुमन्त वीर, रखो हद धीर, करो यह काम, वैपार बढ़े, तंतर दूर हो, टूणा टूट, ग्राहक बढ़े, कारज सिद्ध होय, न होय तो अंजनी की दुहाई।

जब एक घंटे तक मंत्र जप हो जाय, तब दीपक बुझा दें, और दीपक सियारसिंगी, तेल तथा अन्य वस्तुओं के साथ ही वहा पोटली बांध दें, और उस पोटली को सड़क के चौराहे पर रख दें, जहां पर दो सड़कें आकर मिलती हों।

यह पोटली रखने के बाद वापिस अपने घर पर लौट आवे, और हाथ-पैर धो लें, ऐसा करने पर व्यापार कार्य से संबंधित बाधाएं अथवा दोष दूर हो जाता है, और दूसरे दिन से ही उसे व्यापार कार्य में उन्नति अनुभव होने लगती है, यह अपने आप में श्रेष्ठ और सफल प्रयोग है।

२. वशीकरण प्रयोग

मोहन प्रयोग अधिक लोग श्रोताओं या भीड़ को वश में करने के लिये किया जाता हैं, वहीं वशीकरण प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति पर कर, उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, अपनी प्रेमिका को हमेशा के लिये वश में करने के लिये, अपने प्रेमी को अनुकूल बनाने के लिये, अधिकारी को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिये और किसी भी व्यापारी व्यक्ति या महत्वपूर्ण हस्ती को हमेशा-हमेशा के लिये इस विधि के द्वारा अपने वश में करने के लिये किया जाता हैं।

सामग्री

वट वृक्ष के आठ पत्ते, जल पात्र, तेल का दीपक, आठ गोमती चक्र तथा हकीक माला।

अपने घर के किसी कोने में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने आठ वट वृक्ष के पत्तों पर केशर से उसका नाम लिख लें, जिसे आप वश में करना चाहते है, फिर उन पत्तों पर गोमती चक्र रख दें, व केशर से उन गोमती चक्रों पर बिंदी लगा दें, प्रत्येक गोमती चक्र पर केशर से ही पांच बिन्दियां बना दें, फिर हकीक माला से निम्न प्रकार के मंत्र का जप करें :-

मंत्र :-

'ॐ नमः कालिके सर्वापिण्यै अमुकं वशमानाय शीघ्रवशाय आं ह्रीं क्रीं भद्रकाल्यै नमः।

इसमें उसका फोटो यदि संभव हो, जिसे वश में करना हो, सामने रखें तो ज्यादा उचित रहता हैं। पांच दिन के प्रयोग के बाद मात्र सौ आहुति अग्नि में घी और गुलाब पुष्प से उपर लिखे मंत्र को पढ़कर दें, तो निश्चय ही जीवन भर के लिये वह व्यक्ति या स्त्री वश में रहती है, और किसी भी स्थिति में जुदाई नहीं होती, अपितु हम जैसा चाहते हैं, वैसा ही वह करने के लिये बाध्य होता हैं।

यह अद्भुत और आश्चर्यजनक सिद्धिप्रद आकर्षण या सम्मोहन प्रयोग है, जिसको मैंने कई बार आजमाया है, और पूरी-पूरी सफलता प्राप्त की हैं।

तांत्रिका नृत्य

३. पूर्ण पौरुषता प्राप्त करने के लिये

यह अनंग साधना या अनंग यंत्र है, व्यक्ति चाहे कमजोर हो, काम-कला में शक्तिहीन हो, अथवा नपुंसक हो इस मंत्र के द्वारा वह पूर्ण पौरुषवान बन जाता है, बुढ़ापे में

भी चुस्ती, स्फूर्ति और पूर्ण पौरुषता प्राप्त करने में यह यंत्र बेजोड़ हैं।

किसी रविवार को भोजपत्र पर-चंदन, कस्तूरी, कपूर और कुंकुम- चारों चीजों को बराबर लेकर उसकी स्याही से यह मंत्र लिखे और फिर उसी रात्रि को पचास मालाएं मंत्र जाप कर लें, ऐसा मंत्र जप मूंगे की माला से होना चाहिए, जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तब इस ताबीज़ को दाहिनी भुजा पर बांध लें, तो वह व्यक्ति आगे पूरे जीवन भर पूर्ण पौरुषवान बना रहता हैं।

इस साधना में दीपक या अगरबत्ती लगाने की जरूरत नहीं है, और न कोई विशिष्ट वस्तुओं की अनिवार्यता हैं।

मंत्र

ॐ क्लों ऐं सौं ग्लौ हुं ई कं कं दर्पशाक्तिसकलकलाकलापनिपुणो इक्षुशरासनपन्चबाणान्विते, कसकल रोगविनाशिने, खगान् मारय मारय, क्लीं रसाम्बये एहि एहि स्वाहा।।

४. शत्रु उत्पीड़न मंत्र प्रयोग

यदि कोई शत्रु बहुत अधिक परेशान कर रहा हो, और स्वयं के जीवन पर खतरा उपस्थित हो जाय तो इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता हैं।

होली पर्व पर शत्रु उत्पीड़न यंत्र के सामने लिखित मंत्र का पचास हजार जप करें, तो निश्चय ही शत्रु परेशान हो जाता है।

मंत्र जप पूरा होने के बाद उस यंत्र को किसी स्थान पर जमीन में गाड़ देना चाहिए, जब तक यह यंत्र गड़ा रहेगा तब तक शत्रु कई कारणों से परेशान रहेगा और धीरे-धीरे उसका शरीर सूखता चला जायेगा।

मंत्र-

ॐ हं हं हं धूं सिं हुं कालि कालरात्रि अमुकं (शत्रुका नाम) पशु ग्रह हुं फट् स्वाहा।।

जब इस झंझट से शत्रु को मुक्त करना हो तो उस यंत्र को बाहर निकाल कर तोड़कर तालाब में विसर्जित कर दें तो उस व्यक्ति पर किया हुआ प्रभाव समाप्त हो जाता हैं।
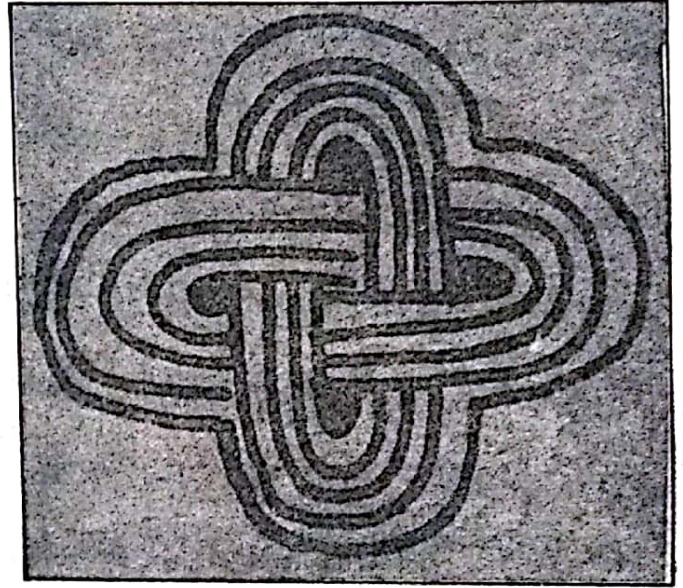
शत्रु उत्पीड़न यंत्र

५. विवाह बाधा एवं मंगली योग मिटाने के लिये

यदि लड़की की जन्म कुण्डली में विवाह बाधा योग हो जिसकी वजह से विवाह नहीं हो रहा हो, विवाह में अड़चनें आ रही हो, या कुण्डली में मंगल दोष हो तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग रामबाण की तरह है, और इसका असर तुरन्त होता हैं।

यह प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ किया जाता है, इस प्रयोग को स्वयं लड़की या उसके माता-पिता अथवा कोई योग्य पंडित संपन्न कर सकता है, रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में "विवाह बाधा निवारण मुद्रिका" रख दें और इसे दूध से धोकर पुनः जल से धोकर पोंछकर स्थापित कर दें फिर उस पर केशर का तिलक करें और मूंगे की माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ ह्लों कामदेवाय रत्यै सर्व दोष निवारय सिद्धय ह्लों फट्

इस प्रकार २१ दिन तक करें, जब २१ वें दिन में प्रयोग समाप्त हो जाय तब २२ वें दिन वह मुद्रिका उस बालिका के किसी भी हाथ की किसी अंगुली में पहना दें जिससे जीवन में मंगली योग, विवाह बाधा योग और विवाह से संबंधित समस्त दोष दूर हो जाते हैं, और निश्चय ही शीघ्र उस लड़की की सगाई या शादी संपन्न हो जाती हैं।

ये पांचों प्रयोग तंत्र साधना के पांच सरल स्वरूप है, साधक इन्हें संपन्न करें तथा अपनी अनुभूतियों से हमें अवश्य अवगत कराएं।

जब किसी की छठी इन्द्रिय जाग उठती है

छठी इन्द्रिय का तात्पर्य है "सिक्स्थ सेन्स", अन्तर्चक्षु जाग्रत होना, 'थर्ड आई' या तीसरा नेत्र खुलना, जिससे भूत भविष्य और वर्तमान सब कुछ स्पष्ट हो जाय।

क्या आप ऐसा करना चाहते हैं, तो फिर यह लेख आपके लिये ही है।

छठी इन्द्रिय का तात्पर्य है, दूसरे के मन के रहस्यों को स्वतः जान लेने की क्रिया। हमारे शास्त्रों में भी तीसरे नेत्र का वर्णन विवरण आया है, भगवान शिव को तो "त्रि-नेत्र" कहा गया है, यह तीसरा नेत्र आंतरिक नेत्र या ज्ञान नेत्र कहा जाता है, जिससे बाहर की सारी वस्तुएं, भौतिक पदार्थ आदि देख सकते है, परन्तु इस तीसरे नेत्र के माध्यम से हम उन गुप्त रहस्यों को भी देख सकते हैं, जिन्हें सामान्यतः चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता, इस तीसरे नेत्र को ही "आत्म-चक्षु" कहा गया हैं।

अन्तर्चक्षु जाग्रत यंत्र

कुण्डलिनी और तीसरा नेत्र

कुण्डलिनी जागरण जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है, हमारे पूरे शरीर में कुछ विशेष चक्र सन्निहित हैं, जो कि सुप्तावस्था में हैं, ये चक्र अन्दर की सारी चेतना को जागृत करने में समर्थ हैं, इसका प्रारम्भिक चक्र मूलाधार कहलाता है, इसके बाद स्वाधिष्ठान चक्र, विशुद्ध चक्र और आज्ञा चक्र होता हैं, मूलाधार चक्र गुदास्थान के पास सन्निहित हैं, लिंग स्थान के पास स्वाधिष्ठान चक्र, नाभि में मणिपुर चक्र, हृदय पर अनाहत चक्र, कंठ में विशुद्ध चक्र तथा दोनों भौंहों के मध्य में आज्ञाचक्र स्थित हैं, मूलाधार में सुषुम्ना मृतवत अवस्था में पड़ी रहती हैं, कुछ विशेष क्रियाओं से सुषुम्ना को जाग्रत किया जाता है, जगने पर यह ऊपर की ओर उठती है, और उपरोक्त चक्रों को भेदती हुई, आज्ञा चक्र तक जा पहुंचती है, आज्ञा चक्र दो पद्मों में संयुक्त समस्त ब्रह्माण्ड का परिचायक हैं, आज्ञाचक्र जाग्रत होते ही साधक को व्यक्ति के जीवन के बारे में पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है, वह एक क्षण में ही उसके भूतकाल और भविष्य काल को जान लेता है, ऐसा योगी एक स्थान पर बैठा-बैठा सम्पूर्ण विश्व की हलचल को अनुभव कर लेता है, वह उस आज्ञाचक्र के माध्यम से यह जान लेता है, कि आने वाले समय में संसार में कहां-कहां पर क्या-क्या घटनाएं घटित हो सकती हैं, इसी आज्ञा चक्र को शास्त्रों में "तीसरा नेत्र" कहा गया हैं, अंग्रेजी साहित्य में इसे "थर्ड आई" कहते हैं, इस विषय पर सैंकड़ों पुस्तकें लिखी हुई हैं।
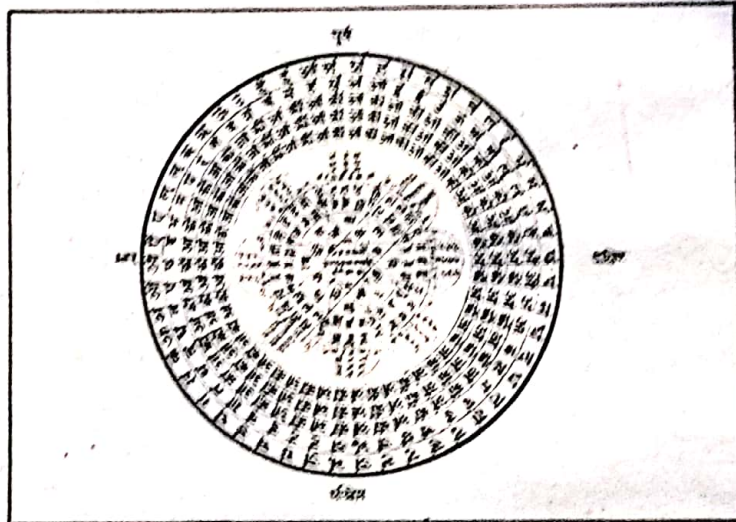
जो शक्ति तीसरा नेत्र या आज्ञा चक्र खुलने पर प्राप्त होती है, उसी को "सिक्स्थ सेंस" या छठी इन्द्रिय के माध्यम से व्यक्ति उन सारे रहस्यों को जान सकता है, जो सर्वथा अगोचर, गोपनीय और महत्वपूर्ण होते हैं, कई बार चेतना किसी-किसी को स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, और

कभी-कभी प्रयत्न करने पर इस चेतना को हस्तगत की जा सकती हैं।

यों सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति में थोड़े बहुत रूप में यह चेतना होती है, जिसके आधार पर वह अनुमान लगाने में समर्थ हो पाता है। किसी व्यक्ति को देखते ही उसके मन में स्वतः भाव पैदा हो जाता है कि यह व्यक्ति बदमाश या धूर्त है, अथवा यह व्यक्ति धोखेबाज है और आगे चलकर यह बात सत्य उतरती है, ऐसी चेतना को ही "छठी इन्द्रिय" कहा गया है।

यदि व्यक्ति शुद्ध भावना से मन की आन्तरिक चेतना में कोई बात कह देता है, तो वह कार्य संपन्न हो जाता है, ऐसी क्रिया को ही हमारे शास्त्रों में श्राप या आशीर्वाद कहा है।

हुमायूं का किस्सा विश्व विख्यात है, बालक हुमायूं मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ था, सारे हकीमों ने दवाइयां दे-दे कर उसे बचाने का असफल प्रयास किया परन्तु हुमायूं धीरे-धीरे मृत्यु के मुंह की ओर अग्रसर हो रहा था, उसके पिता बाबर ने अनुभव किया कि कुछ ही घंटों में हुमायू की मृत्यु निश्चित है, तब बाबर उठा, खुदा से इबादत की, बीमार हुमायूं के पलंग के चारों ओर खूब अल्लाह से प्रार्थना की कि वह हुमायूं को जीवन दे दे, इसके बदले में हुमायू की बीमारी उसे दे दे, यह प्रार्थना सच्चे हृदय से पूर्ण आत्म चेतना से की गई थी, और इतिहास साक्षी है कि उस दिन हुमायूं बराबर ठीक होने लगा और बाबर ज्यादा से ज्यादा बीमार पड़ता गया और कुछ ही दिनों के बाद बाबर की मृत्यु हो गई, यह छठी इन्द्रिय का ज्वलंत उदाहरण है। इस घटना से यह स्पष्ट हो गया कि जो काम डाक्टर, हकीम या दवाइयां नहीं कर सकती, वह काम दुआ कर दिखाती है।

मद्रास के पास त्रिचनापुर में वलियम्मा नाम की एक महिला रहती है, जिसकी ख्याति केवल त्रिचनापुर में ही नहीं अपितु पूरे दक्षिण में है, और नित्य हजारों लोग उससे मिलने के लिये आते हैं, इस महिला के पास किसी प्रकार की कोई साधना या सिद्धि नहीं है, वह स्वयं कहती है कि मैंने अपने जीवन में कोई साधना नहीं की, वह रोगी को अपने सामने लिटा देती है, और छठी इन्द्रिय से उसे बता देती है कि इस रोगी को क्या बीमारी है, और उसे क्या औषधि देनी चाहिए, वलियम्मा तुरन्त ऐसी दवा घर से निकाल कर उसको खाने के लिये दे देती है, या उसके शरीर पर लगा देती है, और वह तुरन्त ठीक हो जाता है, ऐसे एक दो नहीं नित्य सैकड़ों चमत्कार वहां पर घटित होते हैं।
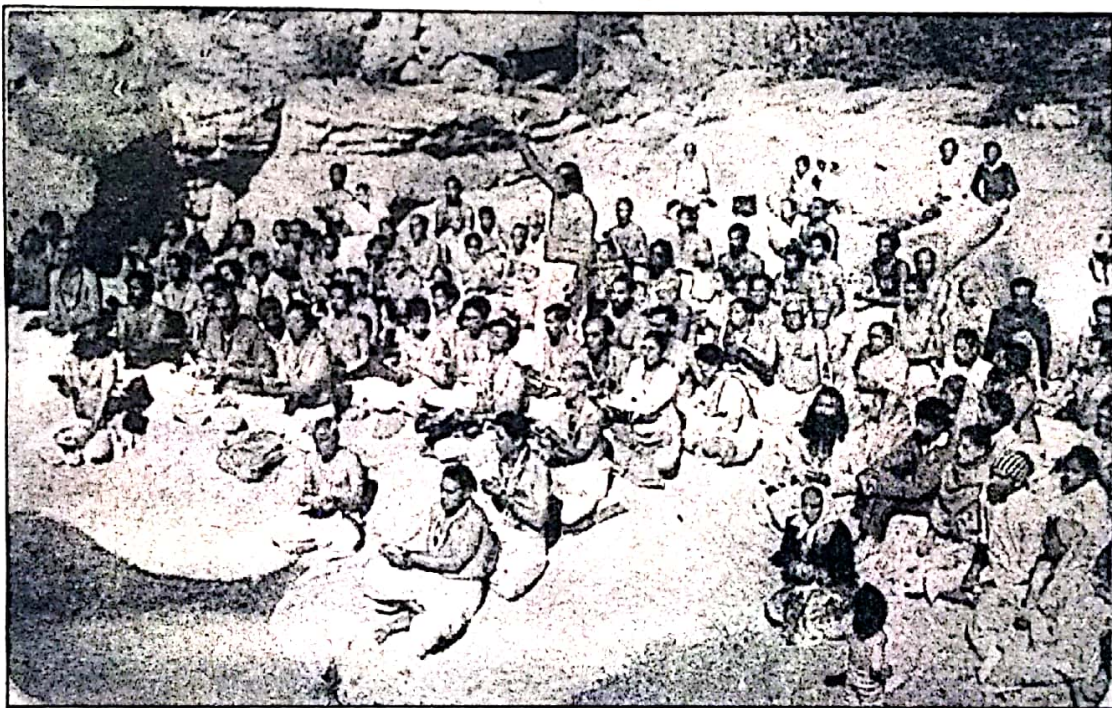
गंगोत्री पर गुरुदेव के सान्निध्य में "छठी इन्द्रिय" जाग्रत साधना

एक बार एक स्त्री अपनी जवान लड़की को लेकर उसके पास आई, और बताया कि इसके चेहरे पर सफेद दाग इतने अधिक बढ़ गये हैं कि चेहरा कुरूप होने लगा है, आस-पास के लोग इस लड़की से घृणा करने लगे हैं, अब तो इसका विवाह भी असंभव है, और इस लड़की ने दु:खी होकर दो-तीन बार आत्म हत्या करने का प्रयास भी किया है।

वलियम्मा ने उसे अपने सामने बिठाया और कुछ क्षणों के लिये ध्यान मग्न हो गई, ध्यानावस्था में ही उसे एहसास हुआ कि इसके सफेद दागों पर सिन्दूर लगाया जाय तो यह ठीक हो जायेगी, आंखे खोलने पर वलियम्मा ने घर से सिन्दूर निकाल कर उसे तेल में मला और लड़की के चेहरे के दागों पर लगा दिया और घर चले जाने के लिये कह दिया। दूसरे दिन उसकी मां लड़की को लेकर वलियम्मा का धन्यवाद करने के लिये आई कि उसके प्रयत्नों से उसके चेहरे के दाग हमेशा के लिये समाप्त हो गये हैं, और वह पुन: स्वस्थ तथा सुन्दर बन गई है।

एक बार एक महत्वपूर्ण व्यक्ति वलियम्मा के सामने लाया गया जो दक्षिण का महत्वपूर्ण अभिनेता और राजनेता था, वलियम्मा ने उसे अपने सामने लेट जाने के लिये कहा और स्वयं ध्यान मग्न हो गई, ध्यानावस्था में ही उसके सामने उस रोगी के शरीर का पूरा चित्र खिंच गया जैसे कि कोई एक्सरे-प्लेट हो, और उसे एहसास भी हुआ कि इसे हृदय की बीमारी नहीं अपितु इसके दोनों गुर्दों में सूजन है, और साथ ही साथ उसे एहसास हुआ कि इसकी कमर में काला धागा बांध देने मात्र से यह प्रसिद्ध राजनेता इस रोग से मुक्ति पा सकता है।

वलियम्मा ने ऐसा ही किया, और एक सप्ताह के भीतर-भीतर वह व्यक्ति पूर्णत: रोग मुक्त हो गया, उससे गुर्दों की सूजन जाती रही और वह सर्वथा निरोग होकर अपने कार्य में लग गया, जो काम डाक्टरों की टीम और हजारों रुपयों की औषधि नहीं कर सकी वह मात्र एक काले धागे ने कर दी, पर यह केवल काला धागा ही नहीं था अपितु इसके पीछे वलियम्मा की छठी इन्द्रिय की चेतना शक्ति भी थी।

वलियम्मा सीधी सादी सामान्य गृहस्थ महिला है, और अधिकतर उसका समय पूजा पाठ में ही व्यतीत होता है, एक दिन जब वह पूजा पाठ कर रही थी तो उसे चेतना हुई कि वह रोगी को देखते ही उसके रोग के बारे में जान सकती है और उसका उपाय भी कर सकती है, उसके बाद से उसने यह परोपकारी कार्य प्रारम्भ कर दिया और आज उसके घर के सामने हजारों लोगों की भीड़ लगी रहती है।

एकाग्रता ही छठी इन्द्रिय है

मन की एकाग्रता अपने आप में बहुत बड़ी शक्ति है, जिसके माध्यम से असंभव कार्य भी संभव किये जा सकते हैं, धीरे-धीरे शांत वातावरण में बैठ कर ध्यान लगाने पर ध्यान की एकाग्रता प्राप्त हो सकती है, इस पर पूरे विश्व में प्रयोग हो रहे हैं और उन्हें आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त हो रही है। रूस की महिला किरतान्या का नाम दूर-दूर तक फैला हुआ है, मन की एकाग्रता के द्वारा वह हिलते हुए पेन्डुलम को रोक देती है, टेबल पर पड़े हुए स्टील के चम्मच को मन को एकाग्र कर दोनों आंखों से एक टक देखकर चम्मच को अपने स्थान से सरका देती है, पिछले नवम्बर में उसने मन की एकाग्रता का अदभुत परिचय दिया उसने खड़ी हुई कार पर मन एकाग्र कर दृष्टि डाली और ड्राईवर को कार चलाने की आज्ञा दी, ड्राईवर ने बहुत प्रयत्न किया, इंजिन तो पूरी शक्ति से चल रहा था, परन्तु कार टस से मस नहीं हो रही थी, तब किरतान्या ने अपनी नजरें कार से हटाई, तभी कार आगे खिसक सकी, यह मन की एकाग्रता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

ठीक ऐसी ही महिला ह्यूस्टन की नीना वालेस है जिसकी चर्चा मात्र ह्यूस्टन में ही नहीं, पूरे अमेरिका में है वह दो हजार मील दूर तक अपने मन की एकाग्रता की शक्ति से आदेश देती है, और वहां पर आदेश का पालन होता है, ह्यूस्टन से लगभग दो हजार मील दूर शिकागो शहर में एक व्यक्ति के हृदय का आपरेशन हो रहा था, नीना ने ह्यूस्टन में बैठे-बैठे उसके हृदय की धड़कन ही बंद कर दी, टेलीफोन से बराबर वार्तालाप चालू था, नीना वालेस ने वहीं बैठे-बैठे निश्चेष्ट बंद हृदय की धड़कन को वापिस धड़कने का आदेश दिया, और आपरेशन टेबल पर ही वह हृदय धड़कने लगा, इससे एक बार फिर यह प्रमाणित हो गया कि मन की एकाग्रता या छठी इन्द्रिय में बहुत बड़ी शक्ति होती है, और इसके माध्यम से कठिन से कठिन कार्य किये जा सकते हैं।

रूस और अमेरिका में छठी इन्द्रिय पर परीक्षण

इस समय इन दोनों देशों में मन की एकाग्रता या छठी इन्द्रिय की शक्ति को लेकर बराबर परीक्षण चल रहे हैं, और इसमें वे सफलता भी पा रहे हैं, अभी कुछ दिनों पहिले अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ था कि रूस ने मन की एकाग्रता या छठी इन्द्रिय पर विशेष सफलता प्राप्त कर ली है, और इसके माध्यम से पांच हजार मील दूर स्थित पनडुब्बी के चालकों को खतरों से या घटनाओं से अवगत करा दिया जाता है, और इससे उनकी गोपनीयता भी बनी रहती है, यदि यह समाचार वायरलेस या अन्य किसी माध्यम से दिया जाता तो अमेरिका या अन्य देश उस समाचार को बीच में ही पकड़ लेते, और इससे गोपनीयता बनी नहीं रहती।

अमेरिका इससे चिन्तित है, उसने भी छठी इन्द्रिय के प्रयोगों में तेजी लाई है, और सफलता प्राप्त करने का दावा किया है, अभी कुछ दिनों पहले बिल आर्मेस नामक वैज्ञानिक के द्वारा मंगल ग्रह के आस-पास विचरण करने वाले राकेट को मन की एकाग्रता से आदेश दिया और इसका तुरन्त चमत्कारिक असर हुआ, वह राकेट अपने परिक्रमा पथ से थोड़ा सा भटक गया था, और उससे बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया था, वैज्ञानिकों को तो आशंका होने लगी थी कि यह यान अपने स्थान से भटक गया है, अतः इस पर नियंत्रण प्राप्त करना कठिन है, और यह अरबों रूपये का यान अंतरिक्ष में ही जल कर समाप्त हो जायेगा, दूसरी कोई युक्ति भी नहीं बची थी, जिसके द्वारा यान को सही रास्ते पर लाया जाता, पर पिछले दो वर्षों से बिल आर्मेस मन की एकाग्रता पर परीक्षण कर रहा था और मन की एकाग्रता पर अदभुत सफलता प्राप्त कर सकने में सफल हो सका था, इसी के द्वारा वह लाखों मील दूर गतिशील राकेट को आदेश दे सका और अपना आदेश मनवा कर उसे सही रास्ते पर ला सका।

मन शक्ति से विलक्षण कार्य

भारत में इस अतीन्द्रिय शक्ति या मन शक्ति से संबंधित चमत्कारी बातों से सैकड़ों ग्रन्थ भरे पड़े हैं, ऋषियों ने वरदान देकर या आशीर्वाद देकर एक क्षण में कठिन से कठिन कार्य संपन्नकर दिखाये हैं, जो कुण्डलिनी चक्र के रहस्यों को जान लेता है, वह मन की अतीन्द्रिय शक्तियों पर नियंत्रण भी प्राप्त कर लेता है, जापान में इस संबंध में महत्वपूर्ण प्रयोग किया, यह प्रयोग एक योगी पर किया गया था, जब उसने अपने स्वाधिष्ठान चक्र को जाग्रत किया तो उसके शरीर पर लगे यंत्रों ने बताया कि योगी के शरीर में विशेष ऊर्जा बढ़ रही है, और यह ऊर्जा इसी प्रकार से बढ़ती रही तो परमाणु बम से भी ज्यादा विस्फोट कर सकती है,

छठी इन्द्रिय जाग्रत करने के सिद्ध हस्त आचार्य गुरुदेव श्रीमाली जी

स्वाधिष्ठान चक्र के जागरण के बाद यदि व्यक्ति किसी को मरने का श्राप दे देता है तो सामने वाला व्यक्ति तुरन्त गिर कर समाप्त हो जाता हैं।

उस योगी के पूरे शरीर में वैज्ञानिक यंत्र बंधे हुए थे, और उन यंत्रों के माध्यम से ही यह जानकारी ली जा रही थी, कि शरीर स्थित अलग-अलग चक्रों के जागरण से किस प्रकार की शक्ति निर्मित होती है, जब उस योगी ने आज्ञा चक्र को जाग्रत किया तो वैज्ञानिक यंत्रों के माध्यम से पता चला कि उसके शरीर में ईथर नामक पदार्थ का घनत्व बहुत अधिक बढ़ गया हैं, और उसके शरीर स्थित ईथर का पूरे ब्रहमाण्ड में फैले हुए ईथर से संबंध हो गया है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उस योगी में इतनी क्षमता प्राप्त हो गई है कि उस क्षण पूरे ब्रहमाण्ड में कहीं पर होने वाली घटना को बखूबी देख सकता हैं, समझ सकता है, और उसमें हस्तक्षेप कर सकता है, इच्छा शक्ति और कुण्डलिनी जागरण का यह पूर्ण वैज्ञानिक आधार था।

बाद में जब योगी के शरीर पर से सारे यंत्र हटा लिए और टोकियों की प्रयोगशाला में बैठे हुए, उस योगी को कहा गया कि वह मन की एकाग्रता शक्ति से यह पता लगाये कि इस समय अमेरिका में न्यूयार्क स्थित वैज्ञानिक मि. क्रीच क्या कर रहे हैं?

योगी ने मन को एकाग्र कर एक सैकिण्ड में बता दिया कि डॉ. क्रीच अपनी प्रयोगशाला में मेढ़क के हृदय पर परीक्षण कर रहे हैं, टेलीफोन कर के मालूम किया गया तो यह बात सोलह आने सही उतरी।

फिर उस योगी को कहा गया वह इस शक्ति से प्रयोगशाला में टेबल पर पड़े हुए मेढ़क के हृदय को बंदकर दें, योगी ने ध्यान एकाग्र कर ऐसा ही किया, और उसी क्षण क्रीच के शब्दों में जब कि ऐसे कोई लक्षण नहीं थे, कि वह हृदय धड़कना बंद कर दें।

इससे योगी की इच्छा शक्ति और एकाग्रता शक्ति पर विश्वास हो गया और यह भी प्रमाणित हो गया कि इस छठी इन्द्रिय के माध्यम से हजारों मील दूर होती हुई घटनाओं को देखा जा सकता है, और उन घटनाओं में इस्तक्षेप किया जा सकता हैं।

कैसा होता है-छठी इन्द्रिय का जागरण

वस्तुत: शरीर में तीन प्रकार की शक्तियां होती है, (१) भौतिक या शारीरिक शक्ति (२) बौद्धिक शक्ति (३) मनश:शक्ति। व्यक्ति शारीरिक शक्ति का तो प्रयोग पिछले कई सौ वर्षो से करता आ रहा है, बोझा उठाना, परिश्रम करना, आदि ऐसी ही शक्ति है, इसके अलावा अब मनुष्य पहले की अपेक्षा ज्यादा बौद्धिक शक्ति का उपयोग करने लगा हैं; यद्यपि वैज्ञानिकों के अनुसार अभी तक भी मानव अपनी बौद्धिक क्षमताओं या बौद्धिक शक्ति का ३० प्रतिशत से ज्यादा उपयोग नहीं कर पा रहा हैं, परन्तु मन:शक्ति के प्रयोग के बारे में तो वह अभी तक कोरा ही है, और केवल उसका पांच प्रतिशत ही उपयोग करने में समर्थ हो सका है।

ध्यान, धारणा व समाधि या कुण्डलिनी जागरण के द्वारा ही इस मनशक्ति का विकास होता है, धीरे-धीरे अभ्यास होता है, धीरे-धीरे अभ्यास करने पर यह संकल्प शक्ति या मनश:शक्ति बहुत अधिक बढ़ सकती है, इस शक्ति के सहारे व्यक्ति दूसरे के रोगों को मिटा सकता है, संसार में कहीं पर होने वाली घटनाओं को देख सकता है, सुन सकता है, मनुष्य के मन की गोपनीय बातों को समझ सकता है, ऐसे व्यक्ति के लिये किसी का कोई रहस्य गोपनीय नहीं रहता।

आप कल्पना करें कि यदि कोई व्यक्ति मनश:शक्ति के सहारे किसी स्त्री के भूतकाल के रहस्यों को जान ले तो कितनी बड़ी हलचल हो सकती है, यदि सामने वाले व्यापारी या व्यक्ति के मन की बातों को जान लें तो बहुत बड़े धोखे या विश्वासघात से बचा जा सकता है, यदि इस मनश:शक्ति का प्रभाव बढ़ा दिया जाय तो दूसरे राष्ट्र या पड़ौसी देश के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के दिमाग में क्या बातें घुमड़ रही है, इसका पता आसानी से लगाया जा सकता है इसके द्वारा विरोधी को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, शत्रु को अपनी आज्ञानुसार चलने के लिये बाध्य किया जा सकता है, न्यायाधीश को अपने मनोनुकूल न्याय दिलाने के लिये प्रयोग किया जा सकता है, और किसी भी रहस्य को आसानी से जाना जा सकता है।

प्राचीन योगियों ने इसकी दो विधियां बताई है, कुण्डलिनी जागरण कर चक्रों को जागृत करने से अथवा नित्य आधा घंटा किसी एकांत स्थान पर बैठ कर ध्यान लगाने के बाद उस शक्ति के सहारे किसी को आज्ञा दे और देखें कि वह शक्ति कितना प्रभाव पैदा करने में समर्थ हो सकती है, पहले इसका प्रयोग चलती हुई घड़ी को रोकने, या टेबल पर पड़े हुए चम्मच को सरकाने जैसी क्रियाओं से कर सकते हैं, और धीरे-धीरे इस अतीन्द्रिय शक्ति को बढ़ा कर कठिन कार्य भी संपन्न किये जा सकते हैं।

योग पारासर में इसकी मंत्रात्मक विधि या प्रयोग भी दिया है, रूस और अमेरिका ने भी इसी मंत्र के सहारे अतीन्द्रिय शक्ति के विकास में सफलता पाई है, और उन्होंने स्वीकार किया है कि इस मंत्र और साधना के द्वारा छठी इन्द्रिय की शक्ति को अनंन्त: क्षमतायुक्त बनाया जा सकता है।

अतीन्द्रिय प्रयोग

यह प्रयोग नित्य प्रात: पांच बजे के आस-पास प्रारम्भ करना चाहिए, यह एक घंटे का प्रयोग है, जिस समय चारों तरफ कोलाहल कम होता है और लगभग शांति रहती है, तब अपने सामने तांबे से निर्मित अतीन्द्रिय यंत्र को रख कर उसके मध्य में दृष्टि रखता हुआ निम्न मंत्र का एक घंटे तक बराबर मंत्र जप करता रहे, इसमें किसी भी प्रकार की माला के प्रयोग की जरूरत नहीं है।

मंत्र :

ॐ ह्रीं मनस मणिभद्रे ह्रीं फट् ।

इस मंत्र का ताम्रपत्र पर निर्मित "अतीन्द्रिय यंत्र" से विशेष संबंध है, और इन दोनों के सहयोग से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, उसे "अतीन्द्रिय ऊर्जा" कहते हैं, यह ऊर्जा साधक में एकत्र होती रहती है, मात्र चालीस दिनों तक नित्य एक घंटा प्रयोग करने से आश्चर्य जनक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, अब तो रूस और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि इस मंत्र के उच्चारण से कुछ ऐसी लहरें उत्पन्न होती है, जो सामने पड़े यंत्र से टकरा कर साधक के शरीर में जा कर छठी इन्द्रिय जाग्रत होती है, और उसके माध्यम से असंभव कार्य को भी संभव करने की क्षमता प्राप्त होती है।

मानसिक एकाग्रता आत्म सम्मोहन द्वारा साधक अपने आप को उस स्थिति में पहुंचा सकता है जबकि उसे उसकी छठी इन्द्रिय स्पष्ट संकेत देने लगे, कई बार किसी दुर्घटना अथवा विशेष घटना का पूर्वाभास आपके अचेतन मस्तिष्क में होता है, क्योंकि आपकी छठी इन्द्रिय सक्रिय नहीं होती, इसलिये उस बात को पूरी तरह से पकड़ नहीं पाते, और जब व्यक्ति व्यसन रहित होकर आत्म सम्मोहन एवं अतिन्द्रिय साधना करता है तो मस्तिष्क में वह द्वार खुल जाता है जो कि छठी इन्द्रिय का केन्द्र बिन्दु है।

●●●

अगले अंक में

साबर मंत्र विशेषांक

मार्च ९३ का साबर विशेषांक

साबर मंत्र . . . . . अर्थात गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ द्वारा रचित प्रामाणिक और तुरन्त प्रभाव करने वाले मंत्र.... जो अपने आप में अचूक होते हैं, जो अपने आप में बन्दूक की गोली की तरह काम करने वाले होते हैं, जो सरल एवं हिन्दी भाषा में रचित होते हैं.

- साबर मंत्र--दुर्लभ और वरदायक मंत्र--जो गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रणीत है।
- लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित कुछ गोपनीय और दुर्लभ साबर मंत्र
- अघोरियों के साथ कुछ दिन
- मेरा चेलेंज है कि कोई इन मंत्रों को गलत सिद्ध कर दें।
- रत्नों के रंग महल में
- भगवती जगदम्बा निश्चय ही प्रत्यक्ष होती है-नवरात्रि पर विशेष लेख
- चित्रगुप्त साधना--जो हर बहिन अपने भाई की रक्षा के लिए तथा हर मां अपने पुत्र के दीर्घायु के लिए करती है।
- ऋणहर्ता गणेश साधना--जो प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है
- शुष्क जीवन में अमृत का प्रवाह--शक्तिपात
- गुरुर्बिना गतिर्नास्ति
- आप भी चमत्कारी पुरुष बन सकते हैं।
- *ये सब..... और भी बहुत कुछ....पत्रिका के मार्च अंक में*

दर्द से पूर्णतः मुक्ति, जापानी तंत्र से

तंत्र केवल भारतवर्ष में ही नहीं संसार के प्रत्येक देश मे तंत्र का प्रचार और प्रभाव है। अमेरिका, इंगलैण्ड, फ्रांस में भी, और यहां तक कि रूस में भी तंत्र के माध्यम से कई कार्य संपन्न होते हैं।

तिब्बत और जापान में भी तंत्र के क्षेत्र में कई प्रयोग हुए हैं, और देखा जाय तो अत्यंत प्राचीनकाल से ही इन देशों में तंत्र का प्रभाव रहा है। तिब्बत तो इस प्रकार से तंत्र का गढ़ ही रहा है। आज भी तिब्बत के लामा अद्भुत और आश्चर्यजनक सिद्धियां तंत्र के माध्यम से लिये हुए हैं, और उनका प्रदर्शन यदा-कदा कर भी देते हैं। जापान में भी प्राचीन तंत्र पर काफी शोध को रहा है, और वे यह स्वीकार कर रहे हैं कि उनके प्राचीन ग्रंथों में तंत्र के जो विवरण हैं आज भी उनका महत्व है और यदि उनका उपयोग किया जाय तो उनसे आश्चर्य जनक सफलता प्राप्त होती है।

तोकाजीरो जापान का महत्वपूर्ण तंत्र

आजकल ज़ापान में तोकाजीरो तंत्र का प्रयोग चिकित्सालयों में धड़ल्ले के साथ किया जाता है, और इससे हजारों-लाखों लोग लाभ उठा चुके हैं। यों तो छोटी-मोटी व्याधि होने पर शरीर में दर्द हो ही जाता है। जुकाम होने से सिर में दर्द होता है, या पेट से आदमी पीड़ित रहता है, अथवा हाथ या पांव कट जाने पर या और कोई बीमारी से शरीर के किसी-न-किसी भाग में दर्द होना स्वाभाविक है।

ऐसी स्थिति में डॉक्टर लोग दर्द निवारक गोलियां या "एन्टी बाइटिक्स" देते हैं, परन्तु इनके 'साइड इफेक्ट' अत्यंत घातक रहे हैं। ज्यादा गोलियां लेने पर शरीर मोटा हो जाता है, कई बार आंखों में कमजोरी होने ही वजह से वह दिल का मरीज हो जाता है, और इस प्रकार ऐसी कई व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं जो उसके लिये नुकसान दायक होती हैं।

ऐसी स्थिति में जापान की यह तांत्रिक पद्धति वरदान के रूप में सबके सामने आई है, और पश्चिम के राष्ट्रों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि वास्तव में ही इस पद्धति के माध्यम से बिना इन्टीबाइटिक्स लिये दर्द से छुटकारा पाया जा सकता है।

तोकाजीरो एक महत्वपूर्ण पद्धति है, यह भारतीय ध्यान पद्धति से मिलती जुलती है। तोकाजीरो पद्धति के अनुसार व्यक्ति को एक दिन पहले सर्वथा निराहार रहना चाहिए, और किसी प्रकार का अन्न ग्रहण नहीं करें, दिन में दो तीन बार गुनगुना पानी पी लें जिससे कि उसका पेट साफ हो सके, इसके लिये किसी प्रकार की दवा भी न लें। यदि शरीर ७० किलों से ज्यादा वजन का है, तो उसे चाहिए कि वह दो दिन सर्वथा निराहार रहे, इस अवधि में सामान्य पेय पदार्थ ले सकता है, परन्तु खाद्य पदार्थ स्वीकार न करें। इससे लाभ यह होगा कि दो दिनों में उसका पेट साफ हो जायेगा, और उसके पेट में किसी प्रकार का मल नहीं रहेगा, इन दिनों में ज्यादा से ज्यादा पानी पियें।

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

अकाल मृत्यु निवारणार्थ
सर्वोत्तम साधन
महामृत्युंजय विधान

एक्सीडेन्ट, बीमारी, अपघात, मानसिक चिन्ताओं से मुक्त होने, एवं पूर्ण आयु प्राप्त करने का अद्वितीय प्रयोग

'महा मृत्युंजय-विधान' मन्त्रशास्त्र में क्रान्तिकारी मन्त्र तथा आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग है। बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं विदेशों में भी 'महामृत्युंजय' की चर्चा रही है। प्रत्येक बालक, रोगी या अकाल मृत्यु से भीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त महामृत्युंजय यंत्र धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है।

महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बाल-घात योग हो, उसके लिए **महामृत्युंजय विधान** सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्यंजय मंत्र अपने आपमें अन्यत्न ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मंत्र अपने आपमें महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है जो कठिन कार्यो को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं-लघु अनुष्ठान चौबीस हजार मंत्र का होता है और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का होता है जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं तथा महापुरश्चरण या महाअनुष्ठान चौबीस लाख मंत्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में २७ माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन के हिसाब से, तथा महाअनुष्ठान में ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देखकर करना चाहिए।

२. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।

३. जहां जप करें वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप प्रारम्भ करना चाहिए।

४. घी का दीपक लगातार जलते रहना चाहिए।

५. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।

६. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा-पूरा पालन करना चाहिए।

७. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।

८. अनुष्ठान करने से पूर्व मंत्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।

९. नित्य निश्चित संख्या में मंत्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।
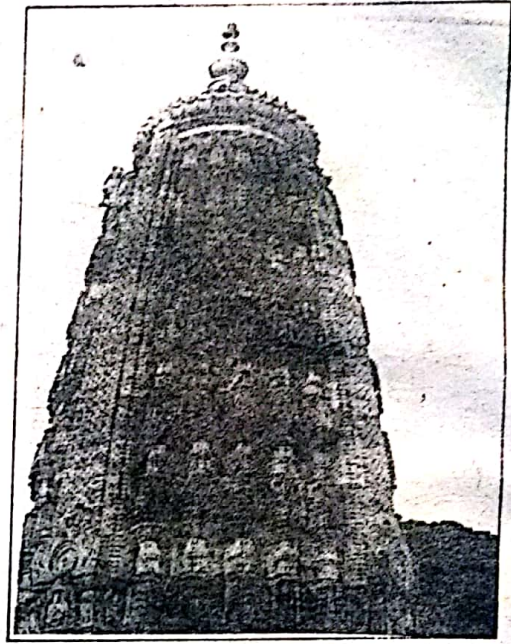
१०. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मंत्र का १,१००, जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए १,१००० मंत्र का जप तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए १,००,००० मंत्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में यंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मंत्र निम्नलिखित है पर साधक को बीज युक्त मंत्र का ही जप करना चाहिए।

मंत्र

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(ऋ ७-५१-१२, यजुर्वेद ३-६०)

अर्थात् हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले 'उर्वारुक'

की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं।

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु-स्मरण, शंकर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मुतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं। अमुक यजमानस्य वा शरीरे अमुकपीड़ा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युंजय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युंजयमंत्र जपमहं करष्ये।

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें।

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेव-कहोलवशिष्ठ ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ का जल छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्रों से शिर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए। पुनः

वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि।

पंक्तिगायत्र्युनुप्छन्देभ्यो नमः मुखेः, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि, ह्रीं शक्त्यै नमः लिंगे, श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

करन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः त्रयम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हौ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ही जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रौं-अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय विलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भूवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय-करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूवः स्वः त्रयम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल-पाणये स्वाहा-हृदयाय नमः।

ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूव: स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृत मूर्तये मां जीवय-शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा-शिखायै वषट्।

ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं-कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं जूं सःभूर्भूवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय-अस्त्राय फट्।

देहन्यास

त्रयम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिनैत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुक गण्डयोः इव हृदये। बन्धनात् जठरे। मृत्योः लिंगे। मुक्षीय ऊर्व्योः। मां जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

ध्यानम्

फिर शंकर का ध्यान करें।

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धत्य तोयं शिरः,
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ।
अक्षस्रगमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं यक्षं च मृत्युञ्जयम्।।

(सती खं. ३८-२४)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युंजय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश

उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे शिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले हाथों में भी वे दो कलश लिये हुए हैं जिन्हें गोद में रखा हुआ हैं, सातवें हाथ में रुद्राक्ष माला और आठवें में मृगछाला धारण कर रखा है। उनका आसन कमल का है, उनके सिर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है। जिससे शरीर भीग गया है। वे त्रिनेत्रयुक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बायीं ओर भगवती गिरिजा विराज रही हैं।

ध्यान के बाद महामृत्युंजय का जप करना चाहिए।

मंत्र का स्वरूप इस तरह है।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मंत्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश, मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए। जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण का अचूक विधान माना जाता है, हजारों का अनुभव है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपना कर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युंजय

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा है) पालय पालय सः जूं ॐ।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ११ लाख मंत्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र ने इसे सर्वरोग निवारक घोषित किया है।

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।

जन्ममृत्युञ्जरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनः।।

मंत्र जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र का जप करना चाहे उनके मृत्युंजय मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ हौं जूं सः।

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान मृत्युञ्जय को जायफल समर्पित करना चाहिए।

ॐ हौं हौं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा'

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है। जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिए कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावे। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात युग में प्रत्येक को अग्रिम रक्षार्थ **'महामृत्युञ्जय यंत्र'** धारण कर ही लेना चाहिए।

Scanned by CamScanner

सावधान!

कहीं आप पर भी तो
कोई
तांत्रिक प्रयोग नहीं कर रहा है?

आजकल तो टुच्चे तांत्रिक भी ईर्ष्या, जलन या किसी भी कारण से तांत्रिक प्रयोग कर देते हैं, और आपकी सारी जिन्दगी बरबाद हो जाती है।

आप एक क्षण ठहर कर अपने आपको आंक तो लें।

जीवन का मतलब सुख और शांति के साथ समय व्यतीत होना होता है, हम अपने जीवन में प्रयत्न और परिश्रम इसीलिये तो करते हैं कि हमारा जीवन सुखमय हो, हम अपने जीवन में जितना परिश्रम करें, उतना फल हमें मिल जाय, हम अपने जीवन में जो कुछ करें उसका परिणाम प्राप्त हो।

पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में देखते हैं कि बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद भी बहुत कम सफलता हमें मिल पाती है। व्यापार में हम दिन रात मेहनत करते रहते हैं, और समय आने पर उसका जो लाभ होना चाहिए, वह लाभ नहीं हो पाता, हम अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन मुटाव नहीं चाहते, परन्तु फिर भी प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख शांति और आनंद होना चाहिये, वह नहीं हो पाता।

तब दिमाग में यह प्रश्न उठता है कि ऐसा क्या कारण है कि जब थोड़ा सा परिश्रम करने पर भी लोग पूरा-पूरा लाभ उठा लेते हैं, और हमें लाभ नहीं मिल पाता, थोड़ी सी मेहनत करने पर भी दूसरे व्यक्ति व्यापार में लक्ष्मी प्राप्त करके आराम की जिन्दगी व्यतीत करने में सफल हो जाते हैं और हम नहीं कर पाते, जरूर इसके पीछे कोई न कोई रहस्य है, कोई न कोई कारण है, जिसे हम भली प्रकार से समझ नहीं पा रहे हैं।

तांत्रिक प्रयोग-मुख्य कारण

जब जीवन में ऐसी स्थिति अनुभव हो तो यह निश्चित है कि किसी ने कोई टोना टोटका या तांत्रिक प्रयोग कर दिया है, जिससे जीवन में जो अनुकूलता और सुख प्राप्त होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।

यद्यपि तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं है, परन्तु मैंने अनुभव किया है कि आजकल छोटे मोटे टुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये है, जो किसी को बचाना तो नहीं जानते, परन्तु उसे तकलीफ दे सकते हैं, जो किसी का हित तो नहीं कर पाते, पर उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिये हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा

मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर लेते हैं और इसकी वजह से सामने वाले की भरी पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।

यह तो वैसी ही बात हुई कि किसी स्वस्थ व्यक्ति को चाकू मारने में कोई विशेष हुनर या ज्ञान की जरूरत नहीं होती, कहीं से भी उसके हाथ एक छोटा सा चाकू लग जाता है और वह बिना परिणाम जाने किसी के पेट में चाकू का घाव लगा देता हैं, परन्तु उस घाव को दूर करने में और कटे हुए स्थान की चिकित्सा करने में विशेष ज्ञान, विशेष अनुभव और विशेष औषधि की जरूरत होती है, बिना कुशल डाक्टर के वह घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी-कभी उससे मृत्यु भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि चाकू लगाने में केवल एक सेकेण्ड का समय लगता है, परन्तु चाकू लगने से जो घाव होता हैं, उसको ठीक करने में पूरा एक महीना लग सकता है। चाकू लगाने में केवल दो रुपये का चाकू खरीदने में खर्च होते हैं, परन्तु उससे जो घाव बन जाता है उस घाव को ठीक करने में सैकड़ों रुपये लग जाते हैं।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है, तांत्रिक प्रयोग तो कोई टुच्चा सा व्यक्ति भी कर सकता है, परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं, और एक प्रकार से देखा जाय तो पूरी जिन्दगी अस्त व्यस्त हो जाती है। हम्मल करने या तांत्रिक प्रयोग करने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है, तो उसे दूर करने के लिये कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती है।

तांत्रिक प्रयोग से संभावित परिणाम

जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं, जिनमें हम यह आसानी से पता लगा सकते हैं कि हम पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है या नहीं, यद्यपि दूसरे भी कारण हो सकते हैं, परन्तु आज के युग में इस प्रकार के छोटे मोटे कई तांत्रिक हैं जो उसके विरोधी से धनराशि लेकर तांत्रिक प्रयोग कर डालते हैं, और उसके परिणाम से परेशानियां पैदा हो जाती हैं।

नीचे कुछ विशेष तथ्य हैं, जिनके माध्यम से हम जान सकते हैं कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं, आप स्वयं अपने बारे में जांच कर सकते हैं।

(१) यदि स्वयं थोड़ा बहुत बीमार रहें, तबीयत ठीक रहे ही नहीं, और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो तो समझ लेना चाहिये कि आप पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है।

(२) यदि आप हर समय चिन्ता ग्रस्त रहते हैं, या बार-बार आत्म हत्या करने की भावना मन में आती है या घर बार छोड़कर कहीं दूर चले जाने के विचार मन में आते हैं तो समझना चाहिए कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।

(३) यदि परिवार में कोई न कोई बीमार बना ही रहता है और दवाइयों तथा डाक्टरों पर खर्चा होने के बावजूद भी बीमारी का पता नहीं चल रहा हो, या घर से बीमारी समाप्त हो ही नहीं रही हो, या घर में डाक्टर का आना जाना बना ही रहे, तो निश्चय ही तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

(४) यदि पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह रहा हो, या मोटापा बढ़ रहा हो, अथवा जरूरत से ज्यादा कमजोरी आ रही हो, या उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया हो, तो यह समझ लेना चाहिये कि उस पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है।

(५) यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो, और डाक्टरों को बताने पर भी यदि यह रिपोर्ट आ रही हो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से और संतान पैदा करने की दृष्टि से कोई कमी नहीं है, फिर भी संतान नहीं हो रही हो, तो यह समझ लेना चाहिये कि किसी ने गर्भ बांध दिया है।

(६) इसी प्रकार यदि संतान पैदा हो कर मर जाती है या बीच में ही गर्भ गिर जाता है, तो निश्चय ही "गर्भ बंधन तांत्रिक प्रयोग" किया गया है, ऐसा समझना चाहिये।

(७) यदि घर में जवान पुत्र या पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाय, तो निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिये कि किसी ने घर के सदस्य पर 'मूठ' का प्रयोग किया है, या मृत्यु का प्रयोग किया है।

(८) यदि आपने मकान बनाया हो और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती जाय तो समझ लेना चाहिये कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

(९) यदि आप चाहें कितना ही कमायें पर घर में धन संचय न हो, और यह पता ही नहीं चले कि जो पैसा आता है वह कहां चला जाता है, और हर समय अभाव बना रहता है तो यह समझ लेना चाहिये कि किसी ने तांत्रिक प्रयोग निश्चित रूप से किया है।

(१०) यदि आप बराबर कमजोरी अनुभव करते हैं और आपका मनोबल समाप्त हो गया हो, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो तो यह तांत्रिक प्रयोग का परिणाम है, ऐसा समझना चाहिए।

(११) यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो रहा हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है, ऐसा मेरा अनुभव है।

(१२) यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आपका मकान नहीं बन रहा हो, या आपकी जमीन नहीं बिक रही हो, या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हों या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही यह **गृह बंधन प्रयोग** है जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

(१३) यदि आपने व्यापार की दृष्टि से जमीन खरीदी हो या मकान बनाये हों, और जमीन नहीं बिक रही हो या उसमें कानूनी परेशानियां आ रही हों तो निश्चय ही यह तांत्रिक प्रयोग है, ऐसा समझना चाहिए।

(१४) यदि संतान बीमार रहती हो, इलाज कराने पर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा हो, या वह ठीक ढंग से पढ़ाई नहीं कर रहा हो अथवा उसका मानसिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो तो इसका कारण केवल मात्र तांत्रिक प्रयोग ही है।

(१५) यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाय या आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करें तो इसका सीधा सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।

(१६) यदि हर समय शत्रु भय बना रहता हो, यदि निरन्तर आपके विरूद्ध कुचक्र रचे जाते हों, जिससे आपकी मानसिक शांति समाप्त हो गई हो, और हर समय आप तनाव में रहते हों तो इसका तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है, और उसी वजह से आप इतनी परेशानी उठा रहे हैं।

(१७) यदि पति पत्नी में मतभेद हो, आपके समझाने पर भी पत्नी सही रास्ते पर नहीं चल रही हो या हर समय घर में कलह का वातावरण हो, तो यह **कलह तंत्र प्रयोग** है, और तांत्रिक प्रयोग की वजह से ही यह समस्या आई है।

(१८) यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों के लिए आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते हैं तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।

(१९) यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने के बावजूद भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण भाग्य में बाधाएं आ रही हों, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो रही हो तो इसका तात्पर्य **भाग्यबंधन** अथवा **भाग्य बाधा तांत्रिक प्रयोग** समझना चाहिए, ऐसा मेरा अनुभव है।

(२०) यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आती हों, प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मतभेद दूर नहीं हो रहे हों, आपकी उन्नति या प्रमोशन नहीं हो रहा हो, आप जैसा स्थानान्तरण चाहते हैं, प्रयत्न करने पर भी वैसा नहीं हो रहा हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग ही है।

(२१) यदि आपके साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम करने के बावजूद भी लक्ष्मी का आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हों, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो तो ऐसा तांत्रिक प्रयोग की वजह से ही हो सकता है, यह स्पष्ट है।

ऊपर मैंने कुछ सूत्र दिये हैं, जिनके आधार पर हम जान सकते हैं कि हम जो परेशानी भुगत रहे हैं, उसका कारण क्या है हमारे जीवन में जो बाधाएं आ रही हैं उसका कारण क्या है, हम जीवन में जो उन्नति नहीं कर पा रहे हैं, उसका कारण क्या है।

और इनका कारण तांत्रिक प्रभाव ही है, आप तो बुद्धिमान हैं, चतुर हैं, इसके बावजूद भी आप इन समस्याओं का निराकरण नहीं कर पा रहे हैं, तो इसका मतलब यह है कि कोई ऐसी शक्ति आप पर या आपके परिवार पर हावी है, जिससे आप छुटकारा नहीं पा रहे हैं, और आपकी सारी होशियारी धरी की धरी रह गई है।

ऐसी स्थिति में अकड़ या गुस्सा व्यर्थ है, ऐसी स्थिति में चालाकी या दूसरे विकल्प खोजना भी व्यर्थ है, या दूसरे कारण ढूंढ़ने तथा अपने मन को झूठी तसल्ली देना भी व्यर्थ है, अपने भाग्य का रोना रोना, अथवा भगवान पर दोष लगाना व्यर्थ है, इसका कारण किसी ने तांत्रिक प्रयोग आप पर करवा दिया है और उसी वजह से आप इन समस्याओं में घिर गये हैं।

ये तांत्रिक प्रयोग आपके परिवार के किसी रिश्तेदार ने पार्टनर ने, या किसी अन्य ने आप पर करवा दिये हैं, इसके कारण तो कुछ भी हो सकते हैं, कारण ईर्ष्या हो सकती है, जलन हो सकती है, यह प्रवृत्ति हो सकती है कि आप उन्नति क्यों कर रहे हैं, यह ईर्ष्या हो सकती है, कि आप सुखी क्यों हैं, या आपका व्यापार उन्नति की ओर क्यों बढ़ रहा है, इन कई कारणों से आपके रिश्तेदार या नजदीकी व्यक्ति ईर्ष्याग्रस्त होकर किसी टुच्चे तांत्रिक से प्रयोग करवा दिया हो, और आप परेशानियां भुगत रहे हों।

और जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि आपको युग के अनुसार बदलना चाहिए, नवीन परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए, आज जो प्रहार करने के नये तरीके बन गये हैं, उन पर विचार करना चाहिए, आज व्यक्ति आमने सामने खड़े होकर शत्रुता नहीं निकालता, बल्कि पीठ पीछे छुरा भोंकने में विश्वास करता है, ऊपर से मित्रता का दिखावा करके नुकसान पहुंचाता है, और ऐसी स्थिति में आपके लिये जरूरी है कि उसके प्रहार का मुंह तोड़ जवाब दें, जो तांत्रिक प्रयोग आप पर कर दिया है, उससे छुटकारा पायें, और अपने जीवन को ज्यादा सुखी ज्यादा सफल और ज्यादा संपन्न बनायें।

रक्षा प्रयोग

तांत्रिक प्रयोग दूर करने के साथ साथ रक्षा प्रयोग भी संपन्न करवा लेना चाहिये, जिससे वापिस कोई दूसरी बार यदि तांत्रिक प्रयोग करें भी, तो वह निष्फल हो जाय, या आप पहले से ही स्वयं का परिवार अथवा व्यापार के लिये रक्षा प्रयोग संपन्न करवा लें, जिससे कि आने वाले खतरे से आप बच सकें और जीवन में तकलीफ न हो।
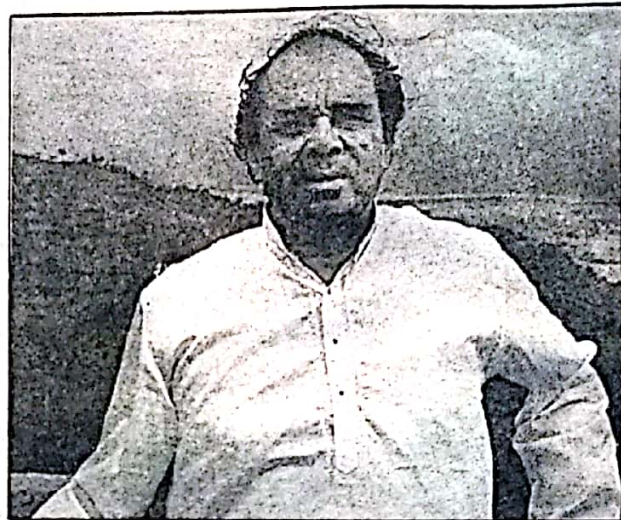
तंत्र के अद्वितीय आचार्य गुरुदेव

जैसा कि मैंने बताया कि तांत्रिक प्रभाव को दूर करना, विशेष विद्वान या जानकार से ही संभव है, सामान्य ज्योतिषी या तांत्रिक आपको झूठा आश्वासन दे सकता है, आपसे व्यर्थ में खर्च तो करवा सकता है, परन्तु उससे समस्या का समाधान नहीं हो सकता, क्योंकि यदि एक बार तांत्रिक प्रयोग हो जाता है तो उसे दूर करने के लिए यह जानना जरूरी होता है कि यह तांत्रिक प्रयोग किसने करवाया है, तंत्र की सैकड़ों विधाओं में से आप पर कौन सा तांत्रिक प्रयोग हुआ है और उस तांत्रिक प्रयोग का काट क्या है, किस विधि से या किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता है।

ऐसा ज्ञान प्रत्येक साधक या व्यक्ति के पास नहीं होता, पत्रिका आपके लिए सहायक है और उसका उद्देश्य है कि आपके जीवन में पूर्ण सुख हो, उसका लक्ष्य है कि आपके जीवन की बाधाएं दूर हों और आप निरन्तर उन्नति करें और इसके लिए आप पत्रिका के माध्यम से श्रेष्ठ कोटि के जानकार से इस संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके लिए 'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' ने अपने शिष्यों साधकों एवं पाठकों के लिए एक विशेष योजना तैयार की है।

विशेष तन्त्र-रक्षा कवच

हमारे समाज में हर दूसरा या तीसरा परिवार अपने शत्रु या स्वजनों द्वारा शत्रुतावश किये हुए या दूसरों से करवाये हुए तांत्रिक प्रयोग से अत्यन्त परेशान रहता है। ये तांत्रिक प्रयोग जिस पर किया जाता है, उस व्यक्ति का सर्वनाश सा हो जाता है, इसमें व्यापार बांधना,मानसिक डिप्रेशन, बुद्धि काम न करना, कमाई होते हुए भी पैसे उड़ जाना, बीमारी ग्रस्त होना, यहां तक की मारण प्रयोग से मृत्यु भी हो जाती है, आदमी जिन्दा लाश बनकर रह जाता है। इस तरह के सैंकड़ों पत्र कार्यालय में प्रतिदिन आते हैं एतदर्थ विशेष तांत्रिक पण्डितों ने करूणावश सर्वजन हिताय पूर्ण मंत्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठित सद्यः लाभप्रद "आजीवन तंत्र रक्षा-कवच" सुलभ किया है, जो अद्वितीय एवं दुर्लभ है। इसके धारण करने के कुछ समय बाद ही उसके अचूक प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित होने लगता है। यन्त्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित करके तैयार किया जायगा, उसी को ही इसके लाभ मिल सकेंगे। इस कवच को धारण करने वाले व्यक्ति पर संसार के किसी भी तांत्रिक या मान्त्रिक का तंत्र प्रयोग निष्प्रभावी रहेगा।

कवच धारक पर किसी तंत्र प्रयोग का कोई असर नहीं होगा, उल्टे प्रयोग कर्ता की स्थिति भयानक हो सकती है।

यदि किसी व्यक्ति पर कवच धारण से पूर्व ही किसी ने तंत्र प्रयोग करवा रखा हो तो, कवच धारण करने के एक महीने के भीतर-भीतर उस प्रयोग का दुष्प्रभाव समाप्त होने लग जायगा।

इस कवच को धारण करने वाला व्यक्ति आजीवन किसी भी प्रकार के तंत्र बाधा एवं भूतप्रेत आदि बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

इस दिव्यतम कवच का न्योछावर मात्र ११०००/-रूपये (ग्यारह हजार) है। यह कवच गुरूधाम में आकर प्राप्त कर सकते है या पत्र आने पर भिजवाया जा सकता है।

धनराशि अग्रिम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजे "ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो बर" "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से हो, जो जोधपुर में देय हो।

ड्राफ्ट इस पते पर भेजें

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन-०२९१-३२२०९

अथवा आप दिल्ली (३०६ कोहाट एन्क्लेव नई दिल्ली, टेली-७१८२२४८) आकर हाथों हाथ प्राप्त कर सकते है।

शिवरात्रि के अवसर पर एक दुर्लभ प्रयोग

नमः शिवाय

पंचाक्षर मंत्र

जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना

हमारे मंत्रों के अपार गणना क्रम में 'नमः शिवाय' मंत्र बहुत ही सीधा, सरल एवं सर्वगम्य कहा गया है। सही तो यह है कि जिस प्रकार देवाधिदेव महादेव, भगवान शंकर सौम्य तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाले औढरदानी है तत्सम्बन्धी यह मंत्र भी तेजस्वी एवं अत्यधिक प्रभावयुक्त क्रम में हमारे पूर्वज इस रहस्य को समझाने से इन्कार कर दिया इसलिए ये मंत्र और साधारण बोलचाल में आने वाले शब्दों में भेद नही कर पाये, इसी का परिणाम है कि इन मंत्रों के रहस्य से हम हीन होकर क्षीण हो गये। कुछ जो हमारे उदात्त ऋषि समुदाय हुए हैं अपने मंत्रमय स्वरूप को पहचान कर अद्वितीय कहे गये हैं वे सभी इस पंचाक्षर मंत्र की विशेषता से प्रभावित हैं।

यह पंचाक्षर मंत्र अल्पाक्षर होते हुए भी अपने गहनतम अर्थों को समाहित किये हुए है।

जो जन्म मृत्यु से रहित है जिसका कभी भी क्षय नहीं होता, सभी देव जिसे नमन करते हैं। गहनतम घ्यान में मग्न सभी पापों को हरण करने वाले, जिसे परे और कुछ भी नहीं है, सभी शास्त्रों का एक मात्र विषय, सर्व भूषण, नीलकण्ठ जो संर्वत्र व्याप्त है, जो सर्वगुरु है वह शिव है। पुराणों के अनुसार प्रणय-काल में वेदों एवं शास्त्रों की समस्त शक्ति इस पंचाक्षर मंत्र में समाहित होकर रहती है। पुनः सृष्टि-क्रम की दशा में 'नारायण' के नाभि-कमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने जब सृष्टि-रचना की, जिज्ञासावश भगवान नारायण से प्रार्थना की तो इस 'पंचाक्षर मंत्र' का उपदेश दिया गया, तथा भगवान ने इस मंत्र के विशेष रहस्यों से ब्रह्मा को अवगत कराया, फिर ब्रह्मा ने विशेष सिद्धि लाभ के लिए इसी मंत्र के द्वारा घोरतम तपस्या की, तथा सृष्टि निर्माण में समर्थ हुए, तदनन्तर अन्य ऋषिगण भी इस मंत्र की महत्ता को ब्रह्मा से प्राप्त करके प्रभावित हुए। इस पंचाक्षर मंत्र की सिद्धता के बाद और किसी मंत्र की या साधना की आवश्यकता शेष नही रह जाती, क्योंकि शिव ही साक्षात पारब्रह्म हैं, वही परमानंद हैं, वही ज्ञान स्वरूप है, भगवान शंकर को प्रसन्न करने का यह पंचाक्षर मंत्र उत्तम साधन बताया गया है। इस प्रकार गुरुदेव द्वारा प्रदत्त 'नमः शिवाय' इस पंचाक्षर मंत्र की साधना प्रत्येक मनुष्य को यथानुकूल करनी ही चाहिए।

इस साधना के लिए सवा लाख मंत्र जाप करना चाहिए। जब भी साधना करनी हो साधक प्रातः काल उठकर स्नानादि निन्यकर्मों से निवृत्त होकर सात्विक एवं श्रद्धामय होकर साधना कक्ष में प्रवेश करें तथा सफेद या पीले रंग की धोती पहनकर, पीले आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठ जावे। अपने सामने तांबे या स्टील की थाली में "ताम्र शिव पंचाक्षर यंत्र" स्थापित करें उस यन्त्र में गंगाजल या शुद्ध जल का छींट देकर किसी साफ वस्त्र से पोंछ दे, तथा बाद में कुंकम का तिलक लगाकर पुष्प चढ़ावे धूप, दीप दिखाकर मिठाई का भोग लगाना चाहिए। मंत्र पूजा के बाद विनियोग करे, दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ पढ़े बाद में इस जल को भूमिं पर छोड़ दे।

अस्य श्री शिव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि अनुष्टुप छन्दः श्री सदाशिव देवता "न" शक्तिम "म" कीलकम् "शिवाय" बीजम्, सदाशिव प्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

इसके बाद साधक करन्यास तथा हृदयादिन्यास करें।

करन्यास:-(न) अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(मः) तर्जनीभ्यां स्वाहा।

(शि) मध्यमाभ्यां वषट्।

'ॐ नमः शिवाय' अनादि शक्तये अस्त्राय फट्।

ध्यान:-कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारं।

सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

(वा) अनामिकाभ्यां हुं।

(य) कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

हृदशक्ति न्यास:

(न) हृदयाय नमः।

(मः) शिरसे स्वाहा।

(शि) शिखायै वषट्।

(वा) कवचाय हुं

(या) नेत्र त्रयाय वौषट्।

इसके बाद रुद्राक्ष या स्फटिक माला से जप प्रारम्भ करना चाहिए। सवा लाख मंत्र जप पूर्ण होने के बाद दशांश हवन करके साधना पूरी करें। इस साधना से साधक की सद्यः रोगनिवृत्ति, सौभाग्य की प्राप्ति तथा सुख एवं सम्पत्ति का लाभ होगा।

Scanned by CamScanner

गुरुधाम

३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली-३४

टेलीफोन-०११-७१८२२४८

इस मास का साधना क्रम

धूमावती सिद्धि साधना

४.२.९३ से १०.२.९३

ऐसे तो सभी महाविद्याओं की साधनाएं अपने आप में विशिष्ट एवं पूर्णता दिलाने वाली हैं, किन्तु धूमावती-साधना साधकों के लिए अति विशिष्ट मानी गई है, इस साधना के बाद अन्य साधनाएं गौण हो जाती हैं। इससे भुक्ति एवं मुक्ति दोनों की प्राप्ति संभव है।

यह साधना उग्र तो है किन्तु शीघ्र फलदायी है। जीवन के सभी रोग एवं शोक स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। इस साधना से बड़े से बड़े अदम्य शत्रु भी समाप्त हो जाते हैं तथा अन्य विघ्न बाधाएं दूर हो जाती हैं। भौतिक सुख समृद्धि एवं सौभाग्य प्राप्ति के बाद जीवन आनन्द और उत्साह से भरपूर रहता है।

गुरु प्राण-स्थापना

११.२.९३ से १७.२.९३

साधना अपने भीतर गुरु प्राण स्थापना ही समस्त सिद्धियों का आधार है। शिष्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए एकमात्र गुरु ही सक्षम है। अन्य देवी तथा देवता सांसारिक वैभव या अलौकिक सिद्धियां तो दे सकते हैं पर परमात्म-बोध की प्रक्रिया केवल सद्‌गुरु से ही शुरु होती है।

गुरु तत्व को अपने हृदय में समाहित करके जीवन का लक्ष्य और प्रयोजन प्राप्त किया जा सकता है। तथा गुरु के प्रसन्न होते ही समस्त देव स्वतः प्रसन्न हो जाते हैं, क्योंकि गुरु सर्वदेवमय हैं।

शिव स्वर्ण खप्पर साधना

१८.२.९३ से २४.२.९३

महा शिव रात्रि का पर्व तो महत्वपूर्ण होता ही है, यदि उस दिन कोई विशेष साधना सम्पन्न की जाय तो वह साधना निश्चित ही सिद्धि दायक होती ही है।

जीवन में धन एवं आयु की प्राप्ति के लिए इस साधना की प्रत्येक को उपादेयता होती है, यदि किसी के पास धन बहुत है, उसके उपयोग के लिए आयु पर्याप्त नहीं है तो धन व्यर्थ है, और आयु लम्बी होते हुए भी यदि दरिद्रता है तो जीवन अभिशाप बन जाता है, अतः हमारे सुखी एवं स्वस्थ जीवन के लिए इन साधनाओं की नितान्त आवश्यकता बनी रहती है। इस साधना से प्रसन्न होकर इस दिन भगवान भूतभावन साधकों को धन एवं आयु तो देते ही हैं। परन्तु साधक की अन्य कामनाएं भी स्वतः फलीभूत हो जाती हैं।

वसन्त कामदेव साधना

२५.२.९३ से ३.३.९३

संसार में प्रत्येक पुरुष एवं नारी यौवन को अपने जीवन काल में चिरस्थायी करने की कोशिश में रत हैं, लेकिन लाख उपाय करके भी ये संभव नहीं हो पाता। क्योंकि प्राणि मात्र का शरीर कुमार, यौवन, जरा एवं मृत्यु इन चार अवस्था को प्रकृति के नियमानुसार प्राप्त करता रहता है। और प्रकृति के नियम भौतिक साधनों से तोड़े नहीं जा सकते, इन नियमों को तो योग या साधना के माध्यम से ही तोड़ा जा सकता है, और इसके लिए विविध साधनाओं में "वसन्त कामदेव" साधना सरल होने के साथ शीघ्र फलदायी है। गुरु चरणों में बैठकर ऐसी जीवन के लिए आवश्यक साधना करना अपने आप में सौभाग्य की बात होती है।

जीवन संवारना है

तो

पूर्व जन्म में झांककर देखें

क्योंकि इस जीवन का संबंध पिछले जीवन से है ही, पिछले जीवन को जानेंगे, तभी तो इस जीवन को पहिचाना जायगा......

और इस लेख से आप यह सब कुछ जान जाएंगे।

आपका यह जीवन पुनर्जन्म से जुड़ा है। पूर्व जन्म में आप क्या थे? कहां थे? आपने वहां कौन से कर्म किए? इसको जानने की इच्छा तो अवश्य होती है. इन प्रश्नों पर विश्व के समाज शास्त्रियों, शोध कर्ताओं ने अनुसंधान किए है, और कर रहे हैं, इन का परिणाम बड़ा ही रोचक और विस्मयकारक रहा है-

पुनर्जन्म की घटनाओं के संबंध में यदाकदा पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते हैं कि अमुक बालक ने चार साल की उम्र में ही अपने पूर्व जीवन के बारे में बताया, वहां जाकर सत्यापन करने पर वह घटना सत्य सिद्ध हुई, ये घटनाएं कोई अपवाद नहीं है, जहां ईसाई सिद्धान्त तथा मुस्लिम मत के अनुसार केवल वर्तमान जीवन ही आवश्यक जीवन है, उसका न तो जन्म से पहले किसी से कोई संबंध रहता है, और न ही जन्म से आगे कोई संबंध रहता हैं, लेकिन जब पूर्व जन्म की घटनाओं के संबंध में यूरोप में अफ्रीका एशिया अमेरिका और सब जगह ऐसी घटनाएं हुई जिसमें बालकों ने, जिनकी बुद्धि का विकास पूर्ण नही हुआ था, अर्थात जिनकी उम्र दो साल से आठ साल के बीच में थी, उन्होंने अपने वर्तमान स्थान से हजारों मील दूर की जो घटनाएं बताई, उन्हें सत्यापित किया गया, तब जाकर समाज शास्त्रियों और वैज्ञानिकों ने अनुसंधान प्रारम्भ किये।

"कार्लइडन" का उदाहरण विशेष विस्मयकारी है वह बचपन में अपने माता-पिता के साथ मिडिसब्रो में रहता था और उसकी मां बताती है कि बोलना सीखते ही वह बताने लगा कि उसका विमान एक इमारत की खिड़की से जा टकराया था।

शुरू-शुरू में माता-पिता ने बच्चे की कल्पना समझी, लेकिन जल्दी ही वह केवल तीन साल की उम्र में ही जर्मन बिल्ले (वायु सैनिकों का निशान) बनाने लगा, मां द्वारा पूछने पर बताया कि हवाई जहाज उड़ाते समय ऐसे ही बिल्ले वर्दी पर होते थे।

और तो और, उसने बाद में अपने विमान के कॉकपिट का नक्शा बनाया, कौन सा नियंन्त्रण बटन, लीवर कहां होता है, और किस काम आता है सब समझाने लगा, तब उसके माता-पिता को अचरज हुआ।

क्योंकि उसकी नर्सरी की किताबों में हवाई जहाज के चित्र थे, और कॉपपिट अन्दर से तो क्या बाहर से भी उसने देखा नहीं था।

कार्लइडन १९ साल की उम्र में वायु सेना में भर्ती हुआ, और प्रशिक्षण के लिये उसे एक बड़े वायु सैनिक प्रतिष्ठान में प्रविष्ट किया गया। यह वहीं स्थान था जहां उसने पूर्व जन्म में अपने जीवन की अंतिम उड़ान भरी थी उसने बताया

कि जब मैंने अंतिम उड़ान भरी तो मुझे लगा कि इमारत मेरी ओर लपकी चली आ रही है, मैं खिड़की से जा टकराया और देखा कि मेरी टांग मेरी देह से अलग पड़ी हैं, उस जन्म में उस समय कार्ल केवल २३ वर्ष का ही था।

स्मृति बचपन में ज्यादा तीव्र थी, तीन साल की उम्र में यदि लखनऊ में जन्म लेने वाला बच्चा ठेठ बिहार की भोजपुरी बोली बोले और कुछ विशेष घटनाओं का विवरण करें तो क्या आपको आश्चर्य नहीं होगा।
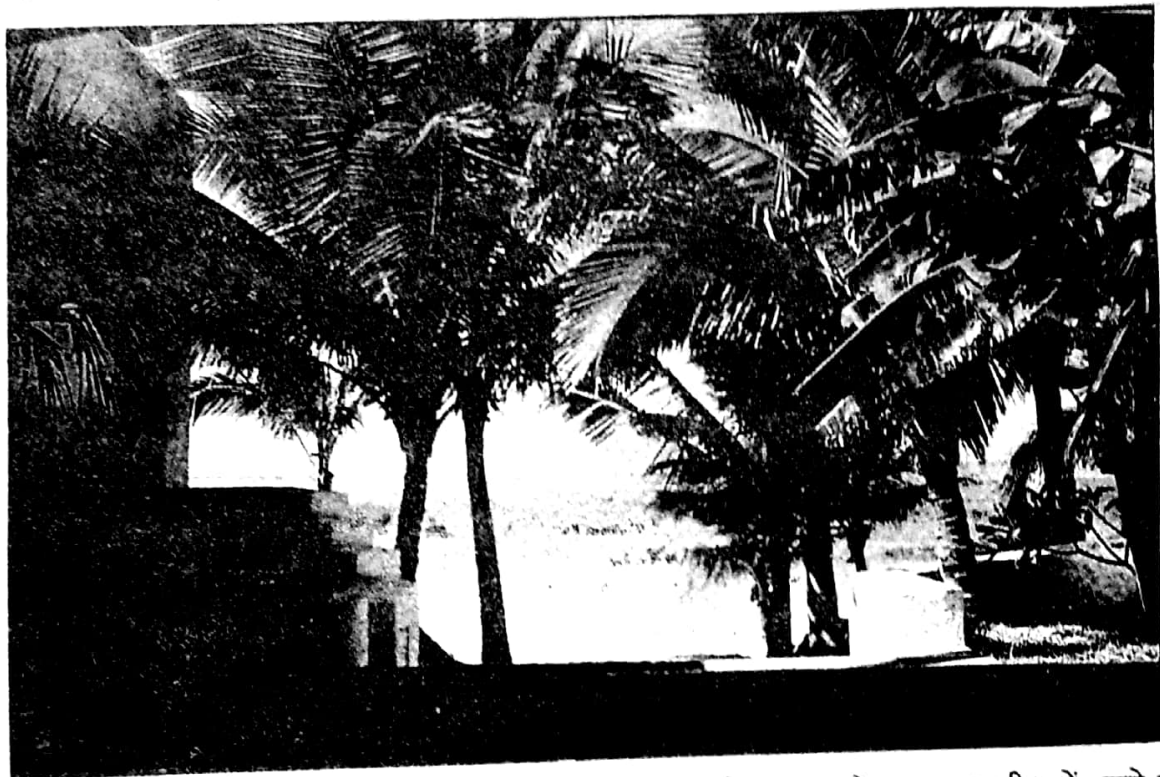
इसके अलावा कई बच्चे अपने बारे में ऐसी घटनाएं बताते है जो कि सीधी ऐतिहासिक पुस्तकों से लिखी हुई प्रतीत होती है, जैसे लीवर पुल के गैल गुडवर्ड पांच साल की उम्र में ही राजा-रानियों की घटना और उसमें खुद रानी रूप में बताते हुए उस समय का पहनावा और अपनी सम्पूर्ण वेष-भूषा का सविस्तार वर्णन करती थी, जांच करने पर पाया गया कि वास्तव में १८ वीं सदी में प्रतिष्ठित वर्ग की महिलाएं ऐसी ही वेषभूषाएं पहनती थी, उनके नौकर-चाकर छोटे से काले हेट लगाते थे, आया इत्यादि का विवरण बिल्कुल सही निकला, तो क्या १८ वीं सदी के बाद गैल का जन्म सीधा २० वीं सदी में ही हुआ, तो वह बीच के सौ डेढ़ सौ वर्षों तक कहां रही?

भारतीय समाचार पत्रों में भी ऐसी घटनाओं के बारे में छपता है, और आम लोग इसे एक घटना समझते हुए थोड़ा आश्चर्य करते हुए पढ़कर निकाल देते हैं, यहां यह महत्वपूर्ण है कि जिन्हें भी अपने पूर्व जन्म की घटनाएं याद थी उसकी

कई मां- बाप तो इस प्रकार की बातें अपने बच्चों में पाने पर छुपा देते है कि कहीं ऐसा न हो कि इसे समाज द्वारा पागल कह दिया जाय, अथवा कहीं बच्चे का रुझान अपने पूर्व जीवन के सदस्यों के प्रति बढ़ जाय, ज्यादातर ऐसी घटनाओं में जैसे जैसे बच्चा बड़ा होता है वह इन घटनाओं को भूलने लगता है, और धीरे-धीरे वर्तमान जीवन में ही पूरी तरह से रम जाता है।

पूर्व जन्म की घटनाओं की स्मृतियों के संबंध में मैंने हजारों उदाहरणों के अध्ययन किये हैं, और उन सबसे एक बात विशेष रूप से स्पष्ट हुई है कि जिस बच्चे को अपने पूर्व जन्म की घटना याद थी, उसकी अपने पूर्व जन्म में स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई थी, कहीं एक्सीडेन्ट से, कहीं सांप कांटने से कहीं हत्या द्वारा तो कहीं किन्ही अन्य विशेष कारण से उसकी अकाल मृत्यु हुई थी, इससे क्या निष्कर्ष निकलता हैं, क्या यह आत्मा के अतृप्त रहने के भारतीय सिद्धान्त का स्पष्ट स्वरूप नहीं है?

पूर्व जन्म

यह भारतीय सिद्धान्त एक ठोस नियम के रूप में प्रमाणित हो चुका है कि आत्मा ही अजर अमर है, मनुष्य एक जीवन से दूसरे जीवन में प्रवेश करता है ये संबंध स्थूल और महत्वहीन होते हैं। हमारे जीवन के संबंध पूर्व जन्मों से ही जुड़े होते है, यह अलग बात है कि मृत्यु को प्राप्त हो कर हम दूसरा शरीर धारण कर लें , परन्तु इससे आत्मा नहीं बदली जाती, आत्मा के संबंध तो ज्यों के त्यों ही रहते हैं।

इसीलिए इस जन्म में भी हम किसी और को मन ही मन बहुत ज्यादा चाहने लगते हैं, केवल दो या तीन दिन के परिचय से ही ऐसा लगने लगता है, कि जैसे हम कई वर्षो से परिचित हो, उससे बातचीत करने में आनन्द की अनुभूति होने लगती है।

हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पूर्ण रूप से माना गया है इसलिए न तो हमने इस संबंध में कोई ठोस अनुसंधान करने की आवश्यकता ही समझी और न ही समाज शास्त्री, वैज्ञानिकों द्वारा कोई कार्य किया गया, शासन की ओर से भी प्रयास नहीं हुए।

इंग्लैण्ड, अमेरिका में जहां ईसाई धर्म विशेष रूप से अभी भी पूरे उत्साह से साथ माना जाता है, और दोनों को ही दिशा निर्देश देने वाला मूल ग्रन्थ बाइबिल है, उसमें भी ईसा मसीह ने पूर्व जन्म का या पुनर्जन्म का कोई उल्लेख नहीं किया तो ईसाई धर्म वालों ने इसे मानना बंद कर दिया, लेकिन जब बार-बार ऐसी घटनाएं घटी तो उन्होंने विशेष शोध कार्य प्रारम्भ किया, इस संबध में आजकल पश्चिम में तीन पुस्तकों की बड़ी ही धूम है। तीनों ही लेखक समाज शास्त्री थे और अपने क्षेत्र में बड़े ही प्रतिष्ठित एवं विद्वान गिने जाते है।

(१) लाइफ बिफोर लाइफ-डॉ. हलन बबास

(२) लाइफ बिफोर बर्थ-डॉ. पोटर एवं मेरीहेरिसन

(३) लाइफ आफटर लाइफ-डॉ. रेमन्ड एमुडी

इन तीनों पुस्तकों के लेखकों ने अलग-अलग उदाहरण लिये और अलग-अलग तरीके से अनुसंधान किये। प्रथम पुस्तक लाइफ बिफोर लाईफ की लेखिका स्वयं बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक थी, और सम्मोहन की अद्‌भुत जानकार थी। उसने मनो चिकित्सा का व्यवसाय छोड़कर एक अनुसंधान प्रारम्भ किया, उसने ७५० व्यक्तियों को सम्मोहित किया, सबसे पहले यह प्रयोग ५४ व्यक्तियों से प्रारम्भ किया। उसने शिकागो के एक मोटल के हॉल में सभी ५४ व्यक्तियों को सुला दिया, तथा सम्मोहन करना प्रारम्भ किया, सम्मोहन की प्रथम स्टेज से दूसरे स्टेज में और दूसरे स्टेज से जब तीसरे स्टेज में व्यक्ति पहुंच जाता है तो वह एक योग निद्रा की स्थिति में पहुंचता है, और इस योग निद्रा के दौरान शरीर शान्त रहता है, मस्तिष्क वर्तमान जीवन से कट जाता है, और अन्तर्दृष्टि जाग उठती हैं। डॉ. हेलन ने सबसे पहले उनसे गर्भावस्था से संबंधित प्रश्न पूछे तो सभी ने अपनी गर्भावस्था का अलग-अलग विवरण दिया, सभी की सत्यता को जांचा गया, जो व्यक्ति ऑपरेशन द्वारा पैदा हुए थे कुछ सामान्य रूप से और सभी ने उस पीड़ा का वर्णन हू-बहू दोहराया।
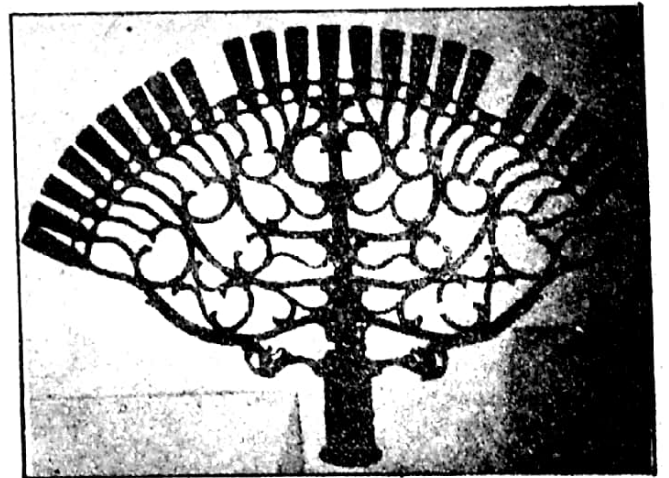
आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सम्मोहन का यह स्वरूप तिब्बती मंत्र "ॐ मणिपद्‌मे हुं" का ही रूपान्तरण हैं। भारतीय कुण्डलिनी योग में भी यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार सूर्य ब्रह्माण्ड की शक्ति को संचालित करता है, उसमें सामंजस्य स्थापित करता है उसी प्रकार मनुष्य के भीतर स्थित

कुण्डलिनी चक्र का सबसे उच्च स्तर आज्ञा चक्र शरीर और मस्तिष्क को नियंत्रित करता है, शक्ति प्रदान करता है।

डॉ० हेलन का दूसरा प्रयोग एक एक करके चार हजार व्यक्तियों पर किया उनमें से ७५० ने लिखित उत्तर दिया, उन्हें सम्मोहन की इस तीसरी स्टेज में गुजार कर अनुभवों के बारे में पूछा तो पहले व्यक्ति का उत्तर दूसरे अलग था।

एक ने कहा कि मैंने दुबारा जन्म लेने का निर्णय इसलिये किया कि मैं अपने पिछले जीवन के अधूरे कार्यो को पूरा करना चाहती थी, और यह कार्य नया जन्म लेकर ही संभव था।

एक ने कहा कि मेरे सामने अनेक भ्रूण में से किसी एक का चुनाव करना था, और मैं उन सबको जानता था। मैं अपनी होने वाली नई मां के बारे में चिन्तित था, एक ने कहा कि मैने दुबारा जन्म लेने का निर्णय बहुत ही सोच समझ कर किया, मुझे प्रकाश किरणों द्वारा नया जन्म लेने के निर्देश मिल रहे थे, लेकिन मैं जिस भ्रूण में प्रवेश चाहता था जिसकी मां अभी तैयार नहीं, लेकिन मुझे निर्देश मिला कि तुम्हें इतनी कर्म यात्राएं पूरी करनी हैं, समय कम है, इसलिये मैने निर्णय लिया।

इन ७५० व्यक्तियों के उदाहरण इस बात को ठोस सत्य के रूप में स्थापित करते है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक पुनर्जन्म होता है और उसे विशेष निर्देश मिलते है, उसी के अनुसार वह नये जीवन में प्रवेश करता है और यदि व्यक्ति अपनी **कुण्डलिनी शक्ति सम्मोहन साधना** जिसमें व्यक्ति स्वयं को आत्म सम्मोहित कर सकता है, के द्वारा उस जीवन में जा सकता है, जिसकी यात्रा संपन्न कर वह इस जीवन में आया हैं।

जीवन के अनजाने रहस्य खोलने के लिये साधना तो करनी ही पड़ती है, और इस साधना में व्यक्ति सबसे पहले अपने आपको सम्मोहित करने का प्रयास करता है, अर्थात शांत भाव से बैठकर मस्तिष्क को एकाग्र कर ऐसे बिन्दु पर पहुंचे जहां केवल मस्तिष्क का "अचेतन भाग" जाग्रत हो जाय, क्योंकि इस अचेतन मस्तिष्क में ही सब कुछ अंकित होकर रखी है,जीवन की गाथा।

जीवन की अज्ञात गुत्थियों को सुलझाने का सबसे सरल, पूर्णत: प्रामाणिक एवं सरल उपाय **"साधना"** ही हैं।

इस साधना में सर्व प्रथम शांत भाव से बैठकर मस्तिष्क को एकग्र करें क्योंकि अवचेतन मस्तिष्क में ही पूर्व जीवन की की गाथाओं का लेखा जोखा अंकित रहता हैं।

साधना

भारतीय विद्वानों ने "यमोपनिषद" में संजीवनी यंत्र का वर्णन किया है, जिसके द्वारा साधक यह जान लेता है कि उसकी पत्नी कौन थी? पिछले जीवन के उसके साथ संबंध कैसे थे? और यह कि इस सन्तान ने मेरे घर में किस उद्देश्य से जन्म लिया है? अपनी पत्नी-पुत्री इन सभी के बारे में उनके पूर्व जन्म को और उनके साथ हमारे संबंधों की सही सही जानकारी इस साधना के द्वारा मिल सकती है, इसलिये इस साधना का विशेष महत्व हैं। जीवन को पूरी तरह से समझने के लिये और जीवन की घटनाओं

सुख,दु:ख बाधाएं परेशानियां और सभी प्रकार के क्रिया कलापों को समझने के लिये यह साधना सर्वाधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध करनी ही चाहिये तभी वह अपने जीवन को और अपने पारिवारिक जीवन को भली प्रकार से समझ सकेगा। यह प्रयोग कभी भी किया जा सकता है।

विनियोग

अस्य संजीवनी मंत्रस्य मतंग ऋषि अनुष्टुप छन्द, मातंगी देवता सर्व पूर्व जीवन दर्शन सिद्यर्थ जपे विनियोग: ।

ऋष्यादिन्यास-

ॐ मतंग ऋषये नम: शिरसि। अनुष्टुप छन्दसे नम: मुखे।

मातंगी देवतायै नम: हृदये। ह्रीं नम: नाभौ विनियोगाय नम: संर्वांगे।

करन्यास

ॐ ह्रीं ऐं हृदयअंगुष्ठाभ्यां नम: (२) नमो भगवति तर्जनीभ्यां नम:(३)उच्छिष्टचांडालि मध्यमाभ्यां नम: (४)श्रीमातंगेश्वरी अनामिकाभ्यां नम: (५) पूर्व जीवन दर्शय कनिष्ठिकाभ्यां नम: (६) स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नम:

हृदया दिन्यास

ॐ ह्रीं ऐं श्री हृदयाय नम: (२) नमो भगवति शिरसे स्वाहा(३) उच्छिष्टचांडलि शिखायै वषट (४)श्रीमातंगेश्वरी कवचाय हुं (५)पूर्व जीवन दर्शय नेत्रत्रयाय वौषट (६) स्वाहा अस्त्राय फट्।।

साधक पहले दिन स्नान कर शुद्ध रक्त (लाल वस्त्र) पहन कर दक्षिण की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाएं। सामने तेल का दीपक लगा लें और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त मातंगी यंत्र एवं मातंगी चित्र स्थापित कर दें, फिर संजीवनी माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चांडालि श्री मातंगेश्वरि पूर्वजीवन दर्शय स्वाहा।।

कुल पांच लाख मंत्र जप ३१ दिन में होने आवश्यक हैं। पूरे साधना काल में एक समय भोजन करें, धरती पर शयन करें तथा ब्रहमचर्य का पालन करें।

मंत्र जप समाप्त होने पर २१०० गुलाब के पुष्पों से इसी मंत्र के द्वारा आहुति दे, और ११ कन्याओं को भोजन कराकर यथोचित वस्त्र आदि दें।

संजीवनी साधना एक ऐसे जीवन दर्शन की साधना है जिससे साधक की एकाग्र शक्ति और आत्म नियंत्रण शक्ति का विकास होता है, और उसका सीधा प्रभाव उसकी कुण्डलिनी पर पड़ता है, इसके द्वारा कुण्डलिनी के सहस्त्रदल कमल प्रस्फुटित होते हैं तो वह देख सकता है कि अपने पूर्व जन्म में वह क्यॆा था, उसके वर्तमान जीवन के सहयोगियों से पूर्व जन्म में क्या संबंध थे? और इसके पूर्व के किन-किन क्रिया कलापों का प्रभाव इस जन्म पर पड़ा, और इस जन्म में किन कार्यो को महत्व देना हैं? सारांश यह कि मात्र इस एक साधना द्वारा वह पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकता है।

संबंधित सूचना

r — त्रेका की सदस्यता या आजीवन सदस्यता अथवा अनुष्ठान के लिये संबंधित धनराशि आप सीधे ही बैंक ड्राफ्ट से (किसी भी बैंक में ड्राफ्ट बना हो, और जो जोधपुर में देय हो) जोधपुर केन्द्रीय कार्यालय (मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ राजस्थान) के पते पर भेजें।

rr — किसी व्यक्ति या शिष्य को (चाहे वह कितना ही पुराना या नजदीक हो) को हमने अधिकृत नहीं किया है, अत: उन्हें संबंधित धनराशि देने पर केंद्रीय कार्यालय संबंधित कार्य के लिये जिम्मेवार नहीं होगा।

rrr — चेक स्वीकार्य नहीं होगा।

तांत्रिक सिद्धियों का समग्र रूप

होली पर्व

अचरज भरे, आश्चर्य जनक दिन, जब योगी साधु, सन्यासी, साधक और गृहस्थ साधनाएं संपन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं.....

एक अद्वितीय अनुष्ठानिक पर्व

होली को मस्ती, उमंग, जोश के पर्व के रूप में एक सामाजिक आवरण पहना दिया गया है, जिस अवसर पर व्यक्ति सब कुछ भूलकर एक जोश में खो जाय, चिन्ताओं से मुक्त हो एक स्वतंत्र रूप में अपने हृदय के भीतर मुक्ति अनुभव कर सके, लेकिन इसके पीछे तांत्रोक्त रूप में बहुत बड़ी महिमा छिपी है।

वर्तमान समय में यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य होता है कि होलिका दहन को और होली पर्व को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना कि दूसरे दिन रंग से होली को अश्लील वचन बोलने सड़कों पर शराब पीकर गिरना, और थोड़े पढ़े लिखे लोगों द्वारा शराब पार्टियों का आयोजन करना बालकों को होली पर सिखा रहे हैं, क्या यही होली का तात्पर्य है कि नंगे होकर नाचें, भद्दे अश्लील मजाक करें, यह तो होली का बड़ा ही विकृत स्वरूप है, जो कि वास्तविक रूप का बिल्कुल उल्टा और सत्य से परे है।

होली पर्व को उतनी ही मान्यता प्राप्त है जितनी दीपावली पर्व को है, और वास्तव में दीपावली का नववर्ष के रूप में लक्ष्मी पूजा साधना के रूप में महत्व हैं, उतना ही तांत्रोक्त दृष्टि से होली का महत्व है।

होली पर्व का वास्तविक रूप से प्रारम्भ होलाष्टक से हो जाता है। इस वर्ष यह फाल्गुन शुक्ल अष्टमी मंगलवार दिनांक २-३-९३ से प्रारम्भ हो रहा है, और होली पर्व की पूर्णता फाल्गुन पूर्णिमा सोमवार दिनांक ८-३-९३ को हो जाती है। साधनात्मक दृष्टि से उपरोक्त दिन ३-३-९३ से ८-३-९३ तक महत्वपूर्ण हैं।

होलाष्टक २-३-९३ से प्रारम्भ होकर ८-३-९३ तक अर्थात् फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक है। इस वर्ष ज्योतिष की दृष्टि से विशेष योग बन रहा हैं। प्रथम तो सबसे महत्वपूर्ण यह है कि फाल्गुन पूर्णिमा को सभी ग्रह १५ अंश से ऊपर अपनी राशि में भ्रमण कर रहे हैं,

बुध वक्री है तथा पांच मार्च से शनि कुंभ संक्रांति में प्रवेश कर रहा है। ४ मार्च को गुरु पुष्य अमृत सिद्धि योग बन रहा है, और तो और होलाष्टक के प्रथम दिवस अन्नपूर्णा अष्टमी है, तथा ६ मार्च को शनिवार प्रदोष है।

इस बार होली का दहन ७ मार्च को रविवार को है और दहन का समय भद्रा पुच्छ में रात्रि २.४४ बजे तक है।

भद्रायुक्त इस पर्व के कारण अगला वर्ष सभी राशियों के लिए थोड़ा भारी अवश्य पड़ेगा। ८ मार्च को पूर्णिमा है वास्तव में पूर्णिमा ७ मार्च को सायंकाल ही प्रारंभ हो जायेगी। ग्रह योग में विशेष कन्या राशि के चन्द्र और गुरु एकत्र रहकर नतमस्तक उच्चस्थ शुक्र पर पूर्ण दृष्टि दे रहे हैं।

इन्हीं कारणों से ये सात दिवस तांत्रिक-मांत्रिक कार्यों के लिए पूर्ण सफलताकारक योग बना रहे हैं।

आपने शहरों में और गांवों में होली के अवसर पर किये जाने वाले कुछ कार्यों को ध्यान से देखा होगा, अब तो दोपहर को प्रह्लाद के रूप में होली का डंडा खड़ा करते हैं, और उसके चारों ओर घास-फूस पुराना कचरा कुछ कांटे इत्यादि डालकर एक होलिका बना देते हैं, और शाम को दहन कर देते हैं, जो कि शास्त्रोक्त रीति से बिल्कुल गलत है।

जिस दिन होलकाष्टक प्रारंभ होता है वह दिन अष्टमी होती है, और उस दिन गांवों में एक प्रमुख स्थान पर एक बड़ा डंडा जमीन में रोपा जाता है, फिर सब गांव वाले अपने-अपने हिसाब से होली में दहन के लिए गोबर की बनी सामग्री, उपले इत्यादि उसके चारों ओर डालते हैं, धीरे-धीरे एक बड़ा ढेर बन जाता है, तब तक इसे कोई छेड़ नहीं सकता।

हमारे यहां ऐसी मान्यता है कि होलिकाष्टक से होली तक का समय एक विशेष तांत्रिक समय है उस समय किसी बड़ी नवीन वस्तु का क्रय करना, नया वाहन लेना, नये मकान की पूजा, गृह प्रवेश, विवाह आदि वर्जित है।

होलिका दहन से पहले स्त्रियां पूरी श्रद्धा से पूजा करती हैं, और पूजन सामग्री का कुछ अंश होलिका को अर्पण करती हैं। उसी समय नवजात शिशुओं, जो कि पिछली होली के बाद से अब तक जन्म लेते हैं, उन्हें तिलक किया जाता है, और होलिका दहन के पश्चात् उसके चारों ओर सात परिक्रमा दी जाती है, क्योंकि इससे नवजात शिशुओं के रोग समाप्त हो जाते हैं, और विशेष काल के प्रभाव से बालक भूत-प्रेत

बाधा से मुक्त हो जाता है, उस पर किसी की नजर नहीं लग सकती, यह सिद्ध तथ्य है।

होलिका अग्नि पर्व है क्योंकि हम उस अग्नि की पूजा करते हैं, जिससे साधना के बल पर होलिका देवी भक्त प्रह्लाद को अपने गोद में लेकर बैठी, लेकिन अग्नि ने उन्हें अपने प्रभाव से मुक्त रखा, यह साधना, तपस्या और प्रभु कृपा का फल है।

जो अग्नि पूजक तांत्रिक होते हैं उनके कई उदाहरण मैंने देखे हैं, कि वे जलते हुए अंगारों पर इस प्रकार चलते हैं मानों सामान्य जमीन पर चल रहे हों।

होलिका दहन के समय जो चारों ओर खड़े रहकर उसकी पूजा करते हैं, उन्हें उस विशिष्ट अग्नि के ताप से शक्ति प्राप्त होती है, जिससे उनके जीवन के दोष शांत होते हैं, आवश्यकता है मन में सच्ची श्रद्धा और विश्वास की। जब होलिका दहन प्रचंड रूप में होती है तो उसकी हवा का रुख धुएं का स्वरूप देखकर आज भी बड़े-बूढ़े बता देते हैं कि आने वाला वर्ष कैसा रहेगा, क्या अकाल की स्थिति पड़ेगी, अथवा महामारी फैलेगी, अथवा फसल बहुत अच्छी होगी। इनका ज्ञान उसी समय हो जाता है।

होलिका दहन के समय जिस ओर धुआं जाता है उस ओर खड़े नहीं रहना चाहिए वह एक विषाक्त वायु होती है, जिसे अपने भीतर से प्रवाहित कर देती है।

ये सब तो होली के सम्बंध में तथ्य हैं जिन्हें हम अपने बचपन से देखते आ रहे हैं, लेकिन ध्यान नहीं देते, क्योंकि हमारा ध्यान तो अगले दिन की रंगीन होली की ओर ज्यादा रहता है, जबकि वास्तविक रूप से होली के सात दिन होलाष्टक से होली पूर्णिमा तक सबसे महत्वपूर्ण दिवस है, और इन सात दिवसों में जो भी तंत्र प्रयोग किया जाय वह सफल होता है, इसलिए तांत्रिक लोग प्रतिवर्ष इस समय का बड़ा इन्तजार करते हैं, अघोर पंथ, नाथ सम्प्रदाय, औघड़ सम्प्रदाय, नागा सम्प्रदाय सभी इन सात दिनों में विशेष साधनात्मक क्रियाएं संपन्न करते हैं।

इस अवसर पर आप भी कुछ कीजिए, साधना के द्वार हर उस व्यक्ति के लिए खुले हैं जो कि जीवन में आस्था रखता है, अपने ऋषि मुनियों द्वारा लिखे गये मंत्रों को मानता हैं, और जीवन में कुछ करना चाहता है, केवल भौतिकवादी जीवन से फल प्राप्ति नहीं हो सकती, क्षणिक सुख तो मिल सकता है, लेकिन भीतर ही भीतर सब कुछ खाली रहता है।

आगे होली के अवसर पर किये जाने वाले दो विशेष मंत्र प्रयोग दिये जा रहे हैं, इन दोनों को साधक अपनी इच्छा के अनुसार अपने कार्य के अनुसार, उद्देश्य के अनुसार संपन्न कर सकते हैं।

इन दोनों साधनाओं में तंत्र शक्ति के पूर्ण रूप काली, तथा दूसरे में भैरव और नरसिंह की साधना की जाती है जो कि तांत्रिक दृष्टि से आवश्यक है।

(१) महाविजय सुन्दरी साधना प्रयोग

यह मूल रूप से काली तंत्र की साधना है, और इसे होलाष्टक संपन्न किया जाता हैं। रात्रि को साधक इस साधना को प्रारम्भ करें और पूरी रात्रि इसे संपन्न करके ही उठे। अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र पर सबसे ऊपर "क्लीं" उसके ठीक नीचे "ह्रीं" उसके नीचे "ऐं" तीनों महाशक्तियों के बीज मंत्र चांदी की सलाका से कुंकुम या केशर से लिखें। अब अपने सामने तीन चावलों की ढेरियां बनाकर उस पर तीन दीपक रख दें, जिसका मुंह साधक की ओर हों। दीपक पूरे समय अवश्य जलते रहने चाहिए, फिर एक तांबे का पात्र अपने सामने रखें और उसमें भी कुंकुम या केशर से तीनों बीज मंत्र लिखकर तांत्रोक्त रूप में प्राण प्रतिष्ठायुक्त किये हुए "महाविजय सुन्दरी महायंत्र" स्थापित करें, यंत्र निर्माण श्रेष्ठ मुहूर्त में तीनों महाशक्तियों की सर्वांग पूजन प्राण प्रतिष्ठा, प्राण हृदय, और प्राणश्चेतना क्रिया से संपन्न किया होना चाहिए।

अब यंत्र का पूजन केशर की बिन्दी लगाकर अक्षत और पुष्प समर्पण से करना है। इसके पश्चात् साधक शांत अवस्था में बैठकर उस यंत्र पर पहले से ही मंगा करके रखे हुए मात्र नौ पुष्प समर्पित करें, समर्पित करते समय निम्न मंत्र उच्चारण करें। प्रथम तीन पुष्प समर्पण मंत्र ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रियै नमः।

द्वितीय तीन पुष्प समर्पण मंत्र-ॐ हं खं रं यं फां श्रीं भूं भैं कत्यै नमः।

तृतीय तीन पुष्प समर्पण मंत्र-ॐ नित्यायै जं भं मं वं सं वरदायै सरस्वत्यै नमः।।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक मूंगे की माला से निम्न दुर्लभ महाविजय सुन्दरी स्तोत्र मंत्र का १०८ बार उच्चारण करें।

दुर्लभ महाविजय सुन्दरी स्तोत्र

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णु-वल्लभायै महाकामायै कं खं गं घं ङं नमस्ते नमस्ते। मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष धनं धान्यं श्रियं समृद्धिं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।।

हं हं हं हंस हंसी स्मित कह-कहा मुक्त घोराट्ट हासा। खं खं खं खंगं हस्ते त्रिभुवन निलये कालिका कालधारी।।

रं रं रं रंग-रंगी प्रमुदित वदने पिंग केशी श्मशाने यं रं।
लं घं तापनीये भ्रकुटि घट घटाटोप कंकार जं पे।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै।।
वात्सल्य निधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष श्रियं नमः प्रतिष्ठां।
वाक् सिद्धिं मे देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।।

मूंगा माला से इस दुर्लभ स्तोत्र का रात्रि में १०८ बार पाठ करना है, और उसी से इस साधना की पूर्णता होती है।

(२) नृसिंह साधना

यह साधना एक विशेष प्रकार की तांत्रिक साधना है, जिसका विधान होलाष्टक में ही संपन्न करने का है, यह साधना रात्रि को सूर्यास्त के पश्चात् तथा सूर्योदय से पहले संपन्न की जानी आवश्यक है, यह साधना सर्व सिद्धिदायक साधना तो है ही, इसके साथ ही भैरव की भी साधना है, किसी प्रकार की शत्रु बाधा हो, शारीरिक पीड़ा हो, भूत-प्रेत भय हो, तो यह साधना अवश्य संपन्न करनी चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, अपने दोनों ओर तेल के दीपक जलाएं, सामने गोल वृत्ताकार रूप में चावल की आठ ढेरियां बनाएं और उस पर "आठ सिद्धिफल" स्थापित कर कुंकुम, केशर द्वारा नृसिंह की आठ शक्तियां- भास्वती, भास्करी, चिन्ता, धुति, उन्मीलनी, रमा, कांति एवं रुचि का ध्यान करें, प्रत्येक पर पुष्प अर्पित करें, इसके साथ एक अलग कोने में तिल की ढेरी बना कर उस पर एक बड़ी सुपारी रखकर भैरव का ध्यान कर पूजन करे।

जहां नृसिंह की पूजा होती है, वहां लक्ष्मी की पूजा
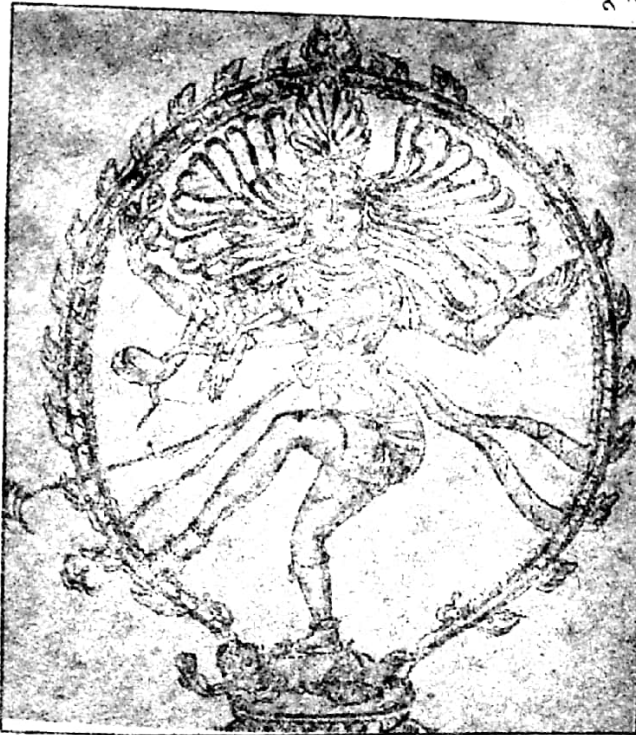
अवश्य होती है, अब अपने सामने मध्य में "नृसिंह यंत्र" स्थापित करें तथा लक्ष्मी साधना हेतु "लघु लक्ष्मी यंत्र तथा चित्र" स्थापित करें, और नृसिंह यंत्र पर रक्त सिंदूर चढ़ाकर चारों ओर एक घेरा बांधें, तथा पहले से बना कर रखी हुई खीर का प्रसाद कटोरा भरकर रख दें।

तत्पश्चात् सर्व प्रथम लक्ष्मी का ध्यान कर प्रार्थना करें और जो कार्य सबसे पहले संपन्न करना चाहते हैं अथवा जो बाधा सबसे अधिक तीव्र है और निवारण चाहते हैं अथवा कागज पर कलम से लिखकर, एक धागे से बांध कर नृसिंह यंत्र के नीचे रख दें, और दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि-

मैं शक्ति और अभय प्राप्त करने हेतु अपनी अमुक बाधा निवारण हेतु यह साधना संपन्न करने हेतु मंत्र जप करता हूं।

अपने दायीं ओर एक लोहे का चिमटा भी रखें, उस पर भी सिंदूर चढ़ाएं तथा नीचे लिखे मंत्र का २१ बार मंत्र जप कर दाएं हाथ से वह चिमटा जमीन पर २१ बार बजाएं, पूरे आत्म विश्वास के साथ एकाग्र होकर मंत्र जप करें, यदि किसी प्रकार की आवाज हो तो ध्यान न दें।

मंत्र :- ॐ **क्षौं नमः भगवते तेजस्तेजसे स्वयंभुवे नृसिंहाय पुरुषाय ॐ क्षौं।।**

इस प्रकार पांच बार यह प्रयोग करना है, पूरे प्रयोग के पश्चात् समस्या या बाधा निवारण लिखे हुए कागज को उसी स्थान पर दीपक की लौ से जलाकर उसकी राख अर्थात् भस्म से स्वयं को तिलक कर लें, इसके पश्चात् हाथ जोड़कर लक्ष्मी की आरती संपन्न कर खीर का प्रसाद उसी स्थान पर बैठकर ग्रहण कर लें।

यह एक सिद्ध प्रयोग है यदि साधक की भावना प्रबल है तो शीघ्र प्रभाव देखने को मिलता है।

साधना के पश्चात् आठों यंत्र तथा लघुलक्ष्मी यंत्र को अन्य सामग्री के साथ बाहर खड्डा खोदकर गाड़ दें, तथा पीछे मुड़कर न देखें, जब भी रात्रि को उचित मन, भाव, चिन्ता हो तो नृसिंह मंत्र का २१ बार जप अवश्य कर लें।

इन दोनों प्रयोगों के अतिरिक्त होलाष्टक से होली तक ७ दिनों में कई प्रयोग किये जा सकते हैं। साबर प्रयोग, इन दिनों में संपन्न करने से अपना विशेष फल देते हैं। पत्रिका के आगे के पृष्ठों में पांच और विशेष प्रयोग दिये गये हैं। साधक उनमें से भी कोई प्रयोग इन दिनों संपन्न कर सकता है।

साधनाएं

गुरुधाम दिल्ली में गुरुवार को होने वाली साधना अब नित्य सायं ४ से ७ बजे तक हुआ करेगी।

गुरुधाम ३०६ कोहाट इन्क्लेव पीतमपुरा नई दिल्ली में प्रत्येक गुरुवार को पू. गुरुदेव के सान्निध्य में होने वाली साधना क्रम में साधकों की अभिरुचि एवं संख्या बढ़ती जा रही है। साधना का समय मात्र तीन घण्टे (सायं ४ से ७ बजे) तक है। लेकिन बहुत से साधकों को गुरुवार को अवकाश नहीं मिल पाता, साधना से वंचित होने से वे चिन्तित होते हैं। अब उनके विशेष अनुरोध पर पू. गुरुदेव जी ने गुरुवार की उसी साधना को गुरुवार से अगले बुधवार तक करवाने का आदेश दिया है, ताकि सभी साधक अपनी सुविधानुसार सप्ताह के किसी भी दिन आकर साधना से लाभ उठा सकें।

साधना शुल्क मात्र १००/- रुपये होगा। जिसमें सम्बंधित साधना की सामग्री उपलब्ध करायी जाएगी। एक बार शुल्क जमा करने देने पर साधक सप्ताह के किसी भी दिन मात्र एक बार साधना कर सकेगा। साधना के लिए साधक के पास अपनी धोती, पंचपात्र, गुरुमंत्रचादर, गुरुचित्र, आसन एवं माला आवश्यक है। न होने पर यह सभी सामग्री गुरुधाम में उचित मूल्य पर उपलब्ध रहेगी।

गुरुदेव कार्यक्रम

गुरु दर्शन एवं गुरु भेंट हेतु प्रत्येक शिष्य का हृदय व्याकुल रहता है और उसके मन को तभी शान्ति मिलती है, जब वह स्वयं गुरु के समक्ष उपस्थित होकर अपनी बात कहता है, दीक्षा प्राप्त कर शिष्य बनने हेतु और अपनी समस्याओं के उचित समाधान, मार्ग दर्शन एवं साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करने हेतु पूरे भारतवर्ष से नित्य प्रति शिष्य, साधक गुरु शक्तिपीठ जोधपुर आते हैं और जब गुरुदेव यहां जोधपुर में नहीं होते तो उनकी निराशा बढ़ जाती है।

इसी प्रकार गुरुधाम दिल्ली में भी कार्य बहुत अधिक बढ़ गया है और वहां भी भक्तों का समूह नित्य प्रति भेंट करने आता है। पूज्य गुरुदेव के लिए तो उनका हर शिष्य उन्हें प्यारा है, क्योंकि संसार में सबसे अनूठा संबंध गुरु-शिष्य का सम्बंध ही है।

इस स्थिति में कार्यालय द्वारा पूज्य गुरुदेव को निवेदन किये जाने पर भविष्य के लिए निम्न कार्यक्रम प्रति माह के लिए निश्चित किया गया है-

प्रतिमाह १ तारीख से १० तारीख तक-गुरुशक्तिपीठ जोधपुर

प्रतिमाह ११ तारीख से २० तारीख तक-गुरुधाम दिल्ली

प्रतिमाह २१ तारीख से ३० तारीख तक-गुरु शक्तिपीठ जोधपुर

विशेष परिस्थितियों में कार्यक्रम में थोड़ा बहुत फेरबदल हो सकता है, अतः भेंट हेतु आने वाले साधकों से निवेदन है कि वे उपरोक्त स्थान पर जाने से पहले फोन अवश्य कर लें।

फोन नं.- ०२९१-३२२०९, (जोधपुर)
फोन नं.- ०११-७१८२२४८ (दिल्ली)

पत्रिका सदस्यता

१ वार्षिक सदस्यता शुल्क १५० रुपये मात्र है। इसमें सदस्य के पते पर साल भर पत्रिका डाक द्वारा भेजी जायेगी। वी.पी. शुल्क रुपये/-अलग होगा।

२. सदस्यता शुल्क तीन साल के लिये ४५० रु. मात्र एंव पांच साल के लिये ७५० मात्र हैं। वीपी से मगानें पर वी. पी. शुल्क अलग होगा।

३ आजीवन सदस्यता शुल्क ६६६६/०० रु० मात्र है:- इसमें सदस्य को आजीवन पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती रहेगी,

- ☐ प्रत्येक वर्ष नूतन वार्षिक सदस्य को जो उपहार दिया जायेगा वो आजीवन सदस्य को भी उपलब्ध होंगें।
- ☐ आजीवन सदस्य बनने पर एक पारद शिवलिंग जिसका मूल्य ३००/ रू० है उपहार में दिया जायेगा।
- ☐ एक लेमिनेटेड १६"x२०" साईज का चैतन्य गुरु चित्र आशीर्वाद स्वरूप प्रदान किया जायेगा।
- ☐ आजीवन सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को दो साल के लिये निःशुल्क पत्रिका सदस्यता प्रदान की जायेगी।

उपरोक्त सदस्यता शुल्क आप निम्नलिखित पतों में किसी एक पर जमा करा कर रसीद प्राप्त कर सकते हैं -

१. मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

गुरु शक्ति पीठ, हाईकोर्ट कालोनी

श्रीमाली मार्ग, जोधपुर ३४२००१ (राज.)

फोन : ०२९१-३२२०९

२-मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

गुरुधाम

३०६, कोहाट एन्क्लेव पीतम पुरा

नई दिल्ली-११००३४ फोन : ०११-७१८२२४८

फरवरी सन् १९९३ के व्रत-त्यौहार

दिनांक	वार	तिथी	पक्ष	पर्व
१.२.९३	सोमवार	९	शुक्ल	रवियोग मास गुरुपर्व
३.२.९३	बुधवार	११	शुक्ल	जया एकादशी, राजयोग
४.२.९३	गुरुवार	१२	शुक्ल	भीष्मद्वादशी, प्रदोष
५.२.९३	शुक्रवार	१३	शुक्ल	विश्वकर्मा जयन्ती
६.२.९३	शनिवार	१४	शुक्ल	माघी पूर्णिमा
१२.२.९३	शुक्रवार	६	कृष्ण पक्ष	सूर्य की कुंभ संक्रांति
१७.२.९३	बुधवार	११	कृष्ण पक्ष	विजया एकादशी
१८.२.९३	गुरुवार	१२	कृष्ण पक्ष	प्रदोष, सौर वसन्त ऋतु प्रारम्भ
१९.२.९३	शुक्रवार	१३	कृष्ण पक्ष	महाशिवरात्रि, शिव पूजन
२१.२.९३	रविवार	३०	कृष्ण पक्ष	अमावस्या
२५.२.९३	गुरुवार	४	शुक्ल पक्ष	मास गणेश चतुर्थी, पंचक समाप्त
४.३.९३	गुरुवार	११	शुक्ल पक्ष	आमलकी स्मार्त एकादशी, गुरुपुष्यामृत योग
७.३.९३	रविवार	१४	शुक्ल पक्ष	होलिका दहन
८.३.९३	सोमवार		शुक्ल पक्ष	धुरेंती

(शेष भाग २२ का)

जापान से लौटे भारतीय डॉ. आनन्द मोहन ने मुझे इस पद्धति के बारे में बातचीत के प्रसंग में बताया था कि इसके बाद अगले दिन व्यक्ति किसी स्वच्छ और समतल जमीन पर लेट जाए, पर इस बात का ध्यान रहे कि नीचे किसी प्रकार मोटा बिस्तरा बिछा हुआ न हो, एक प्रकार से यौगिक व्यायाम है। इस प्रकार लगभग पांच दस मिनट तक लेटा रहे उस समय किसी भी प्रकार का कोई भी विचार उसके मानस में नहीं होना चाहिए, मन बिल्कुल शांत हो।

दस मिनट के बाद वह अपने मन में सोचे कि अब मेरे पांव के तलुए शांत हो गये हैं या अब उनमें किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं है। इसके बाद वह धीरे-धीरे ऊपर की ओर चिन्तन करे, अर्थात् वह उसी प्रकार निष्पन्द लेटा-लेटा चिन्तन करे, कि अब मेरे घुटने ने काम करना बंद कर दिया है, और उसमें किसी प्रकार की चेतना नहीं है, अब मेरी कमर निष्पन्द और निष्क्रिय हो गई है, और उसमें किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं है। इसी प्रकार वह व्यक्ति ऊपर की ओर उठता रहे, और पेट, सीना, कमर, पीठ, गला चेहरा, आंखें और सिर के प्रति यही चिन्तन एक के बाद एक करे कि ये अंग सर्वथा निष्क्रिय और निष्पन्द हो गये हैं, और इनमें किसी प्रकार की चेतना नहीं रही है।

जब सारा शरीर शव ही तरह हो जाय, तब वापिस सिर से पैरों की ओर चिन्तन प्रारंभ करें कि मेरे सिर में दर्द है वह नीचे की ओर से उतर रहा है और अब सिर में दर्द नहीं है, फिर आंखों पर चिन्तन करें कि अब मेरी आंखों में कोई दर्द नहीं रहा है। इसी प्रकार गले, पीठ सीना, और कमर के बारे में चिन्तन करे कि इनमें किसी प्रकार का कोई दर्द नहीं है, फिर इसी प्रकार आगे बढ़ता हुआ पैरों के तलुए तक क्रमशः चिन्तन करता रहे, और अंत में निश्चय करें कि अब तलुओं में भी दर्द नहीं है, और दर्द तलुओं से हटकर बाहर निकल गया है, तथा अब मेरे शरीर के किसी भी अंग में किसी भी प्रकार का कोई दर्द नहीं है।

डॉ. ने मुझे बताया कि शरीर के जिस भाग में ज्यादा दर्द हो उस पर एक या दो मिनट ज्यादा चिन्तन करें, पर वह चिन्तन ऊपर से नीचे की ओर हो, इसी प्रकार नित्य प्रातःकाल यह क्रिया संपन्न करे तो निश्चय ही दो या तीन दिन में या उसी दिन से दर्द समाप्त हो जाता है, और व्यक्ति स्वयं पूर्णतः स्वस्थ अनुभव करता है।

डॉ. आनन्द मोहन ने मुझे बताया कि जापान में दर्द से मुक्ति के लिये इस क्रिया के साथ-साथ विशेष प्रकार की चिरमी के दानों का भी प्रयोग किया जाता है। जो भी व्यक्ति बीमार हो जाता है, या उसके शरीर में कहीं पर कोई दर्द होता है तो किसी कपड़े में बांधकर सात चिरमी के दाने उस विशेष स्थान पर धागे से बांध देते हैं, या किसी तांबे या चांदी के ताबीज में सात चिरमी के दाने भरकर गले में पहन लेते हैं। जापानियों की यह मान्यता है कि यह भी अपने आप में तोकाजीरो पद्धति ही है, जो तोकाजीरो क्रिया संपन्न नहीं कर पाते वे यदि उस समय तक चिरमी के दानों को गले में पहने रहते हैं तो इससे भी वे दर्द से मुक्ति पा लेते हैं। जो बीमार हैं, पीड़ित हैं या दर्द से परेशान हैं वे उपरोक्त विधि तो आजमा ही सकते हैं, साथ ही साथ यदि इन दिनों का प्रयोग करते हैं तो अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं, इनमें से प्रत्येक दाने पर तोकाजीरो मंत्र से प्रभावयुक्त बना कर फिर उसे धारण करे, तो ज्यादा अनुकूल व शीघ्र प्रभाव प्राप्त होता है।

डॉ. आनन्द मोहन जिनकी भेंट मुझे अनायास ही हो गई थी, उन्होंने बताया कि भारत वर्ष में मैंने कई रोगियों पर इन दानों का प्रयोग किया है, और वास्तव में ही उन्हें इससे आशातीत लाभ हुआ है। आज जापान के अलावा और भी कई देशों में इन दोनों प्रकार की पद्धतियों को मिलाकर प्रयोग करने की रुचि बढ़ी है, वे उपरोक्त शवासन या चिन्तन प्रक्रिया अर्थात् तोकाजीरो पद्धति से तो विचार करते ही हैं, चिरमी के दानों का भी प्रयोग करते हैं। इस पद्धति में यही आवश्यक है कि तोकाजीरो करते समय मन पूर्णतः शांत होना चाहिए, उस समय मस्तिष्क में किसी प्रकार का कोई विचार नहीं होना चाहिए, एक प्रकार से "थोटलेस माइण्ड" होना चाहिए, और दिमाग का पूरा चिन्तन शरीर के उसी भाग पर होना चाहिए जिस भाग पर चिन्तन कर रहे हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तो प्रभाव धीरे-धीरे होता है, परन्तु फिर भी उन "एन्टीवाइटिक्स" या दर्द निवारक गोलियों की अपेक्षा यह पद्धति ज्यादा निरापद एवं अनुकूल है।

●●●

सम्पूर्ण दीक्षा रहस्य

- ✡ शिष्य को दीक्षा क्यों आवश्यक?
- ✡ दीक्षा का मूलभूत तत्व-भेद?
- ✡ दीक्षा से जीवन मार्ग में गति
- ✡ बार-बार दीक्षा आवश्यक क्यों?

चाहे साधक कितना ही महान् हो, पर उसे तब तक पूर्ण सिद्धि एवं सफलता प्राप्त हो नहीं सकती, तब तक कि वह गुरु से दीक्षा प्राप्त न कर ले। मात्र मुंह से गुरु.... गुरु या शिष्य..... शिष्य..... का उच्चारण करने से कुछ नहीं हो पाता, जब तक कि पूर्ण विधि-विधान के साथ शस्त्रोक्त पद्धति से दीक्षा प्राप्त नहीं कर लेता।

दीक्षा ही तो शिष्य की निधि है, जीवन का सम्बल है, मन की पूर्णता, शिव सायुज्य होने का विधान है लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग है.........।

दीक्षा वास्तव में ही आत्म-संस्कार का ही दूसरा नाम है, व्यक्ति साधक या शिष्य मानवी व्यवहार दोष एवं पाश से आबद्ध रहता है, इन दोषों और पापों की वजह से उसका पूर्णत्व प्रस्फुटित नही हो पाता, वास्तव में ही शिष्य पूर्ण शिव स्वरूप होते हुए भी जब उसकी आत्मा पर झूठ, छल, पाप और असत्य का आवरण होता है, तो उस वजह से वह अपने आप को अपूर्ण समझता है, तथा वह अपने हृदय में पूर्णता अनुभव नहीं कर पाता, यह कमी उसमें कई अशुभ भावनाओं का संचार करती है, इन कारणों से देह में विविध रोग होते है, आयु क्षीणता का अनुभव करता है और सुख-दुख का अनुभव करता रहता है, एक प्रकार से देखा जाय तो साधक या शिष्य इन बाहरी छल प्रपंचों से घिरा रहता है, और साधना में सिद्धि या सफलता नहीं मिल पाती, ऐसी स्थिति में साधक निराश हो जाता है।

इस प्रकार की बद्ध आत्मा में ये तीन प्रकार के आवरण-देह, आयु और भोग सदा रहते है, दीक्षा के द्वारा इन आवरणों को पूरी तरह से हटाया जाता है, मलिन आत्मा का संस्कार किया जाता है, और उस साधक को या शिष्य को पूर्ण चैतन्य बना दिया जाता है, जिससे कि वह तेजस्विता प्राप्त कर सके और सांसारिक सभी पापों को दूरकर साधना में सफलता प्राप्त करता हुआ, इष्ट के पूर्ण दर्शन कर सके।

दीयते ज्ञान सद्भाव:
क्षीयते पशु भावना।

दानक्षपण संयुक्ता दीक्षा
तेनेह कीर्तिता।।

अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान दिया जाता है, और पशु भावना को क्षय किया जाता है, ऐसे गुरु प्रदत्त दान को "दीक्षा" कहा जाता है।

दीक्षा ही महत्वपूर्ण

दीक्षा मूलो जपः सर्वः दीक्षा मूलं परं तपः।
दीक्षा माश्रित्य निवसेत् यत्र कुत्राश्रमे वसन्।।

कुलार्णव तंत्र

संसार में समस्त प्रकार के जप का तथा तप का मूल दीक्षा ही है, इसलिए विविध जंजालों के पथ को छोड़कर सीधा सरल-मार्ग दीक्षा का ही आश्रय लेना चाहिए। जो गुरु दीक्षा न दे सके, वह गुरु नहीं अपितु पातकी है, जिस आश्रम या गुरु गृह में दीक्षा विधान नहीं है वह हरा-भरा होते हुए भी मरुस्थल के समान है। जहां पर शक्तिपात करने की व्यवस्था न हो, वहां त्याग तपस्या और परमार्थ का भले ही कितना ही ढोल पीटा जाता हो, वह व्यर्थ है। सच्चा गुरु वही कहला सकता है, जो दीक्षा देने का विधान जानता हो, क्योंकि दीक्षा से ही तो शिष्य का ज्ञान उद्दिप्त होता है, वह चाण्डाल होते हुए भी सर्व बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

दीक्षया मोक्ष दीपेन चाण्डालोऽपि विमुच्यते।

कुलार्णव तंत्र

वास्तव में ही दीक्षा जीवन की सर्वोच्च निधि है, जीवन का वरदान है, शिव सायुज्य होने की क्रिया है, मानव को महेश्वर बनाने की प्रक्रिया है। दीक्षा के द्वारा शिष्य केवल मात्र देवत्व नहीं ब्रह्म भाव ही नहीं, अपितु गुरुत्व की प्राप्ति कर लेता है।

दीक्षा जीवन का गति तत्त्व

गुरु का क्या अर्थ है? गुरु का कार्य है, शिष्य की आत्मा के साथ अपने आपको अभिन्न कर देना और शिष्य के आन्तरिक सभी पापों का शीघ्रातिशीघ्र नाश करके उसे पूर्ण चैतन्य शुद्ध एवं शिवमय बना देने की प्रक्रिया यह कार्य गुरु ज्ञान द्वारा, दीक्षा द्वारा और शक्तिपात द्वारा सम्पन्न करता है।

सबसे पहले गुरु साधक को ज्ञान द्वारा उसके वास्तविक स्वरूप को समझाता है, हकीकत में देखा जाये तो साधक का जीवन या यों कहा जाय कि उस व्यक्ति का जीवन अशुद्ध, दूषित और विषय वासनाओं से युक्त होता है, उसकी आत्मा पर विभिन्न पापों और दोषों के आवरण पड़े रहते हैं। फलस्वरूप शिष्य की या साधक की आत्मा इन दोषों की वजह से माया में आविष्ट रहती है, और प्रयत्न करते पर भी न तो पूर्ण चैतन्य हो पाती है, और न इष्ट से एकाकार होकर उसके दर्शन कर पाती है ऐसी स्थिति में गुरु, ज्ञान के द्वारा उसे समझाता है कि यह पशु जीवन एक मामूली और सामान्य जीवन है, प्रभु ने हमें मानव जीवन दिया है, तो हममें ज्ञान चेतना का भी प्रस्फुटन किया है, और हम ज्ञान के द्वारा ही समझ सकते हैं कि किन तरीकों से इस पापमय दोषयुक्त जीवन को शुद्ध चैतन्य बना सकते हैं इसी को दीक्षा या ज्ञान क्रिया कहा जाता है।

दीक्षा-जीवन को शुद्ध बनाने की क्रिया

अब प्रश्न उठता है कि शिष्य को दीक्षा लेने के लिए क्या करना चाहिए, और उसे किस क्रम में दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए, क्या एक बार दीक्षा लेना ही आवश्यक है, अथवा बार-बार दीक्षा क्रम किया जाय?

जो साधक भोगार्थी हैं क्या वे अपने जीवन को क्षण प्रति क्षण शुद्ध रखकर कार्य कर सकते हैं?

क्या सांसारिक जीवन में रहने वाले व्यक्ति झूठ, छल, लोभ, इत्यादि से मुक्त रह सकता है?

क्या सांसारिक व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए उल्टे सीधे सभी कार्यों को करने से बच सकता है?

ऐसा कदापि संभव नहीं हो पाता है, उसे तो अपने जीवन में जीवन यापन के लिए और सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए तरह-तरह के विचित्र क्रिया कलाप करने पड़ते हैं, केवल कंद मूल खाकर वह जंगल में नहीं रह सकता, वह तो इसी जीवन में रहते हुए शुद्ध साधनाएं संपन्न कर उनमें पूर्णता प्राप्त करना चाहता है उन साधनाओं के सहारे अपने जीवन लक्ष्य में और अधिक गति पाना चाहता है, यह संभव है और वह यह कर सकता है क्योंकि जब भी साधक के मन में या गृहस्थ के मन में साधना का एक भी बीज फूटता है तो यह निश्चित है कि उसके भीतर सद्गुरुदेव के प्रति जो आस्था है, विश्वास है, वह मंत्रों की शक्ति को स्वीकार करता है, तंत्र की क्रिया सम्पन्न करना चाहता है, और इन तंत्र और मंत्रों से युक्त यंत्र को अपने घर स्थापित करना चाहता है जिससे घर में सुख संपत्ति में वृद्धि हो, और कार्य

में प्रगति हो।

जैसा कि मैने पहले दीक्षा के संबन्ध में स्पष्ट किया कि दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा वरदान है, गुरु द्वारा शिष्य को दिया हुआ उपहार है, उसके जीवन को आगे बढ़ाने के लिए एक ठोस नींव का निर्माण है।

जहां तक दीक्षा भेद का प्रश्न है तंत्र शास्त्रों में तीन प्रकार की दीक्षाओं का विशेष वर्णन आया है- १-शांभवी दीक्षा २ शाक्त दीक्षा, ३. मान्त्री दीक्षा। इस प्रकार की दीक्षाएं केवल उन्हीं व्यक्तियों के लिए संभव है जो कि केवल तंत्र को ही अपना जीवन बनाना चाहते हैं और निरन्तर तांत्रिक क्रिया संपन्न करना चाहते हैं ऐसा व्यक्ति सुखी गृहस्थ जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

भोगार्थी (सांसारिक व्यक्ति) क्या करें?

साधना में सिद्धि और भोग का शुद्ध समन्वय गुरुदेव द्वारा बताये गये मार्ग से ही संभव हो सका है, क्योंकि जीवन में निरन्तर जाने-आनजाने सांसारिक व्यक्तियों के द्वारा ऐसे कार्य होते रहते हैं, जिसके कारण साधना का बल क्षीण होता है और साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती।

इस लिए शास्त्रों में जो दीक्षा क्रम बताया गया है उसी क्रम की अनुपालना के साथ-साथ शिष्य को और भी दीक्षाएं ग्रहण करते रहना चाहिए, क्योंकि जब भी शिष्य एक दीक्षा लेता है तो उसकी आत्मा पर पड़े हुए आवरण का एक हिस्सा शुद्ध होता है, और यह क्रम बार-बार दोहराया जाना चाहिए, और जब तक साधक कुछ विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न करें जैसे-दस महाविद्या साधना, जिसमें कमला, (लक्ष्मी) ,काली, मातंगी, तारा साधनाएं सम्मिलित हैं तो साधक को उस समय विशेष दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, जिससे उसे निरन्तर गुरुदेव की शक्ति की उष्णता तीव्रता प्राप्त हो सके, और उसके भीतर सुप्त शक्ति का जागरण हो सके।

इसलिए जो साधक कहते हैं कि हमने अमुक गुरु से दीक्षा ले ली है, और अब बाकी सब काम तो गुरुदेव का है, हम तो अपने जीवन में उल्टे-सीधे सभी कार्य करते रहेंगे, क्या ऐसा सम्भव हो सकता है? कदापि नहीं, जिस प्रकार शरीर की शुद्धता के लिए नित्य स्नान आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन को पूर्ण शुद्ध एवं सोने के समान चमकदार बनाने के लिए जीवन रूपी कोयले में से कोयला हटा कर हीरा

तरासने के लिए बार-बार दीक्षा आवश्यक है।

शास्त्रों के अनुसार दीक्षा के निम्न आठ भेद कहे गये है, उनकी पालना तो आवश्यक है-

१. समय दीक्षा (प्रारम्भिक दीक्षा)

किसी भी प्रकार के साधक को दीक्षा देकर शिष्य बनाना जिसमें उसके हृदय में चिन्तन और मन्थन शुद्ध विचारों का प्रारम्भ हो सके। आगे जीवन किस पथ पर बढ़ना है, इसका बीजारोपण ही समय दीक्षा है।

२. ज्ञान दीक्षा

देह दोष शुद्धि, आयु दोष शुद्धि और भोग दोष शुद्धि का बीजारोपण इसी दीक्षा के अन्तर्गत आता है, और इन दोषों को दूर करने की क्रिया ज्ञान दीक्षा कहलाती है, इसका विकास इस दीक्षा के बाद ही प्रारम्भ होता है।

३. जीवन मार्ग दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव विशेष बीज मंत्र प्रदान करते हैं और उसे जपने की क्रिया तथा आत्म शक्ति के निर्माण की उसे चैतन्य करने की क्रिया शक्ति-इसी दीक्षा में प्रदान करते हैं, जिससे साधक अपनी शक्ति को पहिचान कर जीवन पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़ सके।

४. शांभवी दीक्षा

जब शिष्य गुरुमय हो जाता है तो उसे इस दीक्षा के द्वारा उस शक्ति से संचालित करते हैं जिसके द्वारा वह विशेष तांत्रिक साधनाओं को अपने आप संपन्न कर सफल हो सके और इसी दीक्षा में शिष्य को रक्षा कवच प्रदान करते हैं, उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर लेते हैं।

५. चक्र जागरण दीक्षा

देह शुद्धि और ध्यान शक्ति का विकास एवं शक्ति संचालन जिसके द्वारा शरीर स्थित शक्ति चक्र एक के बाद एक जाग्रत हो उठते हैं, ऐसा विशेष उपहार इस दीक्षा के अन्तर्गत ही प्रदान किया जाता है।

६. विद्या दीक्षा

मंत्र के मर्म और उसके बीज रूप को समझने का अधिकार और विशेष सिद्धियां-अणिमा, महिमा, गरिमा आदि इसी दीक्षा के बाद शिष्य को प्राप्त हो सकती है।

७. शिष्याभिषेक

इसी दीक्षा के अन्तर्गत शिष्य का विशेष अभिषेक किया जाता है जिससे वह तत्त्व, तत्त्वेश्वर, निवृत भोग और शान्ति, इन पांचो की पूर्णता प्राप्त कर विशेष सिद्धि प्राप्त कर सके।

८. आचार्याभिषेक

इस अतिमहत्वपूर्ण दीक्षा में सकलीकरण संस्कार कर अन्तर का पूर्ण अभिषेक किया जाता है और शिष्य को गुरु ब्रह्म शक्तिपात से आचार्य अभिषेक दीक्षा दी जाती है, यह दीक्षा प्राप्त शिष्य ही सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

वास्तव में जब जीवन के सौभाग्य का उदय होता है तो जीवन में दीक्षा का चिन्तन पैदा होता है और इसके द्वारा हम सद्गुरुदेव को पहिचान कर सेवा करते हुए, उनकी आज्ञाओं का पालन करते हुए उनके चरणों में लीन होते हैं। ऐसे सद्गुरु से एक बार शिष्य बनकर निरन्तर दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे जीवन में सभी सिद्धियां प्राप्त हो, सकें, वास्तव में जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के निन्तर प्रयास करते रहने की क्रिया को ही दीक्षा कहा जाता है।

चैत्र नवरात्रि

२४ मार्च १९९३

पूजन-विधान

नवरात्रि पूजन विधान में जहां सर्व शक्ति पराम्बा भगवती की साधना की जाती है उसके साथ ही कलश स्थापन, गणपति पूजन नवग्रह पूजन, भैरव पूजन भी आवश्यक हैं।

जो साधक गुरु के समीप न पहुंच सके तो शुद्ध वैदिक पद्धति से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् २४ मार्च १९९३ को निम्नप्रकार से पूजन कर मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।

प्रात:काल जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल आसन बिछा लें, पूजन के समय अपनी पत्नी को अपने दाहिने हाथ की ओर बिठाये (विवाहे शुभ कार्येषु पत्नी दक्षिण तो सुभा:) अपने सामने लकड़ी की बाजोट या तखता बिछा दें और मध्य में चावलों की ढ़ेरी बना कर उस पर कलश को स्थापित करें।

फिर एक दूसरे छोटे लकड़ी के तखते पर श्वेत वस्त्र बिछाकर चावलों की नौ ढ़ेरियां बनाकर नवग्रह की स्थापना करें। साधक नवग्रह स्वरूप प्राण प्रतिष्ठायुक्त **"विघ्नहर नवग्रह यंत्र"** भी स्थापित कर सकते हैं। अपने सामने भगवती दुर्गा का सुन्दर चित्र भी स्थापित करें, और एक ताम्र पात्र में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त स्वर्ण रजत अथवा ताम्र अंकित **"साकाम्य साफल्य दुर्गार्चन यंत्र"** स्थापित करें इस यंत्र की पूजा नित्य प्रति करनी है।

निम्न लिखित पूजन सामग्री को पहले से ही मंगवाकर तैयार रखें-

१. जल पात्र २. नारियल ३. चावल ४. कुंकुंम ५. मौली ६. गोल सुपारी ७. दूध ८. दही ९. घी १०. शहद ११. शक्कर १२. गुलाल १३. लौंगइलायची १४. फल १५. दूध का बना प्रसाद १६. दक्षिणा

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प लें।

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णु: श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्य क्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे सम्वत् २०५० चैत्र मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ बुध वासरे अमुकगोत्रोत्पन्न: । अपने गौत्र का उच्चारण करें यदि गोत्र ज्ञात न हो तो कश्यप गोत्र माने, अमुक नाम शर्माहं (यहां पर अपने नाम का उच्चारण करें) मम इह जन्मनि दुर्गाप्रीति द्वारा चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं (यहां अपनी विशेष मनोकामना उच्चारित करें) चैत्र नवरात्रि प्रतिपदायां दुर्गापूजन मंत्र जपं करिष्ये।

इसके बाद अपने सामने गणपति का चित्र या उसकी मूर्ति स्थापित करें, और उस पर जल चढाकर पोंछ दें, कुंकुंम का तिलक करें, भोग लगावें, और फिर हाथ जोड़कर मंगल कामना करें।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च विदेशेगमने तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

मंगल पाठ करने के बाद सामने रखे हुए कलश का पूजन करें, उस पर कुंकुंम या केसर की नौ बिन्दियां लगावें, स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करें, कलश के अन्दर सुपारी, एक रुपया डालें, कलश के ऊपर लाल वस्त्र लपेट कर नारियल रखें, और उस पर अबीर गुलाल चढ़ाकर कलश के अंदर जल डालें, और फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

सरितासागरा:शैलास्तीर्थानि जलदा नदा:।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारका:।।
कलशस्य मुखे विष्णु: कण्ठे रुद्र: समाश्रित:।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्येमातृगणा स्मृता।।
कुक्षौ तु सागरा: सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदोप्यथर्वण:।।
अंगेश्च सहिता: सर्वे कलशं तु समाश्रिता:।
देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत: सर्वाणि तीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता।।

इसके बाद नवग्रहों का पूजन करें, बांये हाथ में अक्षत ले कर दाहिने हाथ से उन नौ ढेरियों में क्रमश: डालें

१. ॐ सूर्यायनम: २. ॐ सोमाय नम: ३. ॐ भौमायनम: ४. ॐ बुधाय नम: ५. ॐ बृहस्पतये नम: ६. ॐ शुक्राय नम: ७. ॐ शनिश्चराय नम: ८. ॐ राहवे नम: ९. ॐ केतवे नम:

इसके बाद इन नवग्रहों पर अक्षत, कुंकुंम, पुष्प, आदि चढ़ा कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च।

गुरुश्च शुक्र: शनि-राहु-केतव: सर्वे ग्रहा: शांतिकरा भवन्तु।।

इसके बाद सामने जो भगवती दुर्गा की तस्वीर रखी है उसकी जल से और केसर से पूजन कर उसमें निम्न सोलह देवियों की स्थापना करें।

१. गौरी २. पद्मा ३. शची ४. मेधा ५. सावित्री ६. विजया ७. जया ८. देवसेना ९. स्वधा १०. स्वाहा ११ मातरो १२. लोकमातरा: १३. धृति: १४. पुष्टिस्तथा १५ तुष्टि १६. कुलदेवी

फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां।
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्ग:।।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदारा।
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।
दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमो स्तुते।

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूदन्।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।

इसके बाद अपने सामने ताम्र पात्र में रखे हुए शक्ति **समन्वित दुर्गा यंत्र** की जल, पंचामृत कुंकुंम, केशर, पुष्प, इत्यादि से पूजन करें। आगे नैवेद्य भी अर्पण करें और अपने मन की इच्छा व्यक्त करें कि नवरात्रि में उसकी मनोकामना सिद्ध हो।

साधना काल में साधक को प्रतिदिन एक माला गणपति मंत्र "ॐ गं गणपतये नम:" का जप अवश्य करना चाहिए।

नवरात्रि साधना में साधक यदि प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती का पाठ संपन्न कर सकता है तो अवश्य करें लेकिन जो पाठ संपन्न नहीं कर सकते हैं उन्हें नवार्ण मंत्र की ११ मालाएं तथा दुर्गा मंत्र की ११ माला का जप अवश्य करना चाहिए।

नवार्ण मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे।।

दुर्गा मंत्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नम:

नवरात्रि में पंचमी तिथि को "श्री पंचमी" है, इस दिन साधक को दुर्गा पूजा के साथ लक्ष्मी पूजा का विशेष विधान अवश्य संपन्न करना चाहिए। लक्ष्मी पूजा "श्रीयंत्र" प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, स्थापित कर श्री सूक्त के ११ या २१ अथवा १.१ पाठ संपन्न किये जाते हैं। नवरात्रि में लक्ष्मी की आराधना श्रीपंचमी को विशेष फलदायी मानी गई है।

इस प्रकार नित्य प्रति पूजन कर देवी को हाथ जोड़कर निम्न प्रार्थना कर अपने पूजन को पूर्ण करें।

मंत्रहीनं कियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
मया यत्पूजितं देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।
महिषाघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
यशो देहि जयं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।

●

काश! मेरी जिन्दगी टेप रिकार्ड की तरह होती, तो मैं जीवन के टेप का 'रिवर्स' कर अपने सुनहरे दिनों को सुन पाती।

लिखना है जीवन में नया अध्याय

हम करेंगे पूजा, अर्चना, साधना

महाकाल की

१७-१८-१९ फरवरी १९९३

महा शिवरात्रि पर उज्जैन (म.प्र.) में क्षिप्रा के तट पर पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमाली जी के सान्निध्य में महाकाल की सिद्धिप्रद साधना सम्पन्न हो रही है

और फिर आपको तो भाग लेना ही है . . . . .

पुण्यशीला, पावन क्षिप्रा के पूर्वी तट पर स्थित उज्जयिनी जिसकी गाथा पुराणों में भी वर्णित है, जो प्राचीनकाल में भारतीय संस्कृति के गौरव की केन्द्रीय स्थली थी, जिसका वर्तमान नाम उज्जैन है, उस देव भूमि में यह विराट् आयोजन है जहां स्थित है महाकालेश्वर भगवान् शिव का वह पवित्रतम स्थान और विराजमान है महाकालेश्वर लिंग-

आकाशे तारके लिंग पाताले हाटकेश्वरः, मृत्युलोके महाकालः लिंगत्रय नमोऽस्तुते।

आकाश में तारकेश्वर लिंग, पाताल में हाटकेश्वर और भूमि पर स्थित महाकाल लिंग को प्रणाम है।

और महाशिवरात्रि पर्व है भगवान शिव के भक्तों का, जब शिवभक्त उन्मुख होकर आराधना करता है, स्तुति करता है, आदिदेव शिव की, जो विधाता के लेख को बदल सकते हैं, जो भक्त पर सहज प्रसन्न होकर वर प्रदान करते हैं, जिनकी हर लीला में आनंद हैं।

ऐसा संगम पहली बार

शिवरात्रि का पावन पर्व और वह भी उज्जैन में इससे अधिक क्या चाहिए किसी साधक को, जहां वह अपने जीवन के दोष, पाप, कष्ट, पीड़ा निवारण हेतु साधना, आराधना, भक्ति, पूजा-अर्चना, स्तुति, वन्दना, आदि कर सकता है। उस महादेव की, जो वहां साक्षात् विराजमान है।

उज्जैन में पहली बार ऐसा आयोजन होगा जहां सिद्ध है, साधक है और साधकों, शिष्यों को अपने साथ बिठाकर साधना करायेंगे पूज्यगुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी। शिव साधना के ऐसे महान् आयोजन में आमंत्रण है आप सभी को जो तीन दिनों दिनांक १७,१८,१९ फरवरी १९९३ को संपन्न होगी अनूठी साधनाएं, शिवलिंग पूजन और एक विशेष
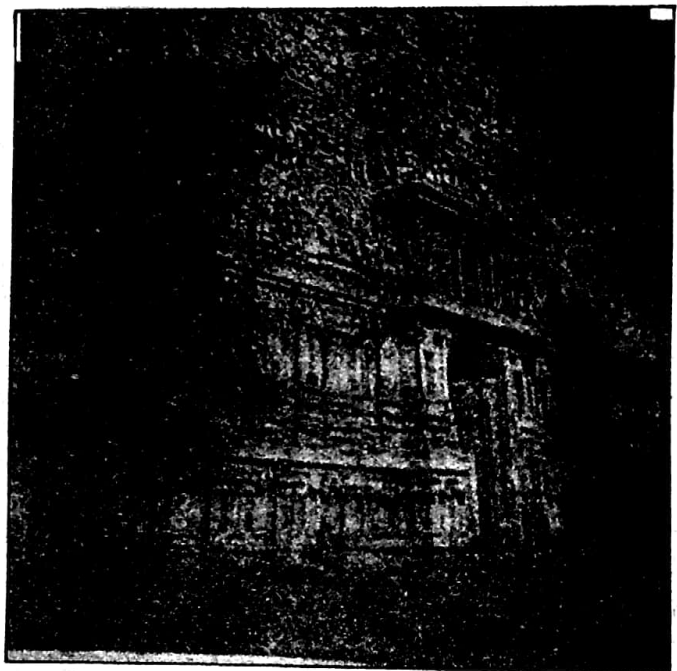
आयोजन। अप्सरा तीर्थ पर यह वह स्थान है जहां उर्वशी ने राजा पुरूरवा का वरण किया था।

विशेष पूजन

इस तीन दिन के शिविर में सर्व प्रथम तो समस्त भारत के १०८ तीर्थों से लाये जल कुंभों का पूजन एवं शोभा यात्रा संपन्न होगी, जिससे साधक १०८ तीर्थ स्थानों के पुण्य का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे।

पारद शिवलिंग अनूठा अद्‌भुत् एवं पारद के ८ संस्कार संपन्न कर निर्माण किया जा सकता है, और इस आयोजन में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीमाली जी द्वारा ५ किलों के विशिष्ट महाशिवलिंग का, चारों वेदों में वर्णित पूजन विधान के अनुसार चार प्रहर में चार पूजन संपन्न कराये जायेंगे जो जीवन में आध्यात्मिक एवं भौतिक पूर्णता को साकार करने में समर्थ है।

इस महान शिवलिंग को यदि कोई शांत मन से एक दृष्टि से एकटक होकर देखे, तो उसे कुछ समय में ऐसा लगने लगेगा मानों एक शक्ति का प्रवाह शिवलिंग से प्रवाहमान हैं, और साधक अपना भूतकाल तो क्या पूर्व जन्म तक देखने में समर्थ हो सकता हैं।

इस शिवलिंग को उच्चकोटि के साधक सूक्ष्मता से देखें तो उसके चारों पार्श्व में विभिन्न स्तोत्र अंकित किये हुए हैं। उत्तर पार्श्व में श्रीसूक्त पश्चिम में इन्द्रकृत् स्वर्णावती स्तोत्र,दक्षिण पार्श्व में रावण कृत् तांत्रोक्त कुबेर लक्ष्मी स्तोत्र एंव पूर्व पार्श्व में स्वर्ण लक्ष्मी सिद्धि प्रद स्तोत्र अंकित हैं।

शिविर में भाग लेना सौभाग्य

जब-जब जीवन के पुण्य उदय होते हैं तब-तब ऐसे आयोजन संपन्न होते हैं, और ऐसे आयोजनों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इस साधना शिविर में ऐसे शिवलिंग की पूजा साधक द्वारा स्वयं हो और एक से बढ़कर एक साधनाएं संपन्न करें, यह आप सबके लिये नये जीवन निर्माण के समान है।

समय चक्र की गति किसी के लिये नहीं रुकती, आज सिद्धाश्रम साधक परिवार ने इस आयोजन को संपन्न करने का जिम्मा उठाया है तो सभी पत्रिका पाठकों , साधकों, सदस्यों से आग्रह है कि वे अपने पूरे परिवार सहित इसमें भाग लेकर भौतिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता की ओर अग्रसर हों।

इस शिविर में सभी साधनात्मक सामग्री एवं व्यवस्था हेतु शुल्क ६६०/- रुपये रखा गया है।

आपके लिए उचित व्यवस्था हो इस हेतु आप पहले से पत्र लिखकर सिद्धाश्रम साधक परिवार केन्द्रीय कार्यालय जोधपुर को सूचना अवश्य दे दें।

इस आयोजन के संबंध में विशेष जानकारी हेतु पत्र नीचे लिखे पते पर भेजें, आपको सहयोग देकर हमें प्रसन्नता होगी।

हमें आवश्यकता है ऐसे समर्पित शिष्यों, साधकों की जो भारतीय संस्कृति के पुन: उत्थान में सहयोग के भागी बनकर मानवता को नया अमृतपथ दिखा सकें।

विनीत

अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
प्रधान कार्यालय द्वारा-मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर-३४२००१ फोन नं. ०२९१-३२२०९
दिल्ली कार्यालय ३०६, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा,
नई दिल्ली-३४, फोन नं. ०११-७१८२२४८

भगवान शिव तो तंत्र, मंत्र और यंत्र के आदि रचयिता हैं, जिनकी हर लीला न्यारी है, जो त्याग और आनन्द की प्रतिमूर्ति हैं। देव और दानवों ने सागर मंथन किया, लक्ष्मी मिली विष्णु को, उच्चैश्रवा ऐरावत, इन्द्र को और भी सारे विविध रत्न अन्य देवताओं को, लेकिन विश्व को ग्रस लेने को उद्यत हलाहल विष किसने ग्रहण किया, उसे विश्व रक्षार्थ शिव ने अपने कंठ में उतार लिया शिव एक महान् प्रेमी, शिव सभी ललित कलाओं के देवता शिव एक वत्सल पिता, शिव एक अपरिग्रही वैरागी, प्रेम में आकंठ डूबे हुए भी वीतराग शिव का निवास हिमालय, ऐसे महा प्रभु की हर लीला निराली है। शिव जो दानी हैं जो प्रसन्न होकर हर भक्त को मुंह मांगा दे देते हैं। शिव ही देव हैं जो विधाता के लिखे लेख के विरुद्ध जो कुछ अदेय है सहज ही उसे प्रदान कर देते हैं।

जो काल से परे है, और जो व्यक्ति काल से ग्रसित है जिसकी आयु क्षीण हो गई है जो शारीरिक कष्टों से पीड़ित है उसे भी काल से छीन कर केवल शिव ही आयु प्रदान करते हैं जो देवताओं के भी देव हैं, और राक्षसों के भी देव हैं, जो गृहस्थ के भी देव हैं और सन्यासियों के भी देव हैं ऐसे शिव की महिमा को बारम्बार प्रणाम। ●

आप मात्र पांच दिनों में

प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच सकते हैं

एक ऐसी साधना, एक ऐसा प्रयोग, जो अपने आप में अद्वितीय है, और आप इस साधना के माध्यम से उन्नति के उस शिखर पर पहुंच सकते हैं जो आपका लक्ष्य है

पद्मावती प्रयोग-जो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है

जीवन का नाम ही निरन्तर आगे बढ़ना है, और समय का सही सदुपयोग करना है। काल का तात्पर्य यह है, कि समय को पहिचानना सीखें, यदि ठीक समय पर ठीक काम किया जाय तो निश्चय ही उसका शुभ फल प्राप्त होता ही है, एक अंग्रेजी लेखक ने कहा हैं कि समय एक ऐसा पुरुष है, जो सिर के पीछे आधे भाग में गंजा है, और आगे आधे भाग में लम्बे-लम्बे बाल हैं, यदि समय आते ही हम उसे पकड़ लेते हैं, तो वह पूरी तरह से वश में हो जाता है, परन्तु वह समय यदि पास में होकर निकल जाता है, तो फिर उसे पकड़ना संभव नहीं होता।

साधना से ही जीवन में जगमगाहट

यदि सही रूप में देखा जाय तो हमारा अब तक का बीता हुआ जीवन परेशानियों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से भरा हुआ है, हमें जीवन में जो कुछ सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया, हम जीवन में जो कुछ आनंद लेना चाहते थे, वह नहीं ले पाये, और हम पद के लिए, धन के लिए और प्रभुता के लिए बराबर परेशान होते रहे, झगड़ते रहे, जरूरत से ज्यादा परिश्रम करते रहें, परन्तु हमें जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया।

इसका कारण यह है कि व्यक्ति उन्नति तभी कर सकता है, जब उसके पास दैवी शक्ति हो, दैवी शक्ति की सहायता से ही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकता है, महाभारत काल में भी जब अर्जुन को युद्ध में विजय प्राप्त करने की इच्छा हुई तो भगवान श्री कृष्ण ने उसे यही सलाह दी, कि बिना दिव्य अस्त्रों के युद्ध में विजय प्राप्त करना असंभव है, इसलिए यह जरूरी है कि पहले तुम शिव और इन्द्र की आराधना करो, उनसे दैविक अस्त्र प्राप्त करो और ऐसा होने पर ही तुम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हो।

और हम जीवन के इस युद्ध में लड़ तो रहे हैं, परन्तु जिस प्रकार से विजय प्राप्त होनी चाहिए, उस प्रकार से विजय या सफलता नहीं मिल रही है, क्योंकि यह जीवन का युद्ध केवल हम अपने बाहु बल से ही लड़ रहे हैं, जबकि हमारे पास दैविक शक्ति होनी चाहिए, यदि हम दैविक शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं तो निश्चय ही जीवन में सफलला पा जाना सरल, ज्यादा अनुकूल और ज्यादा सुविधाजनक हो जाता है, और ऐसा करने पर ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट प्राप्त हो सकती है।

साधना तो कोई भी कर सकता है

विविध शास्त्रों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि साधक के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह संस्कृत का भली प्रकार से उच्चारण करना जानता हो, लम्बे चौड़े विधि विधान या पूजा पाठ की भी आवश्यकता नहीं है।

साधना की पूर्ण सफलता के लिए तो यह जरूरी है, कि साधक मन में यह दृढ़ निश्चय कर लें, कि मुझे अपने जीवन को संवारना है, मुझे अपने जीवन में पूर्ण सफलता

प्राप्त करनी है, और मैं समाज में तथा देश में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर पूर्णता प्राप्त करके ही रहूंगा।

इसके साथ ही साथ जिस प्रकार से प्रयोग या विधि बताई गई है, उस प्रकार से यदि यह प्रयोग संपन्न करता है तो निश्चय ही उसे अनुकूलता प्राप्त होती है, निश्चय ही उसे जीवन में सिद्धि प्राप्त होती है, और वह इस प्रकार के जीवन के दु:ख दैन्य, बाधाएं, और परेशानियों को दूर करने में सफल हो पाता है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है, जो उसके जीवन का उद्देश्य होता है।

सर्वोन्नति सिद्धि पद्मावती साधना

पद्मावती साधना को कलिकाल कल्पतरु साधना कहा गया है, जैन आचार्यों ने इसे स्वार्थ सिद्धिदायिनी साधना कहा, क्योंकि इस साधना के द्वारा अष्टलक्ष्मी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

पद्मावती साधना के द्वारा जीवन के विघ्न का नाश होता है, और इसकी तीन विशेष शक्तियों (१) भ्रंगी (२) काली (३) कराली, शक्तियां साधक को हर कष्ट से ऊपर उठाती हैं, और वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर आगे बढ़ता ही रहता है।

इस साधना द्वारा साधक के भीतर व्याप्त एक भय दूर हो जाता है, और इसके ब्रह्माणी स्वरूप द्वारा साधक शत्रुओं के समूह में जाने पर भी वे मित्रवत् हो जाते हैं। जीवन में रोग, शोक, एवं दरिद्रता उन्नति के मार्ग में सबसे बड़े बाधक कहे जाते हैं, और केवल पद्मावती साधना ही ऐसी साधना है जिसमें लक्ष्मी का स्वरूप भी है, और दोष निवारण लीला व्याप्त स्वरूप है।

साधना रहस्य

इस साधना में कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है-

(१) यह साधना प्रतिमाह पांच दिवस संपन्न करनी है।

(२) इन पांच दिनों के दौरान साधक केवल फलाहार, दूध इत्यादि ग्रहण करें।

(३) साधना रात्रि के समय संपन्न करनी है।

(४) साधना एक बार प्रारंभ करने के पश्चात् उसे बीच में अधूरा नहीं छोड़ना है।

(५) पूरे साधना काल के दौरान दीपक निरन्तर जलता रहना चाहिए।

(६) यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारंभ की जा सकती है।

(७) साधना काल के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करें।

पद्मावती यंत्र

इस साधना में सबसे आवश्यक यह है कि यंत्र जैन पद्धति द्वारा विशेष रूप से कूट मंत्रोद्धार पूर्वक कार्य परत्व पुरश्चरण विधान द्वारा सिद्ध किया हुआ होना चाहिए, इसके साथ ही भगवती पद्मावती का सिद्धि चित्र भी अपने सामने स्थापित करें।

इस साधना में रुद्राक्ष माला अथवा मूंगा माला का प्रयोग किया जा सकता है।

साधना विधान

बुधवार के दिन रात्रि को साधक स्नान कर पीली धोती पहन कर ऊनी आसन बिछा कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अपने सामने यंत्र चित्र स्थापित करें, और क्रमानुसार पूजा करने हेतु यंत्र के सामने एक छोटा तांबे का पात्र अवश्य रखें।

सर्व प्रथम पद्मावती देवी का ध्यान करते हुए यंत्र पर जल अर्पित करें, उसके पश्चात् मौली, और फिर अबीर, गुलाल, केशर, इत्र इत्यादि देवी को अर्पित करें तथा दीपक जला लें, पूजा स्थान में वातावरण पूरी तरह सुगन्धित होना चाहिए।

इसके पश्चात् अपने दोनो हाथों में पुष्प लेकर अंजली बनाते हुए पुष्प अर्पित करें, तत्पश्चात् सर्व सिद्धि दायिनी सर्वोन्नति प्रदायिनी भगवती पद्मावती का ध्यान करते हुए चावल चढ़ावें, और पुष्प माला पूजा स्थान में धूप और दीप देवी के सामने एक ओर स्थापित कर दें। तत्पश्चात् फल और नैवेद्य समर्पित करें, तथा निम्न लिखित मंत्र से प्रार्थना करें।

ॐ श्रीमद्गीर्वाणचक्रस्फुटमुकुटतटी दिव्यमाणिक्य मालाज्योतिर्ज्वाला कराला स्फुरितमकरिकाघृष्टपादारविन्दे। व्याघ्रोरुल्कासहस्त्रज्वलदनलशिखालीलपाशांकुशाढये आं क्रां ह्रीं मंत्ररूपे क्षपितकलिमले रक्ष मां देवि पद्मे।।

अब हाथ में माला लेकर भगवती पद्मावती के बीज में "आं क्रों ह्रीं" की एक माला मंत्र जप करें, इससे दोष निवारण होता है, और साधना में सफलता मिलती है, तथा भूत-प्रेत पिशाच इत्यादि के उपद्रव दूर होते हैं।

शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधक भगवती पद्मावती की साधना संपन्न करता है उसे भगवती पद्मावती की शक्तियों से रक्षा प्राप्त होती है, देवी की कराली शक्ति जो सरस्वती प्रचण्ड वार्गवादिनी स्वरूप है, साधक के मुख में स्थित होती हैं। ऊपर लिखें मंत्र का जप कर साधक को भगवती पद्मावती का पुनः ध्यान कर पुष्प अर्पण कर पांच दिनों में २१ हजार मंत्र जप संपन्न करने आवश्यक हैं।

भगवती पद्मावती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं क्लीं प्लूं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रौं ह्रों ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।।

जब साधक अपनी साधना में यह मंत्र अनुष्ठान संपन्न कर लेता है तो उसे देवी का साक्षात् विकराल स्वरूप में दर्शन होता है, तमोगुण स्वरूप देवी की साधना से साधक प्रसिद्धि की ओर अग्रसर होता है।

यदि पांच दिन में २१ हजार मंत्र जप न हो सके तो इसे अगले महीने के पांच दिनों में संपन्न करना चाहिए। लेकिन आवश्यक है कि पांच दिन तक रात्रि को निरन्तर निश्चित दिनों में ही अनुष्ठान करें।

साधना के पश्चात् साधक यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें, और नित्य प्रति प्रातः एक माला भगवती पद्मावती के बीज मंत्र "आं क्रों ह्रीं" का जप अवश्य ही करें।

जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें साधना के बल पर कार्य संपन्न नहीं किया जा सके, और पद्मावती साधकों के लिए वरदान स्वरूप साधना ही है। ♦♦♦

एकाक्षी नारियल पर मेरे सिद्ध प्रयोग

एकाक्षी नारियल भगवान शिव का वरदायक त्रिनेत्र स्वरूप है, जिसके कई प्रयोग-उपयोग हैं-

(१) होली पर **एकाक्षी नारियल** को यदि घर का मुखिया, घर के सभी सदस्यों के सिर के चारों ओर घुमाकर अग्नि में समर्पित करे, तो परिवार के सभी सदस्यों की पूरे वर्ष भर सुरक्षा रहती है।

(२) यदि **एकाक्षी नारियल** को सिन्दूर लगाकर परिवार का कोई भी सदस्य सूर्योदय से पूर्व ही (किसी भी सोमवार हो) किसी चौराहे (जहां चार रास्ते हों) पर रख दें, तो शीघ्र ही कर्जा मिट जाता है।

(३) यदि **एकाक्षी नारियल** को (किसी रविवार को) सिन्दूर लगाकर शत्रु का नाम लिखकर ठीक बारह बजे पत्थर से फोड़ दे तो शत्रु परास्त होता है।

(४) यदि **एकाक्षी नारियल** को अपने सिर पर घुमाकर घर के बाहर बांई ओर फेंककर कोर्ट कचहरी जावे तो मुकदमें में सफलता मिलती है।

(५) यदि **एकाक्षी नारियल** को रोगी के पलंग के चारों ओर सात बार घुमाकर किसी मन्दिर में चढ़ा दें, तो उसी दिन से रोगी का रोग समाप्त होने लगता है।

(६) यदि **एकाक्षी नारियल** पर प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखकर मंगलवार को नदी या तालाब में फेंक दे (विसर्जित कर दे) तो प्रेमी वश में होने लगता है।

(७) यदि **एकाक्षी नारियल** को बुधवार को घर के पूजा स्थान में स्थापित करे, तो उसी दिन से घर में लक्ष्मी का आगमन शुरू हो जाता है।

(८) यदि **एकाक्षी नारियल** को लाल कपड़े में बांधकर घर के किसी कोने में ऊपर रख दें तो मन की इच्छा पूरी हो जाती है।

(९) यदि **एकाक्षी नारियल** को गुरुवार (बृहस्पतिवार, वीरवार) को किसी ब्राह्मण को दान में दे दें तो घर का कलह समाप्त हो जाता है।

(१०) यदि **एकाक्षी नारियल** को दुकान में शुक्रवार के दिन स्थापित करें तो व्यापार में वृद्धि होती है।

(११) यदि **एकाक्षी नारियल** को शनिवार के दिन घर के आगे फोड़ दें तो भूत प्रेत पिशाच आदि का भय समाप्त हो जाता है।

नोट :- एकाक्षी नारियल मंत्र सिद्ध प्राणश्चेतना युक्त हो तभी अनुकूल एवं लाभप्रद रहता है।

मॉरीशस में माननीय श्रीमाली जी

मॉरीशस में पूज्यगुरुदेव का आगमन वसन्त के झोंके की तरह था, एक सुगन्धित बयार थी, एक ऐसी प्राणश्चेतना थी, जिसने मॉरीशस की जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया, टी.वी. रेडियों और लगभग सभी नेता एवं लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, पूज्य गुरुदेव के सामने पलक पांवड़े बिछाये हुए थे.

हवा में कई दिनों से सुगबुगाहट थी कि मारीशस में जल्दी ही सिद्धाश्रम साधक परिवार की तरफ से यज्ञ का आयोजन हो रहा है, और पूज्य गुरुदेव उसमें कुछ शिष्यों का चयन करेंगे जो अग्रिम दस्ते में मॉरीशस जाकर वहां यज्ञ की व्यवस्था के साथ-साथ भारत की संस्कृति को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट करेंगे।

पूरे भारत वर्ष के साधकों में यह जिज्ञासा थी कि इस कार्य में न मालूम किन साधकों का चयन होता है? तभी एक दिन मुझे सूचैना मिली कि मेरा इस पवित्र कार्य के लिए चयन हो गया है। मैं हर्ष से अभिभूत होकर दिल्ली पहुंचा तो मुझे ज्ञात हुआ कि हमें ३० नवम्बर को दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से प्रस्थान करना है; मेरे अलावा योगेन्द्र निर्मोही, वासुदेव पाण्डे कनक पाण्डे और लक्ष्मी देवी को मिलाकर हम पांच लोग थे।

पूज्य गुरुदेव ने हमें बिठाकर समझाया कि दूसरे देश में हमें किस प्रकार से आचरण करना है, किस प्रकार से कार्य करना है, और अपनी संस्कृति के प्रचार के लिए किस प्रकार की व्यवस्था करनी है।

३० नवम्बर की शाम को एअर इंडिया से हमें प्रस्थान करना था, परिवार के और अन्य बहुत से लोग हमें विदा करने के लिए हवाई अड्डे पर उपस्थित थे, उन्होंने हमें शुभ कामनाएं दीं और हम पांचों सजल नेत्रों से विमान की ओर रवाना हुए।

एअर इंडिया से हम दो घंटे में बम्बई पहुंचे, यहां से एअर मारीशस का प्लेन प्रातः ६ बजे रवाना होता था। हमने अपने सामान को एक स्थान पर एकत्र किया और ठीक ६ बजे बम्बई से रवाना होकर दोपहर के ११ बजे सर रामगुलाम हवाई अड्डे पर पहुंच गये। मारीशस की राजधानी पोर्टलुई का यह अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा था जहां सैकड़ों की जनसंख्या में गुरुदेव के शिष्य और साधक हमारी अगवानी के लिए तैयार खड़े थे, उन्होंने जिस

उत्साह, उमंग और जोश से हमारा स्वागत किया वह हमें अभिभूत करने के लिए पर्याप्त था।

पोर्टलुई

हम पांचों कारों में बैठकर पोर्टलुई होते हुए वहां के प्रसिद्ध डॉक्टर बचानी के घर की ओर जा रहे थे जिनके घर हमें ठहरना था। पोर्टलुई समुद्र के किनारे बसा हुआ अत्यंत सुन्दर और रमणीय स्थान है, दिल्ली में तो इन दिनों कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, पर यहां गर्मी थी, हमें स्वेटर भी उतार देने पड़े।

यहां का वातावरण अत्यंत सुन्दर लगा, चारों तरफ प्रकृति और हरियाली से आपूरित यह शहर अत्यंत ही शांति और आनंद प्रदान करने वाला लगा। बचानी परिवार ने अत्यंत मधुरता के साथ हमारा स्वागत किया और अपने सुन्दर और आकर्षित घर में हमारे ठहरने की व्यवस्था की। बचानी परिवार में पति-पत्नी, उनकी बेटी राखी और पुत्र प्रदीप है और ये चारों ही भारतीय संस्कृति से पूरित हैं।

पूज्य गुरुदेव का पांच तारीख को आने का कार्यक्रम था इस बीच में काफी कार्य करना था, हम पहली बार यहां आये थे और पहले से ही हमारे कार्यक्रम तय थे। अलग-अलग स्थानों पर जाकर हमें सिद्धाश्रम और यज्ञ के बारे में विस्तार से जानकारी देनी थी, भाई राम टहल और भाई लडाई दोनों इस कार्य के लिए आयोजक थे।

ये पांच दिन कपूर की तरह बीत गये, व्यस्तता के कारण

कुछ पता ही नहीं चला। हमें तो धड़कते हृदय से पांच तारीख की प्रतीक्षा थी, जब पूज्य गुरुदेव यहां पर आने वाले थे।

और ५ दिसम्बर भी आ पहुंचा, हम प्रातः ९ बजे हवाई अड्डे पर पहुंच गये, इन पांच दिनों में ही कुछ ऐसा वातावरण बन गया था कि सैकड़ों की संख्या में पूज्य गुरुदेव के शिष्य और भक्त हवाई अड्डे पर उनकी अगवानी के लिए तैयार थे, यही नहीं अपितु सनातन धर्म सभा मारीशस के महासचिव सुरेश जी तथा मारीशस सरकार के केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री अनिल बेचू भी माला लिए हुए पूज्य गुरुदेव की अगवानी के लिए प्रस्तुत थे।

पूज्य गुरुदेव उतरे, उन्हें देखकर हमें एक तृप्ति सी अनुभव हुई, ऐसा लगा कि जैसे कोई श्वेत परिधान में लिपटे हुए देवदूत आ रहे हों। शिष्यों और भक्तों की जय जयकार से पूरा हवाई अड्डा गुंजरित हो उठा, ज्यों ही गुरुदेव लान्ज में आए, श्री अनिल बेचू और सुरेश जी ने आगे बढ़कर उनको मालाओं से ढक दिया। लान्ज से बाहर निकलते ही सैकड़ों शिष्य-शिष्याओं ने उन्हें घेर लिया और पुष्प वर्षा से वातावरण को भक्तिमय बना लिया। शंख ध्वनि से आकाश गुंजरित हो रहा था, २१ बालिकाओं ने पूज्य गुरुदेव एवं माताजी की आरती कर स्वागत किया। पूज्य गुरुदेव ने इस अवसर पर उपस्थित सभी शिष्यों, मंत्रियों और उच्च अधिकारियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि **मैं एक विशेष उद्देश्य से मारीशस आया हूं और मुझे विश्वास है कि मैं इस देश को एक नई चेतना दे सकूंगा।**

पूज्य गुरुदेव को एक विशेष होटल में ठहराने की व्यवस्था की गई थी, हम सब वहां पहुंचे, गुरुदेव ने बिना विश्राम किये ही सभी शिष्यों और साधकों की एक मीटिंग ली, और अब तक हुई प्रगति की जानकारी प्राप्त की। मैंने अनुभव किया कि उनके आदेशों से एक नई चेतना, एक नई उमंग और एक नया जोश आ गया था, हम सभी बहुत कुछ करने के लिये तैयार हो गये थे।

दूसरे दिन पूज्य गुरुदेव को समुद्र के किनारे स्थित एक उच्च कोटि के होटल में ठहराने की व्यवस्था की गई, जो कि उनकी रुचि के अनुकूल थी। हम पांचों अपने कार्य के लिये निकल गये, हमारा मारीशस के अलग-अलग स्थानों पर प्रवचन आदि के कार्यक्रम थे। आज लक्ष्मी देवी ने भी प्रवचन दिया और यज्ञ के महत्व पर विचार व्यक्त किये।

मैं अनुभव कर रहा था कि मुझमें बोलने की, प्रवचन देने की, विशेष क्षमता आने लगी है, और मैं बहुत अच्छा बोलने लगा हूँ, यह पूज्य गुरुदेव की कृपा का ही फल है ऐसा मैं समझ रहा था।

मैं अनुभव कर रहा था कि जिस दिन से गुरुदेव मारीशस में आये हैं उस दिन से उनका कार्यक्रम अत्यधिक व्यस्त हो गया है। इस उम्र में भी उन्हें बीस-बीस घंटे काम करते हुए देखकर उनकी जीवट शक्ति पर आश्चर्य हो रहा था। सैकड़ों नेता, और महत्वपूर्ण व्यक्ति उनसे संपर्क करने उनसे बातचीत करने और उनसे अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिये निरन्तर आ जा रहे थे।

प्रधानमंत्री से मुलाकात

जल्दी ही हमें सूचना मिली कि मारीशस के प्रधान मंत्री. सर जगन्नाथ अनिरुद्ध पूज्य गुरुदेव से मिलने को उत्सुक हैं। १५ दिसम्बर मंगलवार को दोपहर १२ बजे मिलने का कार्यक्रम तय हुआ।
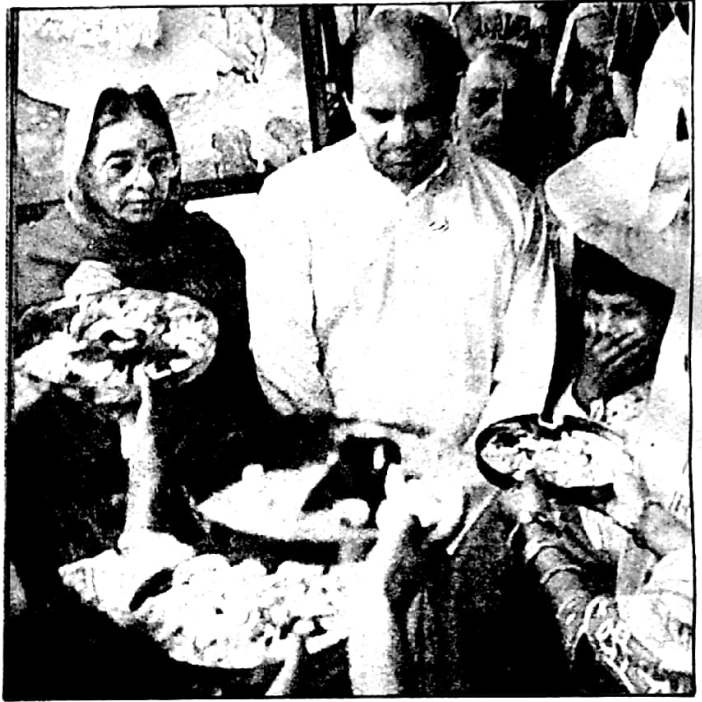
प्रधानमंत्री स्वयं उन्हें दरवाजे तक पहुंचाने आये।

पूज्य गुरुदेव प्रधानमंत्री के कार्यालय गये, वहां स्वयं प्रधानमंत्री ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया, तथा अपने व्यक्तिगत कक्ष में ले जाकर उनसे बातचीत की। आधे घंटे तक बातचीत उन दोनों ने अकेले में ही की, इस बातचीत में भारतीय संस्कृति के प्रचार और मारीशस के भविष्य के बारे में विस्तार से बातचीत हुई, बातचीत समाप्त होनेपर

बाहर आने पर पत्रकारों ने पूज्य गुरुदेव को घेर लिया, और यह जानना चाहा किन-किन विषयों पर बातचीत हुई, प्रधानमंत्री अत्यधिक व्यस्त थे, पूज्य गुरुदेव ने बताया कि मारीशस के आने वाले समय, उनके भविष्य और भारतीय संस्कृति के बारे में ही विस्तार से बातचीत हुई।

उसके बाद पूज्य गुरुदेव वाणिज्य मंत्री अनिल बेचू के कार्यालय पहुंचे जहां अल्पाहार का आयोजन था, उनके स्टाफ के प्रधान सेकेट्री ने गुरुदेव का स्वागत किया और अपने सभी स्टाफ से परिचित कराया। इस बीच सूचना मिली कि मारीशस के प्रधानमंत्री की धर्म पत्नी श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ भी आज पूज्य गुरुदेव से मिलना चाहती हैं, गुरुदेव से पूछने पर उन्होंने कहा कि मुझे कोई आपत्ति नहीं है, वे जब भी चाहें मिल सकती हैं।

श्रीमती जगन्नाथ और गुरुदेव

वाणिज्य मंत्री श्री अनिल बेचू के कार्यालय में ही लगभग एक बजे प्रधान मंत्री की धर्म पत्नी पूज्य गुरुदेव से मिलने आईं, अत्यंत सौम्य और सरल प्रकृति की विदुषी महिला ने सबसे पहले तो पूज्य गुरुदेव को मारीशस आने पर धन्यवाद दिया, और फिर लगभग एक घंटे तक पूज्य गुरुदेव से बातचीत होती रही। इस बातचीत में अनिल बेचू भी उपस्थित थे।

उन्होंने अपने पति के स्वास्थ्य, आने वाले समय तथा मारीशस के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की, और जो समस्याएं आने वाली थी उनके समाधान के लिए भी पूछा। इस लम्बी बातचीत में उन्होंने कई व्यक्तिगत प्रश्न भी पूछे जिनका समाधान पूज्य गुरुदेव ने किया।

पूज्य गुरुदेव का कार्यक्रम ज्यादा व्यस्त था, अत: समय को देखते हुए श्रीमती जगन्नाथ ने कृतज्ञता पूर्वक गुरुदेव को दरवाजे तक छोड़ने आईं, इसी बीच भारत के नवनियुक्त राजदूत श्री श्यामशरण जी का टेलीफोन आया कि वे गुरुदेव से मिलना चाहते हैं।

भारत के राजदूत का बुलावा

भारतीय उच्चायुक्त पास में ही था इसलिए जब उनका टेलीफोन आया तो पूज्य गुरुदेव ने उसी समय मिल लेना, उचित समझा और वे सुरेश जी के साथ भारतीय राजदूतावास जा पहुंचे। तीसरी मंजिल पर स्थित यह राजदूतावास भारतीय गरिमा के अनुकूल था।

भारतीय उच्चायुक्त अभी-अभी आये थे और चार पांच दिनों पहले ही उन्होंने पदभार संभाला था। काफी समय तक उनकी पूज्य गुरुदेव से बातचीत होती रही, मारीशस की जनता के बारे में, भारत के बारे में तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में बातचीत होती रही।

शाम को पूज्य गुरुदेव को एक विशाल जन सभा को संबोधित करना था, जहां पर बहुत अधिक संख्या में लोग एकत्र थे वहां पर पूज्य गुरुदेव ने भारतीय संस्कृति और यज्ञ की महत्ता के बारे में विस्तार से जानकारी दी, यहां पर कई उच्चकोटि के व्यक्तियों को गुरुदेव ने दीक्षा भी प्रदान की।

मारीशस के वित्त मंत्री

दूसरे दिन प्रात: काल मारीशस के वित्त मंत्री रामकृष्ण सितानन पूज्य गुरुदेव से मिले, वे मूलत: दक्षिण भारतीय हैं, अत्यंत सुलझे हुए विचारों वाले वित्त मंत्री से पूज्य गुरुदेव की काफी समय तक बातचीत हुई, उन्होंने अपने हाथ की रेखाएं दिखाकर भविष्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की।

मारीशस रिजर्व बैंक गवर्नर जनरल

जहां पर पूज्य गुरुदेव ठहरे हुए थे वहां पर उच्च कोटि के व्यक्तियों का आना-जाना जारी था, रिजर्व बैंक के गवर्नर जनरल पूज्य गुरुदेव से मिलना चाहते थे, और वे होटल में ही आकर पूज्य गुरुदेव से मिले, लगभग पौन घंटे तक उनसे विस्तार से पूज्य गुरुदेव की बातचीत हुई, और उन्होंने अपने जीवन की समस्याओं, और आने वाले समय के बारे में जानकारी प्राप्त की।

इस बीच मारीशस के कृषि मंत्री पूज्य गुरुदेव से मिल चुके थे और उन्होंने इच्छा प्रकट की कि वे एक बार और मिलना चाहते हैं।

मारीशस के उप प्रधानमंत्री

ये दिन पूज्य गुरुदेव के अत्यधिक व्यस्तता के दिन थे, इस बीच सूचना मिली कि मारीशस के उप प्रधानमंत्री श्री प्रेम नवाब सिंह पूज्य गुरुदेव से मिलना चाहते हैं। हमने ऐसी ही व्यवस्था की और होटल में मारीशस के उप प्रधानमंत्री मिलने के लिए आए। वे लगभग एक घंटे तक पूज्य गुरुदेव के साथ रहे, उस समय पास में और कोई नहीं था। आने वाले समय और घटनाक्रम के बारे में उन्होंने जानकारी प्राप्त की, एक बार और मिलने की इच्छा मन में रखते हुए मारीशस के उप प्रधान मंत्री ने विदा ली।

इसके अलावा कृषि मंत्री मुरलीदास दुल्लू, समाज कल्याण मंत्री श्रीमती शैलाभाई बापू और सैकड़ों गणमान्य लोग पूज्य गुरुदेव से मिलते रहे, यज्ञ का समय निकट आ रहा था, १८, १९, २० दिसम्बर को गंगा सागर तालाब पर यज्ञ का आयोजन था, और यह समय निकट से निकट आ रहा था।

इस बीच मारीशस टेलीविजन पर पूज्य गुरुदेव के

दो बार भाषण प्रसारित हुए जिसे पूरे मारीशस की जनता ने देखा। इन दिनों मारीशस के सभी अखबार पूज्य गुरुदेव की यात्रा और उनके कार्यक्रमों से भरे हुए थे।

हम सभी अत्यधिक व्यस्त थे और थक गये थे। शायद यह गुरुदेव ने अनुभव किया और एक दिन उन्होंने मारीशस से दूर एक टापू पर आधा दिन बिताने का कार्यक्रम बनाया, यह टापू मारीशस से साठ किलोमीटर दूर समुद्र के बीच स्थित है, और अत्यंत भव्य है।

वहां पर समुद्र के किनारे स्थित फ़ाइब स्टार होटल के मैनेजर ने पूज्य गुरुदेव की अगवानी की, और एक सुसज्जित कक्ष में ठहराने की व्यवस्था की, तथा भव्य नाव में घुमाने का कार्यक्रम भी बना।

यहां पर कई विदेशी सैलानी भरे हुए थे यह समुद्र तट अत्यंत सुन्दर है। सभी लोगों ने दिन भर आनंद लिया और शाम को भोजन आदि की व्यवस्था यहीं कर दी गई थी। हम लोगों ने समुद्र में तैरने, नाव में घूमने और स्पीड बोट में घूमकर आनंद अनुभव किया।

मां काली रुद्र महायज्ञ

गंगा तालाब स्थान पर १८, १९, २० दिसम्बर को यज्ञ का आयोजन हुआ, २० दिसम्बर को पूर्णाहुति थी, यहां विशाल जन समुदाय उमड़ पड़ा था। तिल रखने की भी जगह नहीं थी। इस यज्ञ में कई मंत्री, और देश के महत्वपूर्ण व्यक्ति उपस्थित थे। मारीशस के लोगों ने पहली बार इतने बड़े यज्ञ का आयोजन देखा, और भारतीय संस्कृति को अनुभव किया। वहीं पर कई लोगों ने गुरुदेव से दीक्षा भी प्राप्त की।

अगले दिन यद्यपि हम थक गये थे परन्तु हममें अत्यधिक उत्साह था और यज्ञ के बाद तो अत्यधिक भीड़ गुरुदेव से मिलने के लिए एकत्र हो गई थी कि हम समझ नहीं पा रहे थे कि इस भीड़ को कैसे नियंत्रित किया जाय।

२२ तारीख को कुछ विशिष्ट व्यक्तियों अनिल बेचू

(वाणिज्य मंत्री) आदि ने गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त की, और विश्वास व्यक्त किया कि हम मारीशस में सिद्धाश्रम के प्रसार में तन, मन, धन से सहयोग देंगे।

हम सभी लोगों को एक आलीशान भवन में ठहराया गया था जो समुद्र के किनारे स्थित था, इस "डोडोविला" नामक भवन में सुख सुविधा की, सारी व्यवस्थाएं थीं।

विदाई समारोह

इस बीच पोर्टलुई से दूर एक भवन का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव के हाथों संपन्न हुआ, जिसमें कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। २३ दिसम्बर को सनातन धर्म सभा की ओर से "वरुण यज्ञ" का आयोजन था, जिसे पूज्य गुरुदेव ने संपन्न कराया। २४ दिसम्बर को हम लोगों की विदाई थी, यद्यपि वहां के कार्यकर्ता चाहते थे कि हम एक सप्ताह और मारीशस में रहें पर पूज्य गुरुदेव के कार्यक्रम पहले से ही भारत में थे, अतः ज्यादा रुकना संभव नहीं था।

२४ दिसम्बर की शाम सर रामगुलाम हवाई अड्डे पर शिष्यों का विशाल समुदाय उपस्थित था, कई मंत्री और उच्चाधिकारी पूज्य गुरुदेव को सजल नेत्रों से विदाई देने के लिए आए थे, उन सभी लोगों के स्नेह को देखकर हम सबकी आंखें सजल थीं, हम सभी शाम को सात बजे एयर मारीशस में बैठे। दूसरे दिन लगभग ११ बजे हम दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरे। जहां बहुत अधिक संख्या में पारिवारिक स्वजन, शिष्य और साधक उपस्थित थे। वास्तव में ही यह यात्रा हम सभी के लिए आनंदयुक्त और अद्वितीय थी, जो हमारे हृदयों पर अंकित हैं।

-पी.सी. अग्रवाल, मुजफ्फरनगर

शाबाश!

जनवरी ९३ "गोपनीय तंत्र विशेषांक" के विस्तार में शिष्यों साधकों और गुरु भाइयों ने जो उत्साह, उमंग, जोश, और सहयोग की भावना प्रदर्शित की है, वह अपने आप में बेमिसाल है, लगभग सभी प्रदेशों के साधकों ने केंद्रीय कार्यालय से पत्रिका मंगा-मंगाकर अपने आसपास के बुक स्टालों पर रखी, उन स्टाल के मालिकों को पत्रिका के बारे में जानकारी दी, और आग्रह किया....

और फिर पत्रिका का स्तर अपने आप में श्रेष्ठ है, फलस्वरूप पाठकों ने हाथों हाथ पत्रिका को उठा लिया, मांग इतनी बढ़ गई कि हम सही अर्थों में पूर्ति ही नहीं कर सके, जनवरी अंक का दूसरा संस्करण छापा, पर यह भी कपूर की तरह उड़ गया, फिर भी मांग बनी रही, और मजबूर होकर जनवरी अंक का तीसरा संस्करण भी छापना पड़ा।

फिर भी आज हमारे पास जनवरी अंक की एक भी प्रति नहीं बची है, यह सब पत्रिका-परिवार के गुरु भाइयों का...आपका प्रयत्न है, और इसके लिए हम सभी आपके सहयोग के आभारी हैं.... पूज्य गुरुदेव ने आप सब को इस सहयोग के लिये विशेष रूप से आशीर्वाद दिया है....

और अब

फरवरी ९३ का 'शिवरात्रि-विशेषांक' आपके हाथों में है और आप स्वयं देख रहे हैं, कि इसका एक-एक पन्ना मोतियों से जड़ा हुआ है।

आप पिछले महीने की तरह ही पचास-पचास प्रतियां तो वी.पी. से मंगाइये ही, और इन प्रतियों को अपने आस-पास की चार या पांच बुक स्टालों पर रखिये, और उन्हें १५ प्रतिशत कमीशन दीजिए, हम आपको २५ प्रतिशत कमीशन से पत्रिका भेजेंगे, जिससे १० प्रतिशत कमीशन आपको बच जाएगा, जो कि पचास प्रतियों पर लगभग ७५ रुपये होगा, और बुक स्टाल वालों को भी एक प्रति बेचने पर दो रुपये पच्चीस पैसे मिल जायेंगे। आपको जो प्रतियां भेजी जायगी, उसका वी.पी.पी. खर्च हम उठायेंगे, ये ७५ रु. जो बचेंगे, वे तो भाग-दौड़, किराया आदि के लिये है। यों आप तो हमारे ही है, अपने ही है, अपनों से अपनी बात कह सकते है।

और फिर आप क्या नहीं कर सकते, यह कार्य तो एक या दो दिनों का ही है, स्टॉल वालों को आश्वस्त कीजिये, कि यदि प्रतियां नहीं बिकी, तो बची हुई प्रतियां वापिस लेने की गारण्टी है, फिर उन्हें "रिस्क" ही क्या है? और हमें तो पता ही है, कि प्रतियां बच ही नहीं सकती, वह तो एक दिन में ही बिक जायगी।

यदि वे और चाहें तो आप तुरन्त जोधपुर S.T.D. बूथ से ०२९१-३२२०९ पर टेलीफोन कर उस स्टॉल वाले का पता ही नोट करालें, जिससे हम उन्हें सीधे ही २५ प्रतिशत कमीशन देकर प्रतियां भेज देगें, या आप अपना पता बता दें, जिससे आपको और प्रतियां हाथों हाथ भेजी जा सके, दोनों ही स्थितियों में डाक खर्च हम स्वयं वहन करेंगे।

(संयोजक)

यह भी देखिये न!

इन लोगों ने एक बारगी ही पचास या सौ प्रतिया मंगाकर बेच दी, इस बार उनका निश्चय पांच सौ प्रतियां एक साथ मंगाने के लिये पत्र लिखा है -

- गोवर्धन अग्रवाल-बैंगलोर
- जीवन सिंह राजपूत-अहमदाबाद
- शैलेन्द्र पाल-पटियाला
- टी. सुब्बाराव-भोपाल
- यशवीर-बरेली
- राजेन्द्र गुप्ता-दुर्ग
- रतीलाल के टेलर-पंचमहल
- पंचमगिरी-रीवा
- एम.आर. वशिष्ठ-पण्डोह
- दीनदयाल कुंजाम-सरगुजा
- सतीशकल्याल-फरीदाबाद
- हरीराम चौधरी-फैजाबाद
- नागजी भाई-सूरत
- मालती कानाडे-लातूर
- अमर अपार सिहं-हरिद्वार
- राजेन्द्रसिंह भदौरिया-रायबरेली
- गोविन्द लाल-रतलाम
- महेन्द्र गुप्ता-यमुना नगर
- एम.एन. मजमुदार-नासिक
- आर.एन. खन्ना-लखनऊ
- संगीता केशरवानी-इलाहाबाद
- एस.के. मिश्रा-बांदा
- कनक पाण्डे-बस्ती
- ऊषा पासलकर-धार
- बी.बी गुप्ता-अम्बाला
- पी.सी. खन्ना-बम्बई

अगले अंक में सौ प्रतियां मंगाने वालों में आपका नाम इस पृष्ठ पर छपना ही चाहिये।

□□□

नववर्षांक : सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है।

शीर्षक	पृष्ठ संख्या	सामग्री का नाम	न्यौछावर
([illegible])लिंग	९ से १२	पारद शिवलिंग-पांच तोले	४५०
पारद शिवलिंग		ग्यारह तोले का	६००
		२१ तोले का	१५००
तंत्र के ये पांच प्रयोग	१३ से १५	सियारसिंगी	२४०
		आठ गोमती चक्र	२४०
		हकीक माला	१२०
		मूंगे की माला	१२०
		अनंग यंत्र	६००
		शत्रु पीड़ित यंत्र	६००
		विवाह बाधा निवारण मुद्रिका	६००
जब किसी की छठी इन्द्रिय जाग उठती है	१६ से २१	अन्तर्चक्षु जाग्रत यंत्र (अतीन्द्रिय यंत्र)	६००
महामृत्युंजय विधान	२२ से २६	महामृत्युंजय यंत्र	६००
कहीं आप पर भी तो कोई तांत्रिक प्रयोग नहीं कर रहा है	२७ से ३१	आजीवन तंत्र रक्षा कवच	११०००
पंचाक्षर साधना	३२ से ३३	ताम्र शिव पंचाक्षर यंत्र	३००
पूर्व जीवन में झांक कर देखें	३५ से ३९	संजीवनी यंत्र	३०००
होली	४० से ४३	महाविजय सुन्दरी महायंत्र	६००
		आठ सिद्धिफल	२४०
		नृसिंह यंत्र	३००
दीक्षा	४५ से ४८	(१) प्रारंभिक दीक्षा	३००
		(२) ज्ञान दीक्षा	६००
		(३) जीवन मार्ग दीक्षा	६००
		(४) शांभवी दीक्षा	१५००
		(५) चक्र जागरण दीक्षा	३०००
		(६) विद्या दीक्षा	८००
		(७) शिष्याभिषेक	३०००
		(८) आचार्याभिषेक	५०००
चैत्र नवरात्रि	४९ से ५०	शक्ति समन्वित दुर्गायंत्र	३५१
आप मात्र पांच दिनों में	५३ से ५५	पद्मावती यंत्र	१५००
		सिद्धि यंत्र	३००
		रुद्राक्ष माला	६००
		मूंगा माला	१२०

☼ आप एक पत्र में हमें लिख भेजें, कि आपको क्या सामग्री चाहिए, हम वह सामग्री वी.पी. से सुरक्षित रूप से आपके हाथों में पहुंचा देंगे।

☼ चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

☼ ड्रॉफ्ट किसी बैंक का हो, वह "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्रॉफ्ट भेजने का पता :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन-०२९१-३२२०९

प्रकाशक एवं मुद्रक : कैलाश चन्द्र श्रीमाली मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के लिये राजेश्वरी फोटो सैटर्स (प्रा.) लि., २/१२, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६ से मुद्रित

Certificate of Recognition

to

DR. NARAYANDUTTA SHRIMALI

Your advent in Mauritius in December 1992 is a cause for joy and pride.
We are indeed fortunate to have an ascetic of your calibre in our midst.

Your profound knowledge in the field of religion especially in mantra, tantra, yantra, hindu philosophy, healing, and astrology is indeed unexcelled.
Your addresses and spiritual guidance during religious camp were invaluable and helped clear many misconceptions regarding tantra.
You gave us an enriching experience which we will cherish and nurture for years to come.

We received the spiritual heritage of the ancient seers through you -- a renowned Sidh Yogi of the Himalayas -- here in Mauritius.
Your contributions in the astrological field are unique.
Our people have had the benefit of your experience and your knowledge makes us think of you as a modern Varahamihira.

The local branch of the International Siddhashram Sadhak Parivar should be congratulated for bringing in our midst such a versatile personality and spiritual master to guide us when crude materialistic tendencies try to blur our vision. You are the supreme Jagat Guru amongst the Holy Rishis of the Sidhashram in the Himalayas.
Like Shakaracharya you are the universally acknowledged spiritual preceptor.
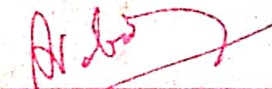
The spiritual message which you have brought to us from India gives us a deeper insight of the variegated aspects of Hinduism.
It is only by following a spiritual discipline that world peace can be brought about.
The bonds thus forged between our peoples will endure for years to come.
We hope that there will be permanent exchanges between our two countries.

Place Port Louis
Date 24 December 1992

[signature]
Deputy Prime Minister
& Minister of Health

नं. रजि. ३५३०५/८१

पोस्टल एल. आर. जे. : ३६६७/८६-८७

भौतिक सफलता साधना एवं सिद्धियाँ

भौतिक सफलता प्राप्ति की श्रेष्ठतम गोपनीय विधियां
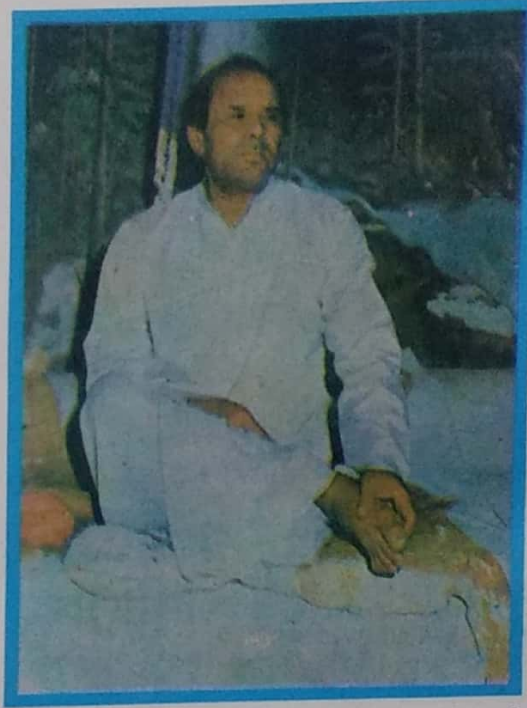
ग्रन्थ के कुछ प्रमुख आकर्षण

1. मनोकामना सिद्धि प्रयोग
2. सर्व सिद्धिदायक प्रयोग
3. सर्व विघ्न नाशक प्रयोग
4. ऋषि सिद्धि दायक प्रयोग
5. दरिद्रतानाशक लक्ष्मी प्रयोग
6. नौकरी प्राप्त करने का प्रयोग
7. पितृ दोष निवारण प्रयोग
8. व्यापार द्वारा धन प्राप्ति प्रयोग
9. विद्या वर्द्धक प्रयोग
10. इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग
11. मुकदमें में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग
12. मन्त्र द्वारा आकर्षण प्रयोग
13. वशीकरण प्रयोग
14. व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग
15. पुत्र प्राप्ति प्रयोग

- हमारे जीवन में नित्य नवीन परेशानियां बाधाएं अड़चनें कठिनाइयां आती रहती हैं, और हम उनसे जूझते रहते हैं, पर फिर भी उन समस्याओं का निराकरण नहीं दिखता।
- शास्त्रों के अनुसार इस प्रकार की समस्याओं का समाधान विविध साधनाओं के माध्यम से ही सम्भव है।
- और फिर ये साधनाएं इतनी सरल और सुगम हैं, कि आप भी आसानी से इन साधनाओं को सम्पन्न कर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।
- न किसी पंडित की जरूरत और न विशेषज्ञों की, आप स्वयं समर्थ हैं यदि यह पुस्तक आपके हाथ में हो तो। (मूल्य २४)

नोट : धनराशि अग्रिम भेजने की आवश्यकता नहीं है आप पत्र द्वारा सूचना दे दें। हम आपको वी. पी. पी. से भेजने की व्यवस्था करेंगे : एजेन्ट बन्धु सम्पर्क करें:

सम्पर्क :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर-३४२ ००१ (राज.) टेलीफोन ०२९१-३२२०९
अतिरिक्त सम्पर्क :
306 कोहाट एन्क्लेव, (पीतमपुरा) नई दिल्ली
टेलीफोन : 011-7182248